❀ श्री द्वारकेशो जयतिः ❀

ब्रज दर्शन

व्यासादिक ऋषि मुनि कथिक बहु ग्रन्थन आधार।
ब्रज दर्शन निर्मित कियो भक्ति मुक्ति दातार॥

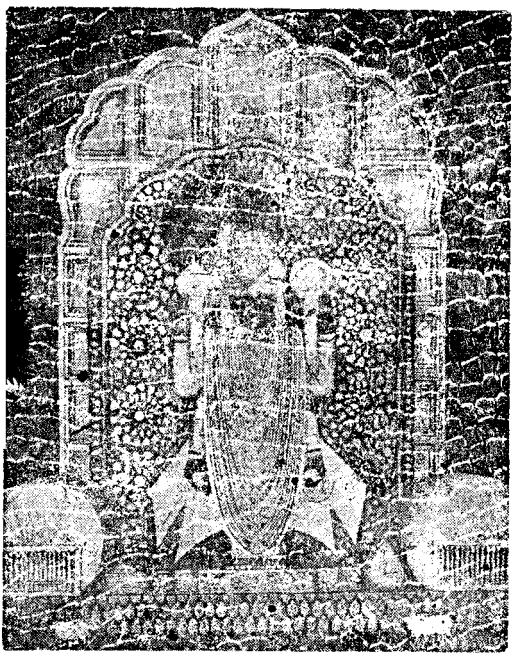

लेखक—
वैद्य नारायणदत्त माधवजी चतुर्वेद

प्रकाशक—
मुरारीलाल गोविन्दलाल चौधरी
छत्ता बाजार, मथुरा।

❀ अथ श्रीयमुनाष्टकम् ❀

नमामि यमुनामहं सकल सिद्धिहेतुं मुदा मुरारिपदपंकज स्फुर-
दमंदरेणूत्कटाम् ॥ तटस्थ नवकाननप्रकटमोदपुष्पांबुना सुरासुर-
सुपूजितस्मरपितुःश्रियं बिभ्रतीम् ॥ १ ॥ कलिंदगिरिमस्तके
पतदमंदपूरोज्ज्वला विलासगमनोल्लसत्प्रकटगंडशैलोन्नता ॥
सघोषगतिदंतुरा समधिरूढ दोलोत्तमा मुकुंदरतिवर्द्धिनी जयति
पद्मबंधोः सुता ॥ २ ॥ भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेकस्वनैः
प्रियाभिरिव सेवितां शुक मयूरहंसादिभिः ॥ तरंगभुजकंकणप्रक-
टमुक्तिकावालुकानितंबतटसुंदरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम् ॥ ३ ॥
अनंतगुणभूषिते शिवविरंचिदेवस्तुते घनाघननिभे सदा ध्रुवपरा-
शरामीष्टदे ॥ विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते कृपाजलधि-
संश्रिते मम मनः सुखं भावय ॥ ४ ॥ यया चरणपद्मजा मुररि-
पोःप्रियं भाद्रुका समागमनतोऽभवत्सकलसिद्धिदा सेवताम् ॥
तया सदृशताभियात्कमलजास पत्नीव यद्धरिप्रियकलिंदया मन
सि मे सदा स्थीयताम् ॥ ५ ॥ नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्र-
मत्यद्भुतं न जातु यमयातना भवति ते पयः पानतः ॥ यमोऽपि
भगिनीसुतान् कथमु हंति दुष्टानपि प्रियो भवति सेवनात्तव हरे-
र्यथागोपिकाः ॥ ६ ॥ ममास्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभतमा रतिर्मुररिपौ मुकुंदप्रिये ॥ अतोऽस्तु तव लालना
सुरधुनी परं संगमात्तवैव भुवि कीर्तिता नतु कदापि पुष्टिस्थतैः
॥ ७ ॥ स्तुतिं तव करोति कः कमलजासपत्नि प्रिये हरेर्यदनु-
सेवया भवति सौख्यमामोक्षतः ॥ इयं तव कथाधिका सकलगो-
पिकासंगमस्मर श्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः संगमः ॥ ८ ॥
तवाष्टकमिदं मुदा पठति सूरसुते सदा समस्तदुरितक्षयो भवति
वै मुकुंदे रतिः ॥ तया सकलसिद्धयो मुररिपुश्चसंतुष्यति स्वभा
वविजयो भवेद्वदति वल्लभः श्रीहरेः ॥ ९ ॥इति॥

❀ श्री निकुञ्जविहारिणेनमः ❀

ब्रज दर्शन

लेखक—
वैद्य नारायणदत्त माधवजी चतुर्वेद

प्रकाशक—
मुरारीलाल गोविन्दलाल चौधरी
छत्ता बाजार, मथुरा।

(सर्वाधिकार स्वरक्षित)

मुद्रक—
लोक साहित्य प्रेस, मथुरा।

द्वितीय संस्करण २२०० | सम्वत् २०१५ वि० १ जनवरी सन् १९५९ | मूल्य तीन रुपया

ब्रजमण्डलं भगवदंगस्वरूपः ।

विष्णुरहस्ये—पंच पंच वनस्थानाः भगवदवयवानि च ।
मथुरा हृदयं प्रोक्तं नाभौ मधुबनं शुभं ।।
स्तनौ कुमुदतालाख्यौ भालं वृन्दावनं तथा ।
बाहू द्वौ च समाख्यातौ बहुलाख्यमहाबनौ ।।
भाण्डीर कोकिलाख्यातौ द्वौ पादौ परिकीर्त्तितौ ।
खदिरं भद्रिकं चैव स्कन्धौ द्वौ परिकीर्त्तितौ ।।
छत्राख्य लोह जंघानौ लोचनौ द्वौ प्रकीर्त्तितौ ।
विल्वभद्रौ च श्रौत्रौ द्वौ चिवुकं वनकाम्यकं ।।
अस्यां त्रिवेनिकं स्थानं सखीकूपबनं शुभं ।
प्रेमाञ्जनवनावोष्ठौ दन्तौ स्वर्णाख्यविह्वलौ ।।
सुरभीवनं जिह्वा च मयूराख्यं ललाटकं ।
मानेंगितवनं नासा नासायाः पुटमण्डलौ ।।
शेषशायीवनं श्रेष्ठं परमानन्दकद्वयं ।
भृकुट्यौ रंकवार्त्ताकौ नितम्वौ करहाकमौ ।।
लिंगं कर्णवनं चैव कृष्णक्षिपनकं गुदं ।
नन्दनं शिरसं प्रोक्तं पृष्ठमिन्द्रवनं तथा ।।
शीक्षावनं च चन्द्रायाःवनं लोहवनं शुभं ।
नन्दग्रामं च श्रीकुन्ड पंच कृष्णकरांगुलीः ।।
गढ़स्थानं ललितायाः ग्रामं भानुपुरं तथा
गोकुलं बलदेवं च वामकृष्णकरांगु
गोवर्द्धनं यावटं शुभं संकेतकं .. ।
नारदस्यवनं चैव वनं मधुवनं तथा ।।
एते पंच समाख्याता वामपादागुंली शुभाः ।
मृद्वनं जन्हकं चैव मेनकावनमेव च ।
कज्जलीनन्दकूपञ्च पंच वामांघ्रिकांगुली ।
इति व्रजवनाख्यातं कृष्णांगपरिसंभवः ।।
कृष्णस्यावयवाः सन्ति वनान्युपवनानि च ।।
इति पंच पंचाशत् सबनादि व्रज-ग्रामाभगवदंगाः ।। ९३ ।।

व्रज दर्शन

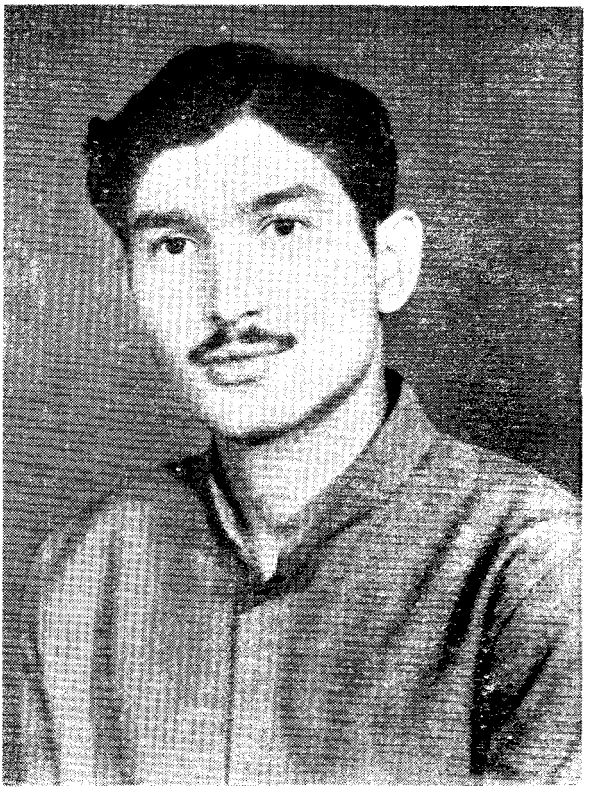

प्रकाशक—
मुरारीलाल गोविन्दलाल चौधरी
छत्ता बाजार, मथुरा।

❋ ग्रन्थ परिचय ❋

विंशतियोंजनानांहि माथुरं मम मण्डलम्।
पदे पदेऽश्वमेधीयं पुण्यं नात्र विचारणा॥

परम पावन चतुर्दश भुवनोत्तर गोलोक मोली श्री ब्रजेन्द्र नन्द नन्दन के आराध्य व्रज मण्डल परिक्रमा की महिमा अनन्तानन्त कोटि ब्रह्मांड नायक षडैश्वर्य स्वरूप शक्ति धृक् भक्त वत्सल भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने मातृ-स्नेह-मयी कृपा परिप्लुति श्री यसौदा मैया की पृथ्वी परिक्रमा करने की इच्छा को जानकर पृथ्वी परिक्रमा से शतसः सहस्रसः अधिक महात्म्य पूर्ण, जहाँ कि अश्व-मेध, राज सूय यज्ञों की कोई मान्यता नहीं और उपरोक्त यज्ञों के फल, इस ब्रज भूमि में एक २ पग रखने पर प्राप्त होते हैं ऐसा अपने श्री मुख से कहा है।

इसी भूमि पर सूर्य-सुता पतित-पावनी गोलोक वासनी प्रभुअङ्ग निसृता श्री यमुना महारानी अपनी मन्द २ उज्वल लहरों को झूले में झुलाती यहाँ की शोभा को बढ़ाकर चिर विश्राम करती हैं। जिनकी गाथा श्रुति स्मृति पुराण आदि में वर्णन भूलोक वासी मात्र के हृदय पर अङ्कित है। यही वो देव दुर्लभ "व्रज भूमि" है जहाँ लीला विग्रह भगवान श्री कृष्ण एवं रास-रासेश्वरी श्री राधिका जी नें गोपी गौ ग्वाल आदि व्रजवासियों के साथ अगण्य लीलाएँ करी, और उनके चरणों के चिन्ह इसकी रज पर अङ्कित होकर तत्कालीन वर्षा में धुले और बहकर जो चरणामृत प्रसादी एकत्रित हुई वह कुण्डों के रूप में विद्यमान हैं।

इसी व्रज भूमि पर सृष्टि रचयिता श्री ब्रह्माजी, बरसाना पर्वत श्रेणी के रूप में, पालनकर्त्ता भगवान विष्णु, गोवर्धन पर्वत के रूप में तथा संहार कर्त्ता भगवान शिवशंकर नन्दगाम में नन्दीश्वर पर्वत के रूप में तथा और भी न मालूम कितने

ऋषि मुनि देवता उद्धव आदि यहाँ लता रूप में निवास करते हैं। जहाँ कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण नें वत्सरूप में इस भूमि पर उगे हुए तृण आदि को अङ्गीकार करे हैं। तथा व्रज-रज खाकर मैया को मुख में ब्रह्माण्ड दिखलाया, इससे मालूम होता है कि यहाँ एक २ व्रज रजकण में अनन्त ब्रह्माण्ड ओत प्रोत हैं इसी व्रजभूमि की अपूर्व महिमा को सुनकर यशोदा मैया नन्द बाबा एवं गौ गोपी ग्वाल वालों नें व्रज की परिक्रमा करी और जिसके स्थल कलियुग की कराल-गति के कारण धीरे २ लुप्त होगये पुनः श्री यमुना महारानी की कृपा से श्री १०८ गोस्वामी महाप्रभु बल्लभाचार्यजी ने जानें और अपने भक्तों के कल्याण के लिए पुनः प्रकट करके व्रज यात्रा प्रारम्भ करी।

इसी व्रजयात्रा को पूज्यनीय वैद्य नारायणदत्त माधवजी चतुर्वेदी ने इसके प्रत्येक स्थल का महत्व एवं उन तक पहुँचने के रास्ताओं का मार्ग प्रदर्शन, उनकी उपासना के मंत्र, देवता, ऋषि, छन्द, अङ्गन्यास, करन्यास आदि व्रज के पर्वत लता गुल्म कवियों की बानी, सहित तथा मन्दिरों के उल्लेख आदि का वर्णन अपनी लेखनी द्वारा प्रचलित व्रज भाषा मैं "व्रजदर्शन" नामक पुस्तक स० १९९२ में प्रकाशित कराई। जो व्रजयात्रा के भाव को समझने वाले भगवद् लीला प्रेमियों द्वारा शीघ्र समाप्त हो गई और पुस्तक के प्रथम संस्करण का ही यहाँ तक समादर हुआ था कि इसी पुस्तक का आधार लेकर अन्य कई पुस्तकें लिखी गई हैं।

और अब श्री वल्लभ कुल कमल दिवाकर विद्या मार्तण्ड श्री १०८ गोस्वामी दीक्षित जी महाराज की सद् भावना के फल स्वरूप व्रज यात्रा के सुअवसर पर संशोधित एवं परिवर्धित करकें पूज्यपाद श्री १०८ श्री व्रजभूषण लालजी महाराज की आज्ञा से पुनः प्रकाशित कराई है। आशा है वैश्णव जन इस सेवा से लाभ उठायगे।

मुरारीलाल गोविंदलाल चौधरी
छत्ता बाजार मथुरा।

❀ स्थान (विषय) सूची ❀

स्थान (विषय)	पृष्ठ	स्थान (विषय)	पृष्ठ
मङ्गलाचरन	१	पारसोली बट (चन्द्र सरोबर)	२८
यात्रा का उद्देश्य	३	पैंठौ	२९
विश्रामघाट	४	बच्छगाम	३०
यात्रा के नियम	५	आन्यौर	३१
अन्तर ग्रही परिक्रमा	७	गोविन्दकुन्ड	३२
शिव स्थल	८	पूँछरी	३३
❀मधुबन (महोली)	९	श्यामढाक	३४
तालबन	११	ठूका बलदेव	३५
कमोदबन	१२	सुरभीकुन्ड	३६
❀सान्तनकुंड	१४	बिछुआबन (बिलासकुञ्ज)	३७
गनेसरा गाम, फैचरी (खैचरी)	१५	❀जतीपुरा गाम	३८
❀बहुलाबन (बाटी ग्राम)	१५	कुनवाड़े की लीला	३९
सकना गाम, तोष गाम	१७	टोड़ कौ घनों	४०
बिहार बन	१७	बैजगाम तथा दीग (दीर्घपुर)	४१
जिखिन गाम	१८	परमदरो	४२
माधुरीकुन्ड (अड़ींग से)	१९	आदबद्री (अलख गङ्गा)	४२
❀अड़ींग	१९	❀खोगाम, बूढ़ो बद्री	४३
मुखराई	१९	सेऊ को गाम	४५
राधाकुन्ड	२०	❀घाटो (आनन्दाद्री)	४५
❀कुशम सरोवर	२२	इन्द्रोली	४६
नारदकुन्ड	२३	❀कामबन	४६
ग्वालपोखरा	२४	श्रीकुन्ड	५३
किलोलकुन्ड, गोवरधन गाम	२४	कनवारो (कर्णबन)	५५
चक्रतीर्थ	२५	ऊँचौगाम (देहकुन्ड)	५६
मानसीगङ्गा	२६	❀बरसानो	५८
दानघाटी, जमुनाउते	२७	मोरकुन्ड (मयूरबन)	५९

स्थान (विषय)	पृष्ठ	स्थान (विषय)	पृष्ठ
दोहनीकुण्ड	६०	शेषसाई	९४
नौबारी चौबारीदेवी	६१	नन्दनबन, चन्दनबन	९५
गहबर बन (मानगढ़)	६२	❀बुखरारी, बढ़ाघाट	९६
साँकरीखोर	६४	कोसीकलां, फारैन	९७
दानलीला	६५	❀पैगाम; ❀शेरगढ़	९८
प्रेमसरोवर	६७	❀चीरघाट	१००
विव्हल बन	६८	नन्दघाट (भद्रकबन)	१०१
❀संकेत	६९	बच्छबन	१०३
रीठौरा	७०	❀सेई गाम	१०४
❀महरानो	७०	नरी सेंमरी	१०५
गिड़ोयो गाम	७१	चौमुहा-जैत	१०६
❀नन्दगाम	७३	छटीकरा, गरुणगोविंद	१०७
आंजनों	८२	भांडीरबन	१०९
लुधोली	८३	भद्रबन	११०
❀करहला	८३	बेलबन	११२
कजिलीबन, कमई	८४	❀वृन्दाबन	११३
पिसायौ, छातई (छत्रबन)	८५	मानसरोवर	११९
खिद्रबन	८६	❀लोहबन	१२०
❀जाव गाम किशोरीकुंड	८७	❀दाऊजी	१२१
कोकिलाबन	८८	महाबन, नंदकूप	१२३
चरण गङ्गा	९०	❀गोकुल	१२४
❀कामर	९१	करनावल, रावल	१२७
दहगाम, रासोली	९२	मथुरा पञ्चकोसी परिक्रमा	१२८
❀कोटबन	९३	पञ्चतीर्थी (५ दिन की यात्रा)	१३५

नोट—जिन नामों के आगे ❀ ऐसा निसान है वहाँ यात्रा मुकाम करती है तथा अन्य रस्ता के बहुत से नाम सूची में नहीं हैं। तम्बू के बीच गड्ढा करके पेटी अंदर रखकर विस्तर लगाना चाहिए। और जेवर पहनने में खतरा है।

व्रज दर्शन

लेखक—
वैद्य नारायणदत्त माधवजी चतुर्वेद
कृष्ण गली, मथुरा।

❀ श्रीं ❀

★ व्रज दर्शन ★

(मथुरा-मंडल की परिक्रमा)

॥ मङ्गलाचरण दोहा ॥

प्रथम सुमर श्री शारदा, गणपति गिरा मनाय ।
श्री गुरु केशवदेव पुन, यमुना कृष्ण सहाय ॥१॥
बाल चरित वृन्दा विपिन, कीने जन हित कार ।
जय जय श्री वृषभानुजा, जय जय नन्दकुमार ॥२॥
गौरतेज[1] विच स्यामता[2], पुन अरुणाई[3] रेखि ।
द्रग विच सो हिय ध्यान धर, व्रज दर्शन कर देखि ॥३॥
प्रेम प्रेम सों कहत हों, प्रेम करौ सब कोय ।
व्रज दर्शन के भाव कों, विना प्रेम मत जोय ॥४॥

श्री हरि स्मरण कर गुरु चरणन को नमस्कार करे श्री मथुराजी आयकें अपने अपने तीर्थ गुरु (माथुर चतुर्वेद)

१—श्री राधिकाजी । २—श्रीकृष्ण । ३—लीला की तरङ्ग, पुनः (१) सतोगुण लीला बाल चरित्र । (२) तमोगुण लीला दैत्यों कों मारनो । रजोगुण लीला दान आदि, इस व्रज दर्शन नामक पुस्तक में तीनों लीला हैं ।

ब्राह्मणों को बुलायकै उनके बचन प्रमाण तीर्थ की मर्यादा सों पूजा करें। १७ अ० बा० पु० म० म० एक रुपया एक नारियल यमुना जी की भेट कर (पंडा) गौर कों देय पीछे मुण्डन करावे (मुण्डं पिण्ड मुपासंच सर्व तीर्थे स्वयं विधिः) फिर गौर सों आज्ञा लेकर मौन ह्वै स्नान करै श्री यमुनाजी कौ पूजन करें पीछे गौर को पूजन करे चरण धोवैं।

देह शुद्धी के हेत ३ कच्छ सवा पाँच पाँच आना के संकल्प करके देय। श्रद्धानुसार गोदान, सुवर्णदान, वस्त्रदान ब्राह्मण भोजन अथवा सामग्री (सामिग्री) भूयसी दक्षिणा को संकल्प करें।

श्लोक—कृष्णस्य कृत्वाऽचमनं स्नानांदीनियथाक्रमम्। गांवै-पयस्विनींदत्वा हिरण्यम् वस्त्रमेवच ॥१४॥ ब्राह्मणान्भोजयेत् पश्चा द्विधिरेषः उदाहृतः। तथा वामनमुद्दीस्य एव मेवतुकारयेत् ॥१५॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्मर्मलोके महीयते। वा० पु० म० म० १८ अ०॥ फिर पितृश्वरन को पूजन पिण्डदान कर तर्पण करें। गौर (पण्डा) सों आशीर्वाद लै तीथे उपवास (एक दिन) करै वादिन जमुना जी कौ प्रसाद गौर सों माँगकैं लेय। इनके घर सों श्री कृष्ण बलराम नें माँगकर लीनों है जाकी कथा श्री० भा० २३ अ० में है। याही भाव सों श्री महाप्रभूजी ने भी माँगकर यमुनाजी की प्रसादी (इन्हीं सों) लीनी है॥ उजागर चौबे ने आपको नैम दिवाय कें यात्रा कराई हैं। पीछे श्री गुसाईंजी आदि सब ही बालक उपरोक्त श्रीमहाप्रभूजी की रीत सों यात्रा करते रहे हैं और बड़े चौबेजी (उजागरजी) को ही मौजूदा सन्तानसों ही विश्राम घाट महाप्रभूजी की बैठक के पास घाट पर नियम लैकैं यात्रा को पधारै हैं। वाही समय (मर्यादासों) समस्त वैष्णव जन अपने अपने पोहितन सों नियम लेकर यात्रा करै है।

यात्रा को उद्देश्य—श्री महाप्रभूजी के विचारानुसार (चारों आश्रम) १ ब्रह्मचर्य, २ गृहस्थ, ३ वानप्रस्थ, ४ सन्यास इनको पालन करनौ, या जीव कों जन्मसिद्धाधिकार है । सो असमर्थता के कारण नहीं है सके सो श्री महाप्रभूजी ने शास्त्र प्रमाण श्री मथुरा व्रज चौरासी कोस की यात्रा करके फल प्राप्त करवे कौ उपाय बतायो है । (१) पृथ्वी परिक्रमा नहीं है सके ताकी पूर्ति करवे कों कुटुम्ब सहित यात्रा करनी यह गृहस्थ आश्रम व्रत है (२) तम्बू में जो बाँस लगै हैं वह वाणप्रस्थ को दण्ड है, जिनके एक ओर पुरुष सोनों तथा दूसरी ओर स्त्री जन सोनों । यही वानप्रस्थ आश्रम व्रत है । (३) और व्रज यात्रा करने में हर प्रकार के दानादि लोभ छोड़ (सब वस्तुन को त्याग) यह संन्यस्त आश्रम व्रत है । याही भाव को हृदय में श्रद्धा विश्बास सों राखै पुनः देवशयनी एकादशी सों देवउठान एकादशी तक देव शयन करै हैं यह बात जो विख्यात है सो पृथ्वी में आदि भौतिक रूपसों सर्व तीर्थ पर (३३ कोट देवता) शयन करै हैं तथा यहाँ आदि दैवज्ञरूपसों व्रज में निवास करै हैं (ये कथा वा० पु० म० म० १५ अ० में है) सब तीर्थन कौ थोड़े से में पृथ्वी प्रदक्षिणा का फल प्राप्त होय है यह सिद्धान्त अपने भक्तन के कल्याण के लिए दया करके प्रगट कियो है । ऐसे श्री आचार्य महाप्रभूजी कों बार २ प्रणाम करनौ तथा आपके अष्टाचारी मन्त्र को खूब जाप करनों । श्रीगुरु भगवद् चरणारविन्द की भक्ति रखनी । श्लोक—सर्व साधन हीनस्य पराधीनस्य सर्वतः । पापपी-नस्य दीनस्य श्रीकृष्णः शरणं मम ॥१॥ अन्य आश्रय नही रखनों । विंशतियोजनानांच मथुरामंडलं मम । यत्र तत्र नरस्नातो मुच्यते सर्व पातकैः ॥ना. पु. म. म. ७ अ. १ श्लो. ॥

विश्रामघाट ।

ब्रज के सब तीर्थ भगवदाँग हैं। जामें मथुरा हृदय मानी है ।
(वा० पु० म० म० १६ अ० सों विशेष कथा है)

श्रीमथुराजी विश्रामघाट जहाँ श्रीयमुनाजी ने गो लोकसों आन कर विश्राम लीनों पुनः श्रीकृष्ण बलदेवजी नें कंस को मारि कर विश्राम लीनों पुनः श्रीमहाप्रभूजी नै विश्राम लीनों श्रीयमुनाजी का प्रथम श्रीभागवत पारायण सुनायो (सो बैठकजी उत्तर कोने में है) याही विश्राम के स्थान) कों विश्रामघाट कहै हैं यहाँ बीच में कृष्ण बलदेवजी की बैठक है आप मथुरा सों द्वारका पधारे जब मुरली मुकट यहीं धरिगये हैं साँझ को यहाँ मुरलीमुकट कौ शृङ्गार धरायो जाय है। याही स्थान कों मंडल कहै हैं। यह प्राचीन पत्थर कौ बनो हो अब नवीन संगमरमर कौ बन गयौ है मंडल के पीछे श्रीकृष्ण बलदेव कौ दर्शन है। या घाट के समस्त चौबै (४०००) चार हजार मालिक हैं। घाट पर भेट दान लेने का सब चौबेन कों सामान्य हक है। (एक बोर्ड भी बड़े फाटक पर लगो है) यहाँ श्रीकाशी विश्वनाथ अन्नपूर्णाजी कौ मन्दिर है आप नें श्रीकृष्ण दर्शन कर यहाँ विश्राम लीनो है। या विश्रामघाट की सिड़ियन पै जूता लेजानों, दातुन करनों, साबुन लगानो आदि गन्दगी करनों बीड़ी पीनों सख्त मुमानियत है। ऐसे बोर्ड भी यहाँ लगरहे हैं। बीच में महिराव जैसी इमारत है वो तुलादान करवे की यादगार है। ओड़छे के राजा वृसिंहदेवजू नें इक्यासीमन सुवर्ण से तुलादान दीनों है। सबसे छोटी पत्थर की मंडल के आगे है काशी नरेश नें ९।।।८६ सुवर्ण दीनो,महाराजा जयपुर नरेश ने ७८चाँदी दीनी,रीवाँ नरेश आदि की तुला तथा अहमदाबाद बाले सेठ गोविन्द भाई माणिकलाल सेठ ने २०००) की तुलादान कीनी। ये इन दानवीरों की बनवाई यादगार रूप में है। इनमें बड़े २ घंटा भी टँग रहे हैं जो कि आरती के समय बजै हैं इनके बीच में आरती करवे की चौंतरी है इसके चारों ओर की तिवारी बंगला यात्रियों के आरती

देखवे कों हैं आरती के बाद इन्हीं तिवारिन में वैष्णव श्रीयमुनाजी श्रीनाथजी के शृङ्गार अपने अपने चौवेन के हाथ सों धरामें हैं। चैत्र सुदी ६ को यमुनाजी कौ जन्मोत्सव होय है। कार्तिक शुक्ला दोज को याही घाट पै लाखों आदमी परदेशी व कुल शहर सुबह ३ बजे सों शाम को ३ बजे तक स्नान करै हैं परन्तु मध्यान काल १० बजे से २ बजे तक कौ विशेष महात्म्य है। याही दिन श्रीयमुनाजी ने अपने भाई यमराज कों तिलक करकें दक्षिणा में वरदान लियौ है कि आज दिन या बखत (काल) में निज जगह (विश्रामघाट) स्नान करै वह यमलोक नहीं जाय। बाराहपुराण स्कंद पुराण में कथा विशेष है यमद्वितीया महात्म्य स्कन्दपुराण में है। यह जगत विख्यात मेला है। कुरुक्षेत्र सों सौ गुनौ पुण्य लिखो है। १७ अ० २३ श्लो० बा० पु० म० म० बहन और भाई संग २ स्नान करै.

यात्रा के नियम विधि।

विश्रामघाट पर जाय कें यमुनाजी के किनारे पै एक तिलक U एक सतियो 卐 रोरी सों बनावै फिर श्रीयमुनाजी श्रीनाथजी को ध्यान करै। ध्यान—

श्यामामम्भोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमंजीरकूजत्।
कांची केयूर युक्तां कनकमणिमयीं विभ्रतीं कुण्डले द्वे।
भ्राजच्छ्री नीलवस्त्रां स्फुरदम् लसद्वालभारांमनोज्ञां।
ध्यायेन्मार्त्तण्ड-पुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम्।१।
फुल्लेन्दीवर दीर्घ चारु नयनां नील प्रभा द्योतिताम्।
दिव्यांदिव्यवपुर्धरां सुवसनां दिव्यांगतिं विभ्रतीम्॥
भ्राजन्नूपुर पाद पद्म युगलामानन्द कल्लोलिनीं।
कालिन्दीं कलगामिनीं कलतरां श्रीकृष्णकान्तां भजे॥२॥

और बिन पै एक २ पैसा एक २ सुपारी धरै। एक पैसा एक

सुपारी हाथ में लै संकल्प करै। श्री विष्णु ३ (इत्यादि) मथुराऽदि ब्रजमण्डल ८४ कोस की परिक्रमा रावल पर्यंत अमुक अमुक नियमानुसारेण प्रारम्भ महं करिष्ये।

यात्रा के नियम—सत्य बोलनों, ब्रह्मचर्य सो रहनों, पृथ्वी पर शयन करनों खाट पर नहीं सौनौ, ग्राम भीतर रात्रि में निवास नहीं करनों, मेघवृष्टि आदि आपत्ति समय पर भले ही रहनों, पर क्रोध नहीं करनों, पराये अपराध को क्षमा करनों, गारी देनों नहीं, जीव की रक्षा करनों, वृक्षन कों तोड़नों नहा,धावो के धुले (कपड़ा) को पुनः धोय कर पहरनों, साबुन नहीं लगानों, तेल नहीं लगानों, क्षोर (हजामत) नहीं बनवानों, निराहार व्रत नहीं करनौ दुख में धीरज धरनों,कष्ट आजावे उसे भी सहन करनों,चना खाय कर जल नहीं पीनों, चीवड़ा (आर्या) फूट, मक्का आदि पदार्थ नहीं खानों, कुण्ड को जल नहीं पीनों, केवल आचमन (पान) ही करनों। गौर (पंडा) की आज्ञा पालन करनी, अनजानी बात पूछ लेनी वा पर विश्वास रखनों, मुकाम सों गौर के साथ २ चलनों, कुण्ड २ पर माहात्म्यानुसार (श्रद्धानुसार) दक्षिणा गौर कों ही देनी। हाथ जोर आशीर्वाद लैनों, काम-क्रोध लोभ मोहादि परित्याग करने, शुद्ध आचरण सदाचार कौ त्याग नहीं करनों गुरू चरणन में भक्ति रखनी, गुरु सों प्राप्त मन्त्र को जाप करनों (विशेषता सों) या प्रकार नियम लैकै श्रीयमुनाजी सों प्रार्थना करै कि श्री महारानी जी ये सब नियम आपके पलाये सों ही हम पालन कर सकेंगे। हम आपकी शरणागत हैं। हम गौर सों सुफल लेंय जब आप हमारी ब्रजमण्डल यात्रा कों पूर्ण करि॥ इति॥ (नियम त्याग के समय प्रत्यक्ष गौदान कों करनों चाहिये जासों नियमन में जो त्रुटी रह गई होय चैंटी आदि जीव हिंसा भई होय वह दूर होकर पूर्ण फल प्राप्त होय है)

या प्रकार नियम लैकैं श्रीयमुना जी कै भोग धरावै वा प्रसादी को पुनः महाप्रभूजी के भोग धरावै । झारी सेवा भेट कर नमस्कार कर अन्तरग्रही परिक्रमा कर शिवस्थल (सोतार कुंड) या मधुबन मुकाम करै ।

अन्तरग्रेही परिक्रमा ।

विश्रान्तघाट महाप्रभू जी की बैठक पै संध्या समय नियम लेय । (प्रमाण वाराह पुराण मथुरा माहात्म्य ९ अध्याय २ श्लोक) (विश्रान्त दर्शनं कृत्वा दीर्घविष्णुं च केशवं) । दिनांते नियमः कार्यस्तीर्थे विश्रान्त संज्ञके) ॥ प्रथम महाप्रभू जी को दर्शन,भोग, कर कृष्ण-बलदेव को दर्शन करै, अन्नपूर्णा विश्वेश्वर को दर्शन करै, श्रीयमुनाजी धर्मराज का दर्शन करै,आगें गतश्रम नारायण (नवीन मन्दिर में) दर्शन करै गतश्रम टीले पर श्री गोपाल अष्टभुजी (चौबेन की गुरू गादी) सिद्ध-पीठ । कृष्णमहल प्राचीन गतश्रमनारायणजी को दर्शन । तहाँ सों सतघरा जहाँ सातौ स्वरूप विराजते हे पीछे यहाँ सों अन्त पधारे हैं । तुलसी चौंतरा जहाँ श्री नाथजी की बैठक (नवीन) कृष्ण महल की एवज यहाँ सों चौबच्चा मुहल्ला शत्रुघ्न जी को दर्शन (आपने ही लवणासुर कों मारकें यहाँ वीरभद्रजी को निवास दीनों है) उनके सामने ही वीरभद्रजी को दर्शन (वीरस्थल वारा० पु० म० ६ अ० ११–१२ श्लो०) वाके सामें गोपालजी को दर्शन आगें महोली की पौर पद्मनाभजी कौ दर्शन (महात्म्य आश्विन द्वादशी को विशेष फल १८ अ. ३७ श्लोक वाराह पुराण ६ अ० १४ श्लोक ॥ आगें रत्नकुण्ड काहू जमाने में हो अब बंद कर दीनो है) यहाँ रत्नेश्वर महादेव कौ दर्शन है वाके आगें दशभुजी गणेश विघ्नहरणहै ऐसी

निधि कहूं दर्शन में नहीं आई बड़ी विशाल सुन्दर मूर्ति है वाके आगें मानिकचौक कपिल वराह, रामचन्द्रजी लङ्का जीत कर लाये फिर अयोध्या जी में पूजन करी पीछे यहाँ शत्रुघ्न जी ने स्थापित करी (विशेष कथा वारा० पु० म० म० १२ अ० में है) इनके पास दाऊजी कौ दर्शन पास ही श्वेतवाराह (लवणासुर की पूजित मान्धाता की पूज्य है) (विशेष वा० पु० म० १२ अ० २३ सों ७६ श्लोक तक) आगे श्रीनाथजी की हवेली (नवीन) ताके आगे गजापाइसे में वैष्णव प्रहलादजी के घर में श्रीनाथजी को प्राचीन-अकृत्रिम चरण चिन्ह उनके आगे सीतला पाइसे में मथुरा-देवी (वा० पु० म० म० ८ अ० २१ श्लोक ११ अ० १७ श्लोक) आगें दीर्घविष्णु जी यहाँ कंस के मारवे कों आपनें दीर्घ स्वरूप कीनो हो (वा० पु० म० म० ९ अ० १४ श्लोक) आगें रामदास की मण्डी गली गुसाँईयान में प्राचीन मथुरानाथ जी को दर्शन ॥ उनके आगें मथुरानाथ महादेव (दीग दरवाजा) आगें केशवदेवजी का कटरा केशवदेव जी को दर्शन जो प्रथम श्लोक में लिखो है याकी पूर्ति आदि अन्त या प्रकार अन्तरग्रेही होय है यहाँ सों पीछे वाराहघाट मणिकर्णिका होकै विश्राँत घाट प्रदक्षिणा पूर्ण करे ।

शिवस्थल (शिवताल, महास्थल, शिवक्षेत्र)

यह स्थान विश्रामघाट सों अनुमान १ मील (नैऋत्य) है । यह प्राचीन कच्चौ कुण्ड हो राजा पटनीमलनें पक्कौ सुन्दर बनवायो याके चारों कोनेन पै छत्री हैं, बुर्ज हैं । कोयल और मोर यहाँ लताओं में बोलौ करै हैं । याको मधुवन की पहली पौर कहै हैं । यहाँ १००० वर्ष शिव ने तपस्या करी है । (बा० पु० म० म० १७ अ० ३ श्लोक) यहाँ के भूतेश्वर क्षेत्रपाल भये हैं । या दरवाजे के आप अधिष्ठाता हैं (बा० पु० म० म० ६ अ० १७ श्लो०) यहां स्नान

करे वो शिवलोक में जाय। यह पांच स्थल में पहिलो स्थल है।

मधुवन (महोली गाम)

(यह भगवान को नाभी स्थल है। ६)

आद्यं मधुवनं नाम स्नातो यत्र नरोत्तमः।
संतर्प्य देवर्षि पितृन्विष्णु लोके महीयते॥

वृ० नारद पु० ७९ अ० ६ श्लो०।

मथुरा शिवस्थल सों (दक्षिण) सीधौ दगरौ सड़क फाँद कें १॥ कोस है। मधुवन गाम के (ईशान कोण) रस्ता सों बाँये हाथ को बन में ऊंचौ टेकरा दीखै है। यहाँ ध्रुवजी ने तपस्या करी है सो ध्रुवजी कौ दर्शन है। यहां ध्रुवजी कों चतुर्भुज स्वरूप में दर्शन भयौ है। यहां सों नैऋत्य कोण गाम सों दक्षिण कृष्ण कुण्ड है याके उत्तर पार चतुर्भुज राय कौ दर्शन है। मधु-नामासुर दैत्य को यहां मार कैं नारद कौ संदेह दूर कीनों है। याहीसों मधुसूदन नाम यहां ही भयौ है आप श्रीकृष्ण बलराम दोनों भाई ग्वालन संग गाय चरावत यहां आये हैं। सो कृष्ण बलदेव कौ दर्शन है (यही चतुर्भुजराय माधव नाम को मधुबनिया ठाकुर है।) यहाँ ब्रज भक्तन नै कटोरा भर २ कैं छाक दीनी है। याते यहां मेवा कटोरा को दान होय है। कुण्ड के दक्षिण श्री महा-प्रभूजी की बैठक है ('सब ही बैठकन पै भोग झारी करनी चहिये पीछै जैसी प्रभु की मरजी)।

या मधुवन कों मधुनामासुर की पुरी न समझैं यहां मधु नाम भगवान को, विष्णु सहस्त्रनाम श्लोक १८ गोपालसहस्त्रनाम श्लोक ३७ में देखो माधवोमधु आपके नाम सों यानी मधू जो भगवान तिनको वन सो मधु नाम मिष्ट कौ है जो आपकों बड़ौ ही प्रिय है।

या मधुवन कौ माधव नामकौ देवता है याकोमंत्रः-(१८ अक्षर कौ) (अथ माधवीये) ॐ ह्रां ह्रीं मधुवनाधिपतये माधवाय नमः स्वाहा । (१०८ जपै) (दधीचि ऋषि अनुष्टुप् छन्द है) अथ ध्यानः—ध्यायेन्मधुवनाधीशं माधवम् मधुसूदनं वनत्रय कृता यात्रा विश्रामं देहि मे प्रभो ॥❀

तथा ध्रुव जीनें, ओ३म नमो भगवते वासुदेवाय॥जपौ है याते याकौ वासुदेव नाम कौ भी देवता है। इन मंत्रन के जपवे ते इन वनन की यात्रा को फल मिलै है। याते आगे जो मंत्र और वनन के लिखे जायँगे उन मंत्रन को उन्हीं वनन में जपै, जाते उन वनन की यात्रा कौ फल भगवत प्राप्ति होय ।

मधुवन सों वायव्य १ मील अनुमान लवणासुर की गुफा है। जाकों शत्रुहन जी नै मारौ है। वाकी कथा रामाश्वमेध में है। वहां माथुर ब्राह्मण (चौबे) रामचन्द्रजी के पास जायकें लवणासुर के दुःख सों दुखी है कै पुकारे हे। तब श्रीराम जी नै इनकों पूजन कीनों है। वहां सातहजार ब्राह्मणन की कमी ही सो इन सातों के पहुँचते ही धर्म घण्टा बजन लगौ फिर इन्है भोजन कराये। (इन एक ब्राह्मण को एक हजार के समान पुण्य श्री रामचन्द्रजी ने अपने श्रीमुख सों कहौ है। याते इन्हें भोजन करावे)

यदन्नेषां सहस्रेण ब्राह्मणानां महात्मनाम् ।
एकेन पूजिते नम्यात् माथुरेणखिलंहितत् ॥

वा० पु० म० म० १४ अ० ६४ श्लोक ।

और इनके संग शत्रुहन जी भेजे हैं। यहां भादों बदी (कृष्णा) ११ कों मेला होय है। रामदल की यात्रा को याही दिन मुकाम है।

❀नोटः—यह विषय विशेष विधि सों नहीं लिखे क्योंकि ग्रन्थ बढ़ जाने को भय हो।

ताल बन (तारसी गाम)

(तालवन तथा कमोदबन दोनों भगवान के स्तन हैं)

अथ तालाह्वयं देवि द्वितियं वन मुत्तमम् ।
यत्रस्नातो नरोभक्त्या कृत कृत्यः प्रजायते ॥ ७ ॥
बृहद् नारद पु० अ० ७९ ।

याको जाप मंत्र, (शक्र यामले) (शोडाषक्षर)

ओ ह्रीं ताल वनाधिपतये दामोदराय फट् (गौत्तम ऋषि अनुष्टप् छन्द । ध्यानः—ध्यायेदामोदरं देवं दाम्ना—बद्ध कलेवरम् प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांगा एव समर्थिता । इति ।

"पुनः या स्थल कौ दाऊजी भी प्रधान देवता है याको ध्यानः—

स्फुर दमलं किरिटंकिंकणी कंकणाहंम । चल दलक कपोलकम्
कुण्डूल श्री मुखाम्बुजं तुहिन गिरि मनोज्ञं । मेघावराढ्यं ।
हल मुसल विशालं कामपालम् समीढ़े ॥

जापमंत्रः—ओ३म् लकौं कालिन्दी भेदनाय शंकरर्षणाय स्वाहा ।

(गर्ग)

कुण्ड सों (दक्षिण) दगरो डेढ़ कोस है । यहां दाऊजी को दर्शन, तथा बलभद्रकुण्ड है यहीं आपने ?धेनुक-असुर (गधा के रूप) में आयौ वाके पीछे के पांय पकड़ फिराय कें ताल वृक्ष सों मारे उन वृक्षन के टूट कैं गिरवें सों एक की एक चपेट में आय आय कें सैकड़ान वृक्ष टूट टूट के गिर पड़े ॥ श्री० भा० १० स्क० १५ अ० ३३ श्लो० ॥ यहाँ मेवा कटोरा ❀ को संकल्प है । यहाँ सों आगे (नैऋत्य) नहर फांदकें ३ मील के अनुमान (पश्चिम) लटक ।

? यह धेनुकासुर राक्षस धनगाँव में रहतौ हो ।

❀ छाक के भाव में बारहों वन में १२ मेवा भरकें कटोरन को दान है

कमोद बन (कुमुद बन)

कुमुदाख्यंतृतीयन्तु यत्रस्नात्वा सुलोचन।
लभते वाँछितान्कामानिहामुत्र च मोदते ॥ ७ ॥

वृ० ना० पु० अ० ७९।

(वन्हि यामले) कुमुद वनाधिप केशव मन्त्रः (सप्त दशाक्षर) ओ३म् क्लैं कुमुद वनाधिपतये केशवाय फट्

॥ कान्व ऋषि केशव देवता पंति छंद ॥

ध्यान—केशवं कुमदाधीशं ध्यायेत्केशिवमर्दनं। प्रदक्षिथा कृत्ता यात्रा सांगं कुरु चतुर्भुजः ॥

यहां भी कृष्ण कुण्ड है श्रीकृष्ण गौ चराते आये, यहां कपिल मुनि ने तपस्या करी और श्री कृष्ण ने दर्शन दीनो है यहां ग्वाल बालन सहित जल क्रीड़ा करी है। यह कुण्ड सुन्दर कमोदनी कमलन सों सुशोभित हो उन कमोदनिन को ग्वाल बाल श्यामसुन्दर के अङ्ग पर फेंकते हे और आप जब कमलन सों मारबे को दौरते तब वे जल में डुबकी लगाय के अंगूठा दिखाते हे। एक तरफ सब ग्वाल हैं और श्रीकृष्ण अकेले बड़ौ ऊधम करते हे, तब श्यामसुन्दर वेणुनाद करते जाहि सुनकें ब्रज बाला तुरत उठ धाईं, छाक लाईं, मिश्री पुनः मलाई, कोई रोटी दधि लाईं, दर्शन करत हर्षाईं, कोऊ जल में कूद आईं, कमल माला बनाईं, निज करन पहराईं, कर पकर बाहर लाईं, चारों तरफ जिनके छाईं, तब स्वयं समझाईं, आस्वासन दै बैठाईं, रास करौगी प्रतिज्ञा सुनाईं, पीछे छाक मिल खाईं। पद—कुमुदबन भली पहुंचीं आय। सुफल भई है छाक तिहारी लाल कदमतर पाय ॥ १ ॥ तहां ते उठ चले

मानसरोवर संग सखा सब लाय। बैठत तहां ठौर गिर ऊपर चरत चहुँ दिश गाय ॥ २ ॥ खेलत खात हँसत परस्पर बातैं कहत बनाय। रामदास बल बल बूझन की कहा कहा व्यञ्जन लाय ॥३॥ (छाकपद २१ रामदास भगवदीय जिनकी गुफा पूछरी पर देखौगे)। पद—आज दधि मीठो बहुत गुपाल। भावत मोहि तिहारो झूंठो चंचल नयन विशाल ॥१॥ आनि पात बनाये दौना दिये सबन कौं बांट। जिन नहीं पायौ सुनौ रे भैया मेरी हतेरी चाट। बहुत दिनन हम बसे कुमुद बन कृष्ण तिहारे साथ। ऐसो स्वाद हम कबहु न चाख्यौ सुन गोकुल के नाथ ॥३॥ आपन हँसत हँसावत ग्वालन मानस लीला रूप। परमानन्द प्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप ॥४॥ यहां छाक के भाव में मेवा मिष्टान भरकें कटोरा (वाटका) कौ संकल्प करै। पुनः श्री महाप्रभूजी की बैठक श्याम तमाल के नीचे है जहां आपने सप्ताह पाठ कीयौ है। तहां भगवद् प्रसादी सों महाप्रभूजी कों (या भाव सों) छाक आरौगावें, झारी सेवा करै और प्रसादी लैकैं मधुवन पीछो जाय (कभी कभी यहां मुकाम परै है तब यहां सों सान्तन कुण्ड जाय है। (रास्ता) मधुबन—कुण्ड कों बायों दैके (उत्तर) पगडंडी सों थोरी दूर एक बगीचा है ताके बीच में सों (पूरब) दाहिने हाथ को निकस (उत्तर पूरब झुकतौ थोरी दूर) नवीपुर गाम ताकौ दाहिनो देकें पूरब सों उत्तर दगरो घूम जाय है। कमोद बन सों ५ मील अनुमान मधुवन आवै।

रस्ता मधुबन सों आगे (उत्तर) है। (वायव्य) गाम कौ दाहिनों देकें दगरै सों पालीखेरा वहाँ ते गिरधरपुर गाम यहाँ बड़ी विशाल दुर्गाजी कौ दर्शन है। जब कृष्ण गौ चराते या रस्ता सौं निकसे वा समय दुर्गा ने श्रीकृष्ण को पूजन कीनों और

प्रसन्न हैं बोली हे गिरधारी आप गिर को धारण करोगे, इन्द्र आपकी शरणागत आवैगौ तब मैं बिजली हेकै आकाश में तड़तड़ाहट बहुत करौंगी जाकी पहलें ही सों क्षमा चाहों हों। यह सुन श्रीकृष्ण ने वाहि वर दीनौ कि जो तेरौ पूजन मेरे मिलवे के अर्थ सों करेगौ वाहि मैं प्रत्यक्ष अथवा स्वप्न में अवश्य दर्शन देउंगो। यह चमत्कार यहां के पूजन सों अवश्य दीखै है। याते यह गाम गिरधरपुर श्रीकृष्ण के नाम सों है या गाम के (नैऋत्य) दगरे सों जाय मधुवन सों दो कोस यहाँ ते पास में ही—

सान्तनकुण्ड (सतोहा गाम)

कुण्ड के बीच ऊंचे पर सान्तनु बिहारी को मन्दिर है यहां सान्तनु राजा नें पुत्र कामना सों तपस्या करी। यातें श्रीकृष्ण ने प्रसन्न हैके दर्शन दीनो है आपने सतुआ को भोग धरायो है सो कृष्ण बलदेव ने रुचिकर आरोगौ है और बरदान दीनों तेरे पुत्र होयगो। जब इनके भीष्मपितामह भये हैं। यहाँ चाँदी, चामर, दूध को दान होय है। जिनके सन्तान नहीं होय सो यहाँ मन्दिर के पीछे गोबर कौ सतिया बनावै। गर्भाधान हैवे ये चाँदी कौ सतियो चढ़ाय दूध चामरन सों पूजन करै (क्षीर-दूध पाक) ब्राह्मणन को भोजन कराय चाँदी की दक्षिणा दैकें आशीर्वाद लेय वाकें भगवत् कृपा सों (पुत्र) संतान होय। (विश्वासो फलदायक)। यहाँ पुल के पास श्री ठाकुरजी की बैठक है। (बैठकजी सों उत्तर पगडंडी बहुलाबन जाय है) यहाँ रविवार भादों सुदी ७ कों स्नान कर सूर्य की आराधना करै। बाराह पुराण म० म० ६ अ० ४३ से ५० तक कथा है। या दिन यहाँ मेला होय है। यात्रा को एक दिन मुकाम भी होय है। आगे रास्ता—पगडंडी कुण्ड कौ

दाहिनो दैकैं, गाढ़ीन के रस्ता सों (ईशान) गाम भीतर हैकें❀ (ईशान) दगरे सों जाय है। गनेसरा हैकें बहुलावन। सतोहे सों बाकलपुर कों दाहिनो देकैं गनेसरा, पगडन्डी के रस्ता खेतन में हैकें दो कोस (उत्तर) है।

गणेशरा गाँव

यहाँ गन्धर्व कुण्ड है। पूतना के मरवे पै गन्धवन नें गान कीनों है, पुष्प वृष्टि करी है। आगे कुण्ड को दाहिनो दैकें अनुमान १ मील (वायव्य)—

खैचरी (फैचरी)।

यहाँपूतनाकुण्ड, गाम के (पश्चिम वायव्य) है यहाँ पूतना के प्रान खैंचे हैं। पूतना गोकुल सों यहाँ तक छै कोस में गिरी ही भाग० १६ स्कन्ध ६ अ० १४ श्लोक पतमानोऽपितद्देहस्त्रिगव्यूत्यंतर:द्रुमात् अथवा—मथुरायां व्रजंगता: ३१। स एवद्रष्टो ३२। ये दोनों श्लोक से भी यही मतलब है। नन्दजी गोपन संग मथुरा सों गोकुल गये तब पूतना को देह मरौ परो आँखिन सों देखो। अर्थात् गोकुल सों मथुरा तरफ देह परी ही आगे यहाँ सों (वायव्य) (उत्तर) १ मील।

बहुलावन (बाटीगाम)

बहुलावन तथा महावन ये दोनों भगवान की भुजा हैं। याकौ देवता पद्मनाभजी हैं। अगस्त्य संहितायाम् ओइम् द्धौं

❀सतोहे से (बायें) दतिया गाम है। यहाँ दन्तवक्र भजकें आयो पीछे श्रीकृष्ण भी आये यह यहीं मारो है यात्रा नहीं जाय है।

बहुलावनाधिपतये पद्मनाभाय स्वाहाः इति (सप्त दशाक्षरो मन्त्रः) यस्य मन्त्रस्यात्रिः ऋषि बहुलावनाधिपः पद्मनाभो देवता भूश्छन्दः मम सर्व काममू प्रश्णार्थे (पुत्र) फल प्राप्ति सिद्धदि द्वारा जपे विनयोगः ।

ध्यानः—पद्मनाभिम वरं ध्यायेद्बहुलावन नायकम् प्रदक्षिण कृता यात्रा सांगम् एव समर्थिताः इति ध्यात्वा (यथा-शक्ति जपं कृत्वा) ।

यहाँ श्रीकृष्ण ने गाय और सिह की रार बाँटी ताते रार-बाटी गाम भयो है । गाम के उत्तर कृष्णकुण्ड पक्कौ घाट तहाँ बहुला गाय सिंह को दर्शन है । वाके ऊपर मन्दिर में वहुला बिहारी कौ दर्शन है । याके उत्तर छोंकरा के पेड़ के नीचे श्रीमहाप्रभू जी की चौथी बैठक है या बन में गौ चरती हीं सो सिंह ने आन घेरी तब गौने प्रतिज्ञा करी मैं बछरा कों दूध पिवाय कैं आऊँ जब खाय लीजो, सिंह ने धर्म साक्षी कर छोड़ दीनी । गौ पीछें बछरा कों दूध पिवाय कें लौट आई तब सिंह खायवे कों उठो सोई गोपाल बीच में आन ठाड़े भये दोनोंन कों परम गति दीनी । यहाँ चैत्र शुक्ला चतुर्दशी कों १ गौदान करै ताकों सहस्र गौदान कौ फल मिलै (वाराह पु० म० म० ६ अ० ६ श्लो०) पुनः वह मेरे लोक कों जाय । श्लो०—चतुर्थं (पाठान्तर, पंचमं) बहुलाक्षन्तु बनंपाप विनाशनम् । यत्रस्नातस्तु मनुजः सर्वान्कामान वाप्नुयात् ॥११॥ वृ० ना० पु० अ० ७९ ॥ यहाँ गाँठ जोरकें स्नान करै ताके सर्व पाप दूर है मनोकामना पूर्ण होंय, गौ दान वस्त्र कौ संकल्प करै गाम भीतर गढ़ी में राधाकृष्ण कौ सुन्दर दर्शन हैं । (आगे यहाँ सों विचार कें चलें क्योंकि कैऊ रस्ता हैं जो आगे लिखे हैं)

सकना गाम

बाटी गाम के भीतर हैकें (नैऋत्य) १ मील वहाँ बलभद्र कुण्ड दाऊजी कौ दर्शन है ताकौ बांयौ दैकैं (दक्षिण) (नैऋत्य) यहाँ ते १॥ मील ।

तोष गाम

यह तोष गाम कौ सखा नाचवे में अति प्रवीण हो । यानें श्री कृष्ण कौं नाचवौ सिखायौ है । यहाँ तरस कुण्ड है । जामें जल पीकैं गौ ग्वाल ठाकुरजी सन्तुष्ट भये हैं । यहाँ सों सीधौ रस्ता एक कोस अनुमान जिखिन गाम है । दूसरो रस्ता बिहारवन वायव्य पश्चिम एक मील । तहाँ ते जिखिन गाम १॥ कोस है ।

बिहारबन

राधाकृष्ण कौ विहार स्थल, यहां श्री राधिका जी नें कृष्ण के नृत्य की परीक्षा कीनी कि तोष ग्वाल ने कैसो नृत्य सिखायौ है तामें मंथर गति भगवान सों नहीं निकरी सो श्री राधिका जी नें सिखाई हैं ।

दोहा

खड़ी छड़ी लै राधिका प्रिय को नृत्य सिखात ।
मन्थर गति जबही बनी डरसों थर थर्रात ॥

नृत्य सिखाय कैं फिर विहार कीनों है, सो कृष्ण विहार कुण्ड है यहाँ कृष्ण बलदेव नें गौ चरावत ग्वालन संग आयकें जल क्रीड़ा करी । यह कदमखंडी देखवे लायक है । याके बीच पक्की छोटीसी छत्री है तामें वज्रनाभ के पधराये चरण कौ दर्शन है ।

यहाँते दक्षिण बुढ़िया कौ नगरा (बिहार बन को नगरा भी कहत हैं) नहर किनारे है। ताकों दहिनों दैकैं सीधौ दगरौ दक्षिण १॥ कोस जाय।

जिखिन गाम (यत्तहन गाम) है।

यहाँ रेवती कुण्ड रेवती जी कौ दर्शन गाम ते पश्चिम में है आगे गाम भीतर है कैं पूर्व निकस जाय वहाँ दाहिने हाथ कौं दाऊजी के दर्शन हैं। ताके पीछे बलभद्र कुण्ड है। यामें सों दाऊजी की मूर्ति प्रगट भई है। याके सामने (उत्तर) रेणुक कुण्ड कच्चौ, खेतन में अटिगयौ है ताकी वृक्षावली सामने दीखै है।

बहुलाबन सों एक रस्ता पश्चिम दगरो है यहाँ ते ३ मील रार गाम दाऊजी कौ दर्शन बलभद्र कुण्ड, रेवतीकुण्ड याके दक्षिण आध मील विहारवन है। (अथवा रारसों उत्तर को रार गाम की कदमखण्डी बड़ी लम्बी एक और भी है) अथवा रार गामसों दक्षिण नैऋत्य जसुमती सखी कौ। (जुनेड़ी) जसोदी गाम सूर्यकुण्ड १॥ कोस है। ताके (दक्षिण नैऋत्य ३ मील बसंती सखी कौ बसोंती गाम यहाँ वसंत कुण्ड है। यहां गौ चरावत कृष्ण आये जब या सखीनें छाक दीनी है (बसंत पंचमी के दिन) यहाँसों अनुमान १। कोस राधाकुण्ड है। अथवा जिखन गाम सों मुखराई दो कोस डेरा परै तो जाय। अथवा तोसगामसों सीधो अड़ींग अग्निकोंण नहर कौ पुल दीखत है ता दगरे सों दो कोस अनुमान अड़ींग है।

जिखिन गाम सों कुण्ड कौ दाहिनों दैकैं दक्षिण जाटन कौ नगरा हैकैं ३ मील नहर २ पानी न होय तो वा पार के दगरे सों अथवा दक्षिण पुल (पटरी २) पक्की सड़क सों गाम के पश्चिम डेरा करै।

अड़ींग

यहाँ से पूरव सड़क ६ मील मथुरा ४ मील पश्चिम गोरधन है। या नहर के पुल सों दक्षिण १॥ मील पटरी २ (मथुरा तरफ की) जाय बाद वांये हाथ कौं थोरी दूर नहर सों माधुरी कुड माधुरी-मोहनजी कौ दर्शन है।

कवित्त

माधुरी लतान बीच माधुरी बजाई :वेणु तान सुनि माधुरी की धाईं बाल माधुरी। बन विहङ्ग माधुरी बहै समीर माधुरी डार गलबांही श्याम नृत्यु करे माधुरी। माधुरी द्रुमन दुरि माधुरी विलोकै छवि लाजत मराल गति पेख देख माधुरी। नूपुरधुनि माधुरी सुहाई चित्त माधुरी ऊमें ताल माधुरी सो माधुरी हू माधुरी।१।

(यहां फारम की बस्ती भी हैगई है) यहां से पीछो अड़ींग ही आनो पड़ै है।

याहि अरिगृह भी कहैं हैं। कंस के मरवे के बाद वाके आठौ भाई डरकें भागे सो दाऊजी नें यहाँ आयकें मारे हैं। ऐसो भी कहै है। यहाँ ग्वालन सङ्ग जल में क्रीड़ा (किलोल) करी है ताते यहां किलोल कुण्ड है कुण्ड के अग्निकोण में किलोल बिहारी कौ सुन्दर दर्शन है। सत्य नारायण जी कौ मन्दिर भी है। यहाँ प्राचीन दाऊजी पहले विराजते हे। एक समय यहां अड़ कैं दान भी लियो है। यहाँ सातो स्वरूपन सहित पान, बीड़ा, जल श्रीजी नें अरोगे है।

सुखराई।

अड़ींग सो पश्चिम सड़क २ एक मील आगे नहर कौ बंवा उत्तर सों आवै है, तासौ दाहिने हाथ कों याही पार सों किनारे

किनारे ही जाय दो मील आगे दाहिने हाथ कौं पुल के पास ते उतर जाय सामने ही पासमें गाम दीखै है ताके उत्तर गाम बाहर ❀मोक्षराज तीर्थ (१३ अ० ३९ श्लो० बा० पु० म० म०) (यहाँ मुखरा नामक गोप की नारद के उपदेश सों मोक्ष भई है ।) पूरब दक्षिण दो तरफ पक्के घाट हैं । यहाँ मुखर गोप की कुलदेवी मुखरा कौ दर्शन है । याकों मुखरा गोप कौ गाम कहै हैं । गाम के वायव्य कोने पै मुख्य बिहारी जी कौ दर्शन है । यहाँ ते बाही रस्ता बंबा २ है कें एक मील पै पक्की सड़क उत्तर दक्षिण आवेगी, तासों दाहिने हाथ कों उतर जाय ।

राधाकुण्ड (सखीस्थल)

या गाम को भी यही नाम है । यह श्रीराधिका जी के हस्त कमलन सों प्रकट भयो है । ताके पूर्व श्रीकृष्ण कुंड आपके हस्त ही सों प्रकट भयो है । ये दोनों बराबर एक घाट के अन्तर सों है, बीच में कौ घाट प्लेटफार्म सदृश है या कृष्ण कुन्ड के बीच में कृष्ण के पन्ती बज्रनाभजी को कुन्ड है जादा जल हवेसों याकों दर्शन नहीं होय है । इन दोनों कुन्डन की प्रदिक्षिणा कर महाप्रभुजी की बैठक पै आवै । रस्ता में दाहिने हाथ कों पहलें एक चौतरा है तासों गली भीतर जाय कुन्ड के उत्तर पार पै वहाँ श्रीगिर्राजजी की जिह्वा है राधाकृष्ण कौ यहाँ मन्दिर है । यहाँ पांचों पांडव छटे नारायनण कौ एक वृक्ष तामें पाँच वृक्ष हे सो लोप हैं ताकी सन्तति है । यहाँ ते आगे दाहिने हाथ कों विशाल सुन्दर श्री

❀यहाँ मुख रहा (सुखरस्ता) सोंअरिष्टासुर के प्राण निकसे हैं ताकी मोक्ष श्रीकृष्ण ने करी है ।

गोविन्दजी कौ मन्दिर है। ताके पास बांये हाथ कौ पक्को श्रीललिता कुन्ड है। ताके उत्तर कच्चो विशाखा जी कौ कुन्ड है चातुरमास में इनकों जल एक है जाय हैं यही जल राधा कृष्ण कुन्ड में जाय है। याके पास राज कदम्ब है जामें मृदंग कौ चिन्ह है। यहाँ एक बड़ कौ वृक्ष है तामें श्रीराधाकृष्ण सखिन नें झुलाये ह। ताके चारों ओर अष्ट सखियन के कुण्ड हैं और कुण्ड भी हे सो खेतन में लोप है रहे हैं। कहूँ कहूँ चिन्ह मात्र दीखें हैं। यहाँ गोपी कूप है, तहाँ वेणुनाद की ठौर नारायण कुन्ड है जहाँ वैणुनाद कर सखी बुलाईं हैं पीछे भूला झूले हैं। ताके आगें श्रीमहाप्रभूजी श्रीगुसाईं जी, श्रीगोकुलनाथ जी ये तीन बैठक हैं। यहाँ स्नान कौ बड़ो माहात्म्य है।

(भा० द० ३६ अ०) याके पास अरिष्टासुर कों मारो है (मानसीगंगा ते उत्तर ताको प्रमाण) बाराह पुराण मथुरा माहात्म्य १३ अ० ३२ श्लोक से ३८ तक राधाकुण्ड माहात्म्य कथा है। ता अरिष्टासुर को बैल रूप में देखो ताते बैल मारे की हत्या ग्वाल गोपन ने श्रीकृष्ण कों लगाई और कह्यौ हम तेरे संग नहीं खायेंगे, तैंने बैल मार डारौ, सो तू सब तीर्थन कौ स्नान कर जब तेरी हत्या दूर होयगी, तब श्रीकृष्ण नें उनको समझायकैं (१०१) सर्ब तीर्थन कों आवाहन, आकर्षण मंत्रन कौ बांसुरी में गान करो सो सर्व तीर्थ कार्तिक कृष्णा अष्टमी कों अर्धरात्रि पै आये और राधाकृष्ण के खोदे कुन्ड तिनमें जल उमग परौ ता दृश्य कौ देख ग्वाल गोप सब प्रसन्न हैगये ता अर्ध रात्रि पै राधाकृष्ण गोप ग्वाल ब्रज भक्त गोपी आदि सबही नें स्नान करौ आकाश सों देवतान नें सब तीर्थन कौ पूजन राधाकृष्ण के पूजन निमित्त पुष्प वृष्टि करी, जय जय कार शब्द ध्वनी छाय गईं हती। यहां कौ मेला अबहू उपरोक्त तिथि (अहोई अष्टमी) अर्द्ध रात्रि पै स्नान

करवे कौं हजारों देशी प्रदेशी आवें हैं। (ऐसो भी प्रमाण कहीं जरूर होयगो) यहां राधाकृष्ण के वस्त्राऽभूषण दान करकैं अपने चौबे (पण्डान) कौं देय। आगे दक्षिण सड़क सड़क एक मील पै ।

कुसुमसरोवर (कुसुम वन)

कौसुमोसर नारद पु० १० अ० ९ श्लो० ।

यह वन पुष्पन सों सुशोभित हतौ या सरोवर में गोपी सब कमल रूप सों भईं कृष्ण भ्रमर रूप है तिनको चुम्बनादि करत हते। यहाँ श्री राधिका जी कौ शृङ्गार अपने हाथन पुष्पन सों कीनों है। पद—प्यारी को शृङ्गार करत नंदलाला। बार बार में मोती मोतिया, कन बिच झलकत पुष्पन वाला। नूतन गुँथी कलिन को लहँगा, लाल कलिन को लाल दुशाला। प्रीत पीत के नूपुर पायन, हार शृङ्गार हार हिय डाला। श्वेत चमेली लसत कंचुकी, मानो मुक्तन की यह माला। नारायन प्रभु रसिक शिरोमणि, यह छवि निरखत सब व्रज वाला ॥ १ ॥

कौसुमसर कथा—यहां नारदजी ने मध्यान संध्योपासन करौ पीछें वृन्दादेवी ने दर्शन दीनौ, कृष्ण लीला के इच्छुक जान माधवी सखी ने इन्हें यहाँ सरोबर के पश्चिम उत्तर कोने में स्नान कराये सो यह स्त्री है गये तब श्री गोपीनाथ जी के पास लैगई इनके संग रमण आलिंगन कर पीछै भेज दीनी तब फेर या सरोवर के पूर्व दक्षिण स्नान करौ जब पुरुष है गये। बाद या लीला रस के इच्छुप रहे सो याके पूर्व दक्षिण तप कीनों सो नारद कुण्ड आगे लिखौ है। विशेष बृहद् नारद पुराण ८० अ० ९ के श्लोक सों ३५ तक पुनः और भी नारद की कथा है। भा० द० पू० १५

अध्याय में बलदेव जी सों या बन की प्रशंसा श्री कृष्ण जी नें करी है।

यहाँ उद्धवजी नें स्नान कीनों जब जल के भीतर श्री कृष्ण कौ दर्शन कीनों ऊपर निकस कमलन पै निगाह गई, सब गोपी कमल रूप में दीखीं, तिन पै भ्रमर रूप श्री कृष्ण दीखे, याकों देख प्रभुन की शरण द्वारिका में जाय ब्रज की लता हैवे कौ वरदान प्राप्त कर यहां लता रूप सों निवास करै हैं यहां प्राय: देव ऋषि वृक्षन के रूप में नित्य लीला देखवे कों निवास करै हैं। याही ते हरे वृक्षन कों नहीं तोड़नों चहियें। या सरोवर कौ कृष्ण सरोवर हू कहैं हैं। यहाँ उद्धवजी ने कृष्ण मयी लीला देखी जो यहां उद्धव जी कौ दर्शन हैं। तथा कुसमविहारी कौ दर्शन है। ताके पास ही नारायन स्वामी की समाधी कौ दर्शन है। इनकी कन्या श्री राधिका जी कौ स्वरूप :धारण कर रासलीला करती ही, वा समय श्री कृष्ण जी वाके संग लीला करते हे। सरोवर के पास बहुमूल्य के बड़े सुन्दर छत्री बंगला भरतपुर राज के बनाये हैं दिल्ला की लूट कौ रुपया (ब्रज में) लगायौ है। वाही समय कौ यह कुण्ड पक्कौ बनौ है और वाही समय दीग के भवन बने हैं। उपरोक्त (छत्री) बंगला में दाऊजी कौ बिसाल दर्शन हैं। ताके वायव्य पास में ही उद्धव कुण्ड है। (जाकी स्क० पु० भा० य० शाँडिल्य ऋषि, वज्रनाभ और राजा परिक्षत आदि की कथा विशेष रूप सों है।) ताके पूर्व में पक्की सड़क फादकें अनुमान १ फर्लांङ्ग के।

नारद कुन्ड

नारदीये मन्त्र—ओं क्लीं नारदवनाधिपतये मदनगोपालाय स्वाहा (इति अष्टादशाक्षर (मन्त्रः) अस्य कौशिक ऋषि मदन गोपाल देवता कौमारी छन्द मोक्ष पद प्राप्ति जपे विनयोगः

(ध्यान) ध्यायेन्मुनि बनाधीशं गोपाल मदनाभिधं । नवनीत प्रियं कृष्णं वन यात्रा शुभ प्रदं ॥इति ॥

यहाँ नारद जी कौ दर्शन है। यही तप करौ है। (भा० द० २७ अ० २४ श्लोक) पुनः गोबिन्दऽभिषेक समय वीणा बजाय नृत्य करौ है। यहाँ पै नारद कौ सन्देह दूर कीनौ है। ताके पश्चिम सड़क के दाहिने बाजू अनुमान एक फरलांग गिर्राज की शिला में रत्न सिंहासन कौ चिन्ह है ताके नैऋत्य पास ही।

ग्वाल पौखरा

यहाँ ग्वालन के संग छाक आरोगी है ता समय आप रत्न सिंहासन पै विराजे हैं। वाही समय श्री गिर्राज जी की यह रत्न जड़ित सिला ग्वालन नें देखी है। आगे सड़क सों वांये अनुमान १ मील।

किलोल कुण्ड

यह कुण्ड पक्कौ है तथा बड़ौ रमणीक स्थान है। यहाँ किलोल बिहारी कौ दर्शन है याके पास ही १ फरलांग दक्षिण, "हरि गोकुल" नन्द जी नें महाबन सो आय कें वसायौ हो। पीछे वसई नन्द घाट के पास बसें।

गोवरधन गाम

यह भी वृन्दावन है। गाम के कौने पै दाहिने हाथ कों बहुमूल्य भरतपुर राज्य के बंगला बन रहे हैं। आगे रस्ता सड़क सों दायें हाथ कों पच्छिम है ताके बायें हाथ कों एक मकान छोड़

कैं दक्षिण गंगा जी कौं रस्ता जाय है। वहीं पै मुखारविन्द कौ मानसी गंगा के बीच में दर्शन हैं। यहां गोरधन द्विज नें तप करकें विष्णु सों वर लीनों कि मैं गिर (पहाण) होऊ और आप मेरे ऊपर क्रीणा करौ जाकी कथा (वृ० ना० पु० ८० अ० श्लोक ८६ सों है) ताके पच्छिम वाही सड़क सों जाय।

चक्रतीर्थ

चक्र तीर्थ नरः स्नाना❀ पंच तीर्थाख्य कुण्डके (वा० पु० १३ अ० ४२ श्लोक) यहाँ स्नान कर पीछे पंच तीर्थ स्नान करै। यहाँ चकलेश्वर महादेव कौ दर्शन है। जिनके दर्शन सों यात्रा कौ फल मिलै है। या मानसी गंगा पै स्नान तर्पण कौ महात्म्य है ॥ १८ ॥ यहाँ गोवरधन की परिक्रमा कौ भाद्रपद शुक्ला एकादशी कौ फल हैं। आषाढ़ सुदी पूनौ की परिक्रमा कौ राजसूय यज्ञ कौ फल है ॥ ४६ ॥ मथुरा तें दो योजन दूर गोबरधन है ॥ १३ ॥ महादेव जी सों दक्षिण में ऊँची श्री महाप्रभू जी की बैठक है। यहाँ आपने संध्यावन्दन स्नान कीनों है। उजागर चौबेजी कों गौदान दीनों है। ताते यहाँ गौदान करकै अपने

❀यह पंच कुन्ड सकीतरा (सखीन कौ गाम) और गोबरधन के बीच में है। इन पंच कुन्ड में एक सखी कुन्ड और मिल गयौ। याते ये छै सखीन कै छै कुन्ड विख्यात है। यह सखी कुन्ड भगवान कौ होट है (दूसरौ प्रयाग त्रिवेनी कुन्ड कामवन में लिखौ है)

नोट—गिर्राज की परिक्रमा राधा कुन्ड कौं जाय तब सखी कुंडकौं दायों देकैं जानौ चहिये। (सो वायों देकें चली जाय है)

चौबे कौं देय। नोट—(यह सब तीर्थ मथुरा मण्डल में है, याते मथुरा के जो (पंडा) पुरोहित हैं सोई सब मथुरा मण्डल के पंडा हमेशा सों माने हैं) यहाँ वत्सासुर मारे की हत्या दूर भई है (ऐसौ सुनौ है प्रमाण कहूँ जरूर होयगो) यहां सों दक्षिण की ओर वा पार घाट के ऊपर छोंकरा के पेड़ के नीचे श्री गुसाईं जी की बैठक है ताके दक्षिण नैऋत्य मनसादेवी श्री गिर्राज की शिला में है। नवीन एक मूर्ति सिंहवाहिनी मयलागुड़ीया की और भी है। याके चौतरा के नीचे पश्चिम ब्रह्म कुन्ड है यामें स्नान करै तौ आत्म तत्व कौं जाने। ऋषीन करके पूजित है। वृहद नारद पुराण में ८० अ० ५९ श्लो०) तथा बाराह पुराण म० म० में याहि मानस तीर्थ ब्रह्मा के मन सों प्रकट भयौ लिखौ है। अ० ३। २१ श्लोक। ताके दक्षिण ऊँचौ चढ़ कैं फाटक के भीतर लाल पत्थर कौ श्री हरदेव जी कौ प्राचीन मन्दिर है। (बा० पु० १२ अ० १८ श्लो० १३ अ० १६ श्लोक) यह मूर्ति श्री वज्रनाभ जी की पधराई है औरङ्गजेबके समय लोप हैगई। पीछैं फिर प्रघट भई है। (इनके भोग कौं कुछ ग्राम हैं)।

नोट—मानसी गंगा पै राजा मानसिंह ने काऊ जमाने में दिवारी अच्छी करी ही। सो गमारू भीड़ अबहू बहुत तादाद में यहाँ इकट्ठी होए है। दीपदान कौ विशेष माहात्म्य यहाँ कोई नहीं है। जैसे गंगा, यमुना, देवालय, तुलसी, पीपर, आदि के प्रमाण हैं सो यहाँ कौ भी है। रोशनी के हकमें मथुरा की दिवारी अब बहुत जादा है। मानसीगंगा सों यमुना जी कौ माहात्म्य भी जादा है।

यहाँ सड़क पै इक्कान कौ अड्डौ है। तहाँ एक धर्मशाला भी सुन्दर बन गई है। वहां सों दक्षिण एक तलैया सड़क के पास भरी

है वह ऋणमोचन कुन्ड है। तहां शिला लेख लगौ है ताके सामें उत्तर पापमोचन (पुन्डरीक नाम, वा. पु. म. म. १३ अ. २० से २२ तक) पुनः मथुरा की ओर सड़क पै थोड़ी दूर धर्मरोचन-गोरोचन ये तीनों कुन्ड मट्टी सों अट गये हैं सं० १८८६ की लिखी शिला लगी है। आगे पश्चिम दानघाटी—यहाँ श्री गिर्राज महाराज के ऊपर रस्ता सड़क पत्थरन की बनी है यहां बीच घाटी दाहिने हाथ पै दानीराय कौ मन्दिर है यहाँ जतीपुरा सों एक दिन यात्रा आय कें दानलीला कौ रास करत है। यहाँ श्री कृष्ण राजा बने हैं। ग्वाल सिपाई बने हैं और गोपीन कौं रोककैं दान लीनौ है (भा० द० १८ अ० १५ श्लोक) कदाचिन्नृप चेष्टया, यहाँ या लीला कौ भाव है। राग विलावल—एरी यह कोहैरी याहि दान देत गोवरधन केरी ग्वैड़े। हारन खेत न गाम मढैया कान्हर ठाड़ौ एड़ै। बाप भरै कर कंस रजा कौ पूत जगाती पैंड़ें। या वृज की अब रीति नई है अबला तिनको न्याव निवेड़े। पराये वगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैड़ी छैड़ें कृष्णदास वरजों नहिं मानत तोरत लाज की मेंड़ें॥ जब कंस राजा कौ भय बतायौ तबही आपनें कंस के मारवे की प्रतिज्ञा कर दान जबरदस्ती लीनों (गागर फोर दही की लूट करी) यहाँ सों रस्ता दो हैं। नं० १ दाहिये हाथ कों दक्षिण कच्ची सड़क ताके बाँये निवृत्त कुन्ड है। यहां गोपीजन नें गृहस्थाश्रम के मोह कौं (नृवृत्त) दूर कर भगवत् प्राप्ति करी। इनकी लज्जा तो वा वैणुनाद नें दूर पैलेहीं कर दीनीं हती। यहाँ ते दो मील (नरम) चन्द्रसरोवर है। अथवा—मथुरा की ओर पक्की सड़क दो मील जाय, आगे दक्षिण दाहिने हाथ कों श्री कूमनदास जी कौ जमुनाउतों गाम है। आप अष्ट सखान में हैं। यहाँ सारस्वत कल्प में श्री यमुनाजी की एक धार बहती जासों जमनाउतों नाम भयो है। यहाँ कूमन तलाई

जहाँ श्यामा गाय की बैठक है। यहां सों पश्चिम नैऋत्य दुवेले कौ दुवेलो गाम है। यह भी कृष्ण कों ग्वाल हो यहाँ दुवेलोकुण्ड है। ताके आगे—

पारासोली बट (चन्द्रसरोवर)

यहां बट कौ वृक्ष पहले हो। कुण्ड सों पूर्व शिखिरदार चन्द्रबिहारी कौ मन्दिर है। जाके पास रास चौतरा वैणुनाद की ठौर भा० द० २१ अ० १८ श्लो० (यहाँ चन्द्रमा कों ६ मास तक ठहरवे की (मनते) आज्ञा करी है। चन्द्रमा मनसो जात (इति श्रुति) आपके मनसों उत्पन्न भयौ चन्द्रमा नें दिव्य कलान सों अमृत वृष्टि करी सों यह सरोवर लता औषधि पुष्प सब नवीन अंकुरन सों सुशोभित भयौ है, वैणु कों सुन कै गोपी उलट पलट शृङ्गार कर भाग उठीं। यह सब वृन्दावन है। स्कन्दपुराण, अहो वृन्दावनं रम्यं यत्र गोबर्द्धनोगिरि (वृ० गोतमीतंत्र) पंच योजन मे वास्ति बनंमे देह रूपकम्। कालिन्दी यं सुषुम्नाख्या परमानन्द वाहिनी। (भागवत् द० ११ अ० ३४ श्लो०) वृन्दावनं गोवर्धनं यमुना पुलिनानिच। वीक्यासी दुत्तमा प्रीती राममाधवयोर्नृपः। यहाँ वैणुगीत सुन गोपी तन्मय है गई हती। श्री मद्भागवत् द० २१ अ० २ यहीं शरद निशा छै मास रास प्रारम्भ की जगह है ता पीछै अन्तर्ध्यान भये पीछै प्रगट है बंसीवट रास क्रीड़ा करी है। ताके दक्षिण पक्के मकान दीखैं हैं। यहाँ श्री महाप्रभू जी गुसाईंजी, गोकलनाथजी, तथा हररायजी आदि ये चार बैठक हैं यहाँ श्री गुसाईंजी नें छै मास विप्र योग सों अनुभव कीनों है। पुनः श्रीनाथ जी कौं रामदासजी के हाथन आप माला भेजत हे सो यहाँ फूलघर है। यहां श्रीनाथजी कौ जलघड़ा है। याकौं चन्द्र

कूप भी कहैं हैं। यहाँ ते पश्चिम वायव्य दो बड़ी बड़ी शिला हैं इन्हें इन्द्र के नगाड़े औंधे पड़े बतावैं हैं।

नोट—यहाँ सों एक रस्ता पश्चिम सूदौ दगरौ आन्योर कों २॥ मील अनुमान है।

चन्द्र सरोबर सों कच्ची सड़क दक्षिण दो मील पैठे कौं जाय है। आगे रस्ता के सहारे पैठे के पहले दाहिने हाथ कौं मोह कुण्ड है। यहाँ श्री कृष्ण की बंशी कों सुनकें गोपी मोह कौं प्राप्त भई।

(नोट—या मोह की भी निवृत्ती निवृत्त कुण्ड पै है गई)

पैठौ गाम

(गारुडोपनिषदि) ओं ल्कीं इन्द्र प्रतिबनाधिपतये चक्र पाणये नमः। १८ अक्षर मन्त्र

अस्य मन्त्रस्य नारदऋषिरिन्द्र प्रतिबनाधिपश्चक्रपाणिर्देवता उष्णिक् छन्द मम सर्वारिष्ट निवारणार्थे जपे विनयोग।

ध्यानं-ध्यायेच्छक्रवनाधीशं चक्रपाणिं चतुर्भुजं। कृता प्रदक्षिणा सिद्धिः सागं एव समर्थिता॥ इति॥

आगे याही रस्ता सों गाम के भीतर हैकें सूदौ एक मील नारायणसर तीर्थ नारायण कौ दर्शन (पक्के घाट पै) वाके दक्षिण (मरोड़ कें दिखायौ सो) एठा कदम है ताके पश्चिम शिखिरदार प्राचीन मन्दिर में चतुर्भुजराय कौ दर्शन है यहां कृष्ण कुण्ड है। यहाँ श्री कृष्ण के वांये कर की उँगरी बाण रूप सों या सरोवर के

मार्ग श्रीगिर्राज के नीचे पैठी जासों पैठो गाम नाम भयौ है। (अथवा वृजवासी वर्षा समय पैठे) उँगरी के स्पर्श मात्र सों ही श्रीगिर्राज आपही ऊँचे हैगये। गाम के पश्चिम साक्षी गोपाल कौ मन्दिर है याकौं बांयौ देकें। बांये कौं कदमखण्डी में हैकें दगरौ नैऋत्य पूछरी ५ मील जाय है। अथवा दाहिने कौं वायव्य पगडण्डी हैकें नहर के पुलसों दाहिनौ झुकतौ आन्योर पहुँचे। पैठे सों आन्योर पूँछरी होत जतीपुरी ८ मील है। आगे पैठे सों कच्ची सड़क के रस्ता ४ मील।

बछ गाम

नोट—श्री मद्भागयत् द० १३ अ० २१ श्लो० श्री कृष्ण बच्छ बन सों बछरा ग्वाल के रूप धारण कर उन के घरन में जाते तब उनकी माता नित्य सों विशेष प्यार कर श्रीकृष्ण कौं अपने अपने स्तन पिवावत हीं ॥ २२ ॥ या प्रकार ब्रह्मा कौ एक क्षण मात्र यहाँ पै एक बर्ष के समान बितीत भयौ है।

एक दिन कृष्ण बल्देव बछरा चरावत ग्वालन संग यहाँ (बछ गाम में) आये। सो दाऊजी कौं उन बछरा ग्वालन में बड़ौ मोह भयौ। तब ज्ञान दृष्टि सों देखों उन बछरा ग्वालन में विमल सहस्रन श्रीकृष्ण के रूप दीखे है ॥ ३८ श्लो० सो यहाँ (विमल) सहस्र कुण्ड है (शंकर्षण कुन्ड है) यहां पीछै अड़-ठान कैं दाऊजी ने श्री कृष्ण सों पूछी। हे प्रभो! ऐसौ मैं क्यों देखत हूँ। सो, या भेद कों ॥ ३९ ॥ कृष्ण नें कहो। भैया तू बड़ौ अड़बारो है। याते अड़बारो कुण्ड है। ब्रह्मा नें ग्वाल बछरा चुराय लीने तासों मोय उनके रूप धरने परे हैं। यह सुन क्रोध कर बोले तुमकों ऐसौ कष्ट ब्रह्मा नें क्यों दीनौ जो आप

त्रण चरत हौ। मैं ब्रह्मा कौं ब्रह्मलोक सहित क्षण मात्र में नष्ट करूँगो।

तब ही श्री कृष्ण नें राम स्वरूप सों दाऊजी कों दर्शन दीनों है। (ताते राम कुण्ड हैं) पीछै बोले मेरे, या अवतार में जनकपुर की कछू स्त्री मोय पती रूप में चाहत हीं, उनकौं मैंने बरदान दीनों हो कि तुम्हारी इच्छा कृष्णावतार में पूर्ण करूंगो सो विननें गोपी हैकें यहां जन्म लिये हैं। उनके संग रास क्रीडा कर उन्हें सुख दैनों है। पुनः कछू अओध्या की स्त्री, ऋषी पत्नी मोय पुत्र भाव सों चाहत हीं वे सब यहाँ गौ, गोप स्त्री, भई हैं। तिनकी इच्छा पूर्ण करवे कौं मैं उनके स्तन, पीवत हों, वे मोय पुत्र करकैं लड़ियावत हैं ताते तुम्हारी अड़ करवे योग्य नहीं हैं। ब्रह्मा कों क्षमा करो यह मेरी इच्छानुसार ब्रह्मा की मत भई है। यह कह आपनें निज (कृष्ण) रूप कीनों पीछै बैठ छाक आरोगी है। ता समय ब्रज भक्त कनक कटोरान में महेरी (रावड़ी) भर भर कैं दीनीं है तासों रावड़ी कुंड है। उन सुवर्ण के कटोरान कौं धोये तहाँ कनक सागर भयौ है ऐसें ६ कुंड हैं। यात्रा के क्रम सों प्रदक्षिणा देत जाय। पहले १ कनक सागर, २ संकर्षण, ३ राम कुंड, ४ अड़वारो कुंड, ५ रावड़ी कुंड (छाक की ठौर) ६ सहस्र (विमल) कुंड कृष्ण कौ बछरान में दर्शन यहाँ सों उत्तर वायव्य दो कोस पूछरी गाम है। आन्योर जानौ होय तो नहर २ जाय ढाई कोस अनुमान है।

आन्योर

यहाँ सदूपाँड़े के घर श्रीमहाप्रभू जी की बैठक है। ताके पास श्री गिर्राज में दही कटोरा कौ चिन्ह है। पद—गिर पै चढ़ गिर बरधर टेरैं। अहो भैया सुबल श्रीदामा लाओ गाय खिरक के

नेरैं। भई अवार छाक जो खायें कछुक धैया पियौ सवेरैं। परमानन्द प्रभू बैठ सिलान पै भोजन करत ग्वाल रहे घेरें। भा. द. अ' २०–२९ दाऊजी और ग्वाल सब दही, भात, फल जसुदाजी की भेजी छाक कौं यहाँ आरोगी। यहां दाऊजी के हस्त कौ चिन्ह हौ अब लोप हैगयौ है। यहाँ खड़ाउन कौ चिन्न है। यहाँ सों गाम भीतर दक्षिण में सिखिरदार दाऊजी कौ सुन्दर दर्शन है। ताके पास संकर्षण कुंड है। (वा० पु० म० म० १३ अ० २३ श्लो०) यहाँ काऊ की गौ हत्या दूर भई है। (ताके पास अन्नकूट इंद्र दमन लिखौ है) आगे पश्चिम गिर्राज के समीप १ पक्की तिवारी बनी है ताके पिछारी वाजनी सिला—यहाँ तिबारी में श्री राधिका जी ने गौरी पूजन कीनौ है। तब घड़ियाल के अभाव में याहि बजाई है। याके पूरब पास ही गौरी कुण्ड। ताके दक्षिण पास ही में।

गोबिन्द कुण्ड

है—इंद्र नें आपको गोविंदाभिषेक कीनौ, ता समय स्वर्ग गंगा कौ जल सुरभी गौ कौ चिन्नामृत करकैं यह कुण्ड भरौ है। गोविंद नाम सों इंद्र नें सम्बोधन कर, पूजन कीनों है। याते यही इंद्र दमन की ठौर होनी चाहिये। ताकों जतीपुरा में मानत है। यहाँ मानसीगंगा सों भी विशेष माहात्म्य (ग्रंथन में) पाये जांय हैं। जैसे–श्लोक—यात्राभिषक्तो भगवान्मधोना यदुबैरिणा। गोविंद कुण्डम् तज्जातं स्नान मात्रेण मोक्षदम् ॥ १ ॥ स्कंदपुराण कृष्ण खण्ड पुनः (रु. ना. ८० अ. ६० । ६१ श्लो०) तरैटी श्री गोवरधन की रहिये। तन पुलकत ब्रज रज में लोटत गोबिंद कुंड में न्हैये आदि बहुत प्रमाण है। कुंड के पूर्व ऊँचौ सिखिरदार गोविंद बिहारी कौ मंदिर में दर्शन ताके पूर्व ईशान विद्याधर कुंड (भा० द० २७ अ० २४ श्लो०) ताके नैऋत्य चतुरानागा

की समाधी लाल पत्थर कीं शिखिरदार बनी है जाके सामने दक्षिण गंधर्व तलाई गंधर्व वृक्ष। जा एक वृक्ष में छै वृक्ष हैं वाके पास दक्षिण गौघाट के बीच श्री गुसाईं जी की बैठक है पहले यही ठाकुर जी की बैठक ही यहाँ चतुरानागा के घर श्रीनाथ जी नित्य पधारत हे ताके बांये हाथ कौं चतुरानागा की कुटी में यहाँ श्रीनाथ जी कौ दर्शन गौड़िया वैष्णव सेवा करै हैं। याके पिछारी श्रीगिर्राज की तरैटी गोविंद घाटी या रस्ता गोपी जतीपुरा सों आतीं जातीं तब गोविंद रोकते। यहाँ मुकट (टोपी) कौ चिन्ह है वाके ऊपर चढ़ कैं पेड़ के नीचे २४ छड़ीन कौ चिन्ह है याते ऊपर बड़ी सिला में हस्ताक्षर कौ चिन्ह है आगे ऊपर चढ़कैं जतीपुरा की ओर उतार है तहाँ बीच रस्ता में सात वर्ष के साँवरे के चर्ण कौ चिन्ह है। पीछै लौटकै तरैटी सों पूछरी की ओर पास ही एक सिला में गोरधननाथ कौं श्री राधिका जी दही देत हैं। महादेव जी चर्ण के नीचे बैल पै बैठे हैं। मनसुखा दूर ठाड़ौ है ऐसौ दृश्य दूर सों दीखत है। यह चिन्ह अकृतिम है। यहाँ सों आगे दक्षिण जहाँ श्री गिर्राज को विशेष उचाउ है तहाँ याही बाजू १४ कन्दरा हैं। (भा० द० २० अ० २७। २८ श्लो०) वर्षा समय आप उनमें छिप कैं गौ देखौ करते पुनः गोवर धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास करत पिय प्यारी। आदि पद हैं। (विशेष विछुआवन लीला में) यहाँ श्री गुसाईं जी नें कंदरा प्रवेश कर लीला विस्तारी है (श्री महाप्रभू जी नें काशी में लीला विस्तारी हैं) इनके ऊपर श्री गिर्राज की सिलान पै बूँदन के चिन्ह हैं। ताके आगे थोरी दूर ही।

पूछरी गाम

(पाराशरे) मंत्र–ओं ग्लौं अप्सरा बनाधिपाय बामनाय नमः।

(पंच दशाक्षरो) अस्य मंत्रस्य दीर्घतमा ऋषिः अप्सरा बनाधियो वामनो देवता अष्टीच्छंदः ममानेक जल क्रीणा दर्शनार्थे जपे विनियोगः (न्यास पूर्ववत)।

ध्यानः—ध्यायेद्वामनरूपाख्यमणुरूपं महत्कृतं अग्रे यच्छ कृतायात्रा सांगएव समर्पितः। इति।

यहाँ श्री गिरीज की (पूँछ) आखिरी है। यहाँ एक छतरी में ऊँचे पै कृष्ण बलदेव कौ सुन्दर दर्शन है। ताके आगें वायव्य पूछरी के लौठा कौ प्रसिद्ध दर्शन है। (यह भी ग्वाल है) यहाँ ते उत्तर ईशान आवै पूर्व नवल कुण्ड, पश्चिम अप्सराकुण्ड, यहां अप्सरान नें गोविंदाभिषेक के समय नृत्य कीनों हो। भा० द० ७ अ०२४श्लो०।दोनों बराबर हैं यहाँ अप्सरा विहारीकौ दर्शनहै राधा कृष्ण कौ दर्शन है। अप्सरा कुण्ड कौ दाहिनों देकै रस्ता गिरीज जी के पास रामदास जी की गुफा कौं जाय है। यहाँ ते आगे जतीपुरा डेरान की जगह पौन मील है। तथा पूछरी के लौठा सों एक पगडंडी दक्षिण नैऋत्य है। तासों दो तीन खेत दूर हींसन के वृक्षन में किशनदास भूत को कूआ है। याने गुसांईजी कों अपनो परिचय करायौ तब आपने मथुरा ध्रुवघाट पै पिण्ड कर याकी गति करी है सो कथा वार्ताजी की पुस्तक में है। याही पगडंडी सों आगे श्यामढाक जानों चाहिये। (परन्तु यात्रा जतीपुरा सों जात है)

श्यामढाक

पूछरी सों दो मील है। यहां गौ चरायवे की ठौर है। यहाँ श्याम तमाल के नीचे श्री ठाकुर जी बैठक छाक आरोगवे की जगै है। पद—श्यामढाक तर छाक अरोगत। लैकर थारी ठाड़ी है ललिता ॥१॥ भोजन व्यंजन केलके पातन चहुँधा चपलासी ब्रज बनिता ॥ २ ॥ निरखत अम्बुज मोहन को मुख लोचन भये

मानों मृग के से चकृता ॥३॥ श्रीविट्ठल गिरधरन आरोगत निकट बहत कालिन्द्री सरिता ॥ ४ ॥ यहाँ श्रीजी झूला झूले हैं। यहां श्रीनाथ जी कौ जलघड़ा है। यहाँ सों जतीपुरा ३ मील उत्तर है। रस्ता सों पूछरी के लौठा कौं दाहिनौं छोड़कें आगे एक तलैया जहां सात कदम्बन के नीचे सात गौअन की बैठक है। यहाँ एक कूआ भी है लौठा के पास पाषाण सिला में इन बैठकन कौ लेख लिख्यौ है आगें ईशान श्रीगिर्राज की तरहटी में श्री बालकृष्ण जी कौ मन्दिर ताके वायव्य सुरभी कुण्ड है सामने पूरब श्रीगिर्राजजी में रत्न सिंहासन इंद्रदमन की ठौर है (सो शिखिर पर होनी चाहिये जाकौ जल गोविंद कुण्ड में जाय सकै) अस्तुः यहां इंद्र शरणागत आयौ है। स्वर्गते सुरभी (कामधेनु) और इंद्रलोक सों इंद्र, आयकैं दोनों मिल गोविंदाभिषेक कीनौ है। सुरभी ने अपने दूध ते स्नान करायौ, ऐरावत (हाथी) अपनी सूँड़ में स्वर्गगङ्गा जल भरकैं लायौ तासों स्नान करायौ है। गोविंद नाम धरौ है। (भा० द० २७ अ० २२। २३ श्लो०) सर्व देवतानें पुष्प बरसाये हैं ॥ २४ ॥ गंधर्वन नें गान करौ है ॥ २४ ॥ अपसरानें नृत्य करौ है ॥ २४ ॥ वहाँ सुरभी गौ के चरण कौ चिन्ह हैं। उच्चैश्रवा (घोड़ा) के चरण कौ चिन्ह है। ताके नीचे ऐरावत हाथी के चरण कौ चिन्ह है। तथा कृष्ण चरण कौ चिन्ह है। दाऊजी के हस्त कौ चिन्ह है। ताके ऊपर।

ढूका बलदेव

ढूकाबलदेवजी की बैठक पक्की मढ़ी में है तहाँ सों आप बछरा गौअन कों ढूँक २ कैं देखत है। पुनः गोविंदाभिषेक कौं भी ढूँक २ कैं देखौ है। याकौ बलदेव देवता है।

(ब्रह्मसंहितायाम्)ओं वांबल्देवाधिबनाधिपाय। कामधेनवे नमः (१८ अक्षर मंत्र)

अस्य मंत्रस्य शौनक ऋषि बलदेवाधिबनाधिपः कामधेनु देवता अनुष्टुप छंदः। मम गोधन वृद्धयर्थे जपेविनियोगः।

ध्यानं—ध्यायेन्मनोहरां देवीं कामधेनुं वर प्रदां बन यात्रा मयाकार्या सांग एव समर्थिता। इति। (यह मन्त्र सुरभी कुंड सों सम्बन्ध रखै है).

(सुरभी कुण्ड) जतीपुरा

डेरा परबे की जगह यहाँ ६-७ दिन यात्रा परै है। (बछ-गाम सों पूछरी हैकैं यहाँ मुकाम डारे। एक दिन आन्यौर गोविंद कुंड यहाँ सों है आवें। जैसे श्यामढाक, गुलाल कुंड आदि जॉय हैं) यहां सुरभी कुंड पै गौदान देय। अपने हाथन सामिग्री श्री गिर्राज कौं भोग धरावें, ब्राह्मण भोजन करावें। गौ दान, ब्राह्मण भोजन, दक्षिणा श्रीकृष्ण ने यहाँ (भा० द० २४ अ० २७ श्लो० में) करनौ कह्यौ है। कुनवाड़े के नाम की सामिग्री (दक्षिणा) श्री महाराज की सेवा में दे आवें। तपेली पधरामनी श्रद्धा-नुसार करै। नमस्कार करै, चर्णस्पर्श करै, भक्ति राखै। गुरु मन्त्र विशेष जपै। उत्तर जतीपुरा गाम के दगरे सों पहले दाहिने हाथ कौं भजन आश्रम कुटी है। ताके सामने पश्चिम वायें हाथ कौं ऐरावत (हाथी कौ) कुण्ड है। गोविन्द कदमखंडी यहाँ वर्षा बंद हैवे पै गोपिन मिल, जल अक्षत दही सों पूजा कर नन्दादिक गोप सब छाती सों छाती लगाय मिले हैं पुनः आशीर्वाद दीने हैं (भा० द० २५ अ० २९। ३०) (बाराह पु० २३ अ०) याकौं गोविंद स्वामी की कदम खण्डी भी कहैं हैं। यहाँ गोविंद स्वामीनें तपस्या करी ही, उनकौ समाधि-स्थान है उनकों गोविन्दनें ने यहां पै दर्शन दीनों है यहाँ गोविंद विहारी कौ दर्शन है यहाँ के कदम्ब बहुत नष्ट है गये। यहां ते पश्चिन ऊँचौ चढ़कैं वायव्य दाहिने हाथकौं उतर जाय दगरे में वहाँ हरजी ग्वाल की पोखर सुन्दर पक्की बनी है यहाँ

मीठौ कूआ है। ताकों दाहिनों देकैं दगरौ जतीपुरा गाम भीतर जाय हैं। मोती महल जो धर्मशाला है ताके (पश्चिम) पीछे रुद्र कुण्ड है ताके नैऋत्य कौने पै बूढ़े बाबू महादेव कौ मंदिर है (वर्षा समय आये हे) याकौ दाहिनों देकैं दगरौ पश्चिम जाय है १। मील गाँठौली ताके पहिले हीं गुलाल कुंड है। यहाँ होरी लीला होय है यहां राधा कृष्ण की सखीन नें गाँठ जोड़ कैं दोऊ नचाये हैं। तासों गांठौली कहैं हैं। कवित्त—एक दिना नंदलाल सखन संग फेंट गुलालन पोट भरैरी ॥ १ ॥ इत श्यामा सखियन संग सजी रँग केशर पुन २ घोट धरैरी ॥२॥ तमकीनों रङ्ग गुलाल घटा भरि अंक सखी कोऊ लोट परैरी ॥३॥ इत राधा गुपाल की गांठ बधी दृग घूँघट ओट सों चोट करैरी ॥४॥ यहाँ श्री ठाकुर जी की बैठक है। सोई श्री गुसाईं जी की बैठक है। यहाँ सों पीछौ मुकाम आवै। दूसरे दिना गाम कौ दाहिनों देकैं उत्तर बायव्य दगरे सों बाँये हाथ कों सूर्यकुण्ड है। याकों गाँम के सूकटा भी कहैं हैं (ये रुद्र कुण्ड सूर्य कुण्ड दोनों सूखे रहै हैं। इन्द्र कोप के समय वर्षा कौ जल सूर्य एवं रुद्र ने वा पखत शोषण कीनों हो) आगे उत्तर वायव्य—

बिछुआ बन (बिलास कुंज)

यहाँ श्री राधिका जी सखीन संग जल क्रीड़ा करत हीं। इनके संग श्री कृष्ण गोपी रूप सों (छिप कैं) जल क्रीड़ा करी है ता क्रीड़ा में राधिका जी कौ बिछुआ गिर गयौ सों बहुत ढूँड़ौ काऊ को नहीं पायौ तासों आपके चित्त को खेद भयौ। आप अन्तरयामी ताहि जानकैं बोले कि आपको जो बिछुआ ढूँड़ देउँ तौ आप कहा देउगी, (उत्तर) हे सखी जो मांगोगी सोई पाओगी हाँ, कहि बहुत से बिछुआ निकास कुण्ड सों बाहर धरदीने। ता

आश्चर्य कौं देख सखीजन चकृत हैगईं । आप अपने हाथन श्री किशोरी जी कौं बिछुआ पहरामन लगे, कोऊ छोटौ, कोऊ बड़ौ, याहि श्री राधिका जी जान गईं । अरी सखी अब तू माँग तोय कहा चहिये । आपनें हँसकैं रैन निवास माँगौ है । उत्तर——अरी सखी यानें तौ छल कीनौ है । यह सखी नांहि यह तौ छलिया है । ये कहि दोऊ मिले हैं । यहाँ राधाकृष्ण की बैठक है । तासों याहि बिलास कुञ्ज कहैं हैं । यहां सों उत्तर ईशान दगरे सों वही दान घाटी गोवरधन की जाहि पहिलें लिख चुके हैं यहाँ लीला कौं देख पीछों दक्षिण लौटकैं जान अजान (दो वृक्ष हैं) यहाँ रास-लीला होय है । पद—भई री में जान अजान भई) आदि । यहां सखी प्रभून की लीला कौं जानकैं भी अजान हैगई । आगें जती-पुरा ग्राम के भीतर दर्शन । श्री गिर्राज कौ मुखारविन्द यहाँ कुन-बाड़े के दर्शन में श्रीनाथ जी कों प्रत्यक्ष दर्शन होंय हैं । यहां दिन भर दूध चढ़ै है । देशी परदेशी सब ही चढ़ावैं हैं । याके सामने श्री महाप्रभूजी की बैठक है तासों उत्तर नाभि कौ चिन्ह ताके पास दंडौती सिला है । यहाँ श्री गिर्राज कौं दंडवत करै । ऊपर श्रीनाथ जी कौ पुरानों मन्दिर है यहीं पहलें विराजत हे यहां सों मेवाड़ उदयपुर राज में मीराबाई के संग पधारे हैं । यहाँ मन्दिर में एक गुफा है सो श्रीनाथ जी तक बतावै हैं । ता मन्दिर के बाहर उत्तर ऊँची जगह है । वहाँ श्रीनाथजीकौ प्रागट्य स्थान है आपके ऊपर नरो डोकरी की गौ दूधकों आपही छोड़ जाती नरो एक दिन गाय के पीछे पीछे आई कि देखौं मेरी गाय कौन दुहिलेत है । तब यहां भुजा कौ दर्शन करौ ताकौ ब्रज में बड़ौ हल्ला हैगयौ कछुक दिन भुजा की बड़ी मानता रही । पीछै श्रीनाथजी कौ प्राघट भयौ सं० १५३५ में ही श्री महाप्रभूजीकौ प्रागट्य भयौ है । सोई कृष्णा-वतार के लीलास्थल (श्रीनाथजी ने) महाप्रभू जी कौं बताये हैं

और जमुना जी तथा माथुर चतुर्वेद (चौबे) ब्राह्मणन कौं आपनें महात्म्य सुनायौ। जब ही उजागर चौबेजी कों साथ ले यात्रा करी हैं। ताही सों सब गोस्वामी बालक तथा अन्य वैष्णव इनही कौं सङ्ग लेकैं अब तक यात्रा करैं हैं। याके पास रस्ता ही में सिन्दूरी सिला है तथा माखन खायकैं उगरिया पौंछी है तिनकौ चिन्ह है तथा चर्ण कौ चिन्ह है। या मन्दिर के दक्षिण पिछारी हिण्डोला की ठौर है। आगे गाम के भीतर मथुरेशजी कौ दर्शन यहाँ श्री गोकुलनाथ जी की बैठक है। मदनमोहन जी कौ मन्दिर। चन्द्रमा जी कौ मन्दिर (नवनीतप्रियाजी कौ मन्दिर मथुरा गयौ बाद श्रीनाथ जी गयौ) बड़ौ मट्टूजी कौ मन्दिर है वामें मदनमोहन नन्द जसोदा दाऊजी चार दर्शन हैं। यहाँ सों डेरानकों जाय आगे पूर्व लिखे श्यामढाक सों यात्रा जायकैं पीछे आवै है।

(कुनबाड़े की लीला)

भा० द० २५ अ० ४। इंद्र नाम कौ यज्ञ सब ब्रजवासी हमेशा करत हे। २४ अ० इन्द्र कौ नवीन अन्न भोग धर कैं पीछै नवीन अन्न खाते सो सामिग्री बनती देख कैं श्री कृष्ण नें नन्द जी सों पूछी, सो सब यज्ञ की कथा कही। तव कृष्ण बोले या सामिग्री सों गौ ब्राह्मण श्रीगिर्राज पर्वत कौ यज्ञ करों। २५॥ क्षीर मूँग, पूआ, पूरी, गूझा, दूध आदि सामिग्री वेद विधि ब्राह्मणन सों हवन कराय कै तिन्हें गौदान भोजन दक्षिणा देऊ ॥ २७॥ चाण्डाल शूद्रादि पतितन कौं यथा योग्य भोजन देऊ गौअन कों घास देकैं गोवरधन पर्वत कों बलि देऊ ॥ २८॥ ता प्रसाद को खाय वस्त्र आभूषण पहिर गौ ब्राह्मण अग्नि गिरिराज पर्वत की प्रदक्षिणा देऊ॥ २९॥ हे पिता यह मेरो मत है। अच्छौ लगे तौ करौ। यह बात सुन समस्त ब्रजवासी नन्दादि उपरोक्त कहे

प्रमाण पूजन करन लगे ॥ ३२–३३ ॥ आप एक रूप सों आरोगत हैं। पुनः आप ही नमस्कार कर कहत हैं। देखो यह गोवरधन (पर्वत) रूप धरि कें अनुग्रह करै हैं । जो याकी निन्दा करै ताकूँ सर्पादिक हैकैं मारै हैं। हमारो भलो, और गौअन को सुख होय ये कहि सब नमस्कार कर प्रदक्षिणा देकैं नन्दगाम लौटन लगे (अ० ३५) तब इन्द्र या अपमान को सहन नहीं कर सकौ सांवर्तक नाम मेघन सों प्रलय के समान बिजली हवा गर्जना कर जल वर्षावन लग्यो । ब्रजवासी श्रीकृष्ण की शरण पुकारे तब आप इन्द्र कोप कों जान गये श्रीगिर्राज उठाय सब ब्रजवासी गढ़ेला में बुलाय लीने गौ बच्छ मनुष्य ठाड़े रहें ७ दिन बाद वर्षा बन्द भई तब सब निकसे गिर्राज धरिदीनो है जानें, ऐसे श्रीकृष्ण सों छाती लगाय मिले आशीर्बाद दीनों गोपिन नें दही चामर जल सों पूजन करो अपने २ गाढ़ान में बैठ घरन कौं गये। आगे गोविंदाभिषेक लिख चुके हैं। ताही सों अन्नकूट दिवाली पीछे धरै हैं । सो यही कुनवाड़ो है । गुलालकुण्ड गांठोली कौं दाहिनों देकें पश्चिम पक्की सड़क सों डेढ़ कोस अनुमान जाय । आगे बम्बा उत्तर दक्षिण आढ़ो मिलै है। ता बंबा के पुलपार सों दाहिने हाथ उत्तर पटरी सों अनुमान २॥ मील जाय । आगें बांये हाथ को पश्चिम खेतन में उतर कैं दो फरलांग अनुमान वृक्षावली में—

टोड़को घनौं—

–है यहां कृष्णकुण्ड है । मैया मोय भावे टोड़ को घनौं आदि पद यहीं कौ है। यहां पै श्रीनाथजी बाबा छिपे हैं (और'गजेब कौं दर्शन नहीं देवे के कारण ऐसी बार्ता सुनी है) यहां सों दक्षिण नैऋत्य एक रस्ता बैजगाम के पास आवै है । सड़क ते बांये हाथ कौं सूर्य कुण्ड है ताके आगे गाम के पहले सड़कते दाहिने हाथ कौं उत्तर कच्चौ रेवती कुण्ड है ।

बैज (बहैज) गाम ।

सड़क सों दक्षिण बांये हाथ कौं दाऊजी कौ दर्शन ताके पिछारी बलभद्रकुण्ड (पक्कौ घाट) है यह जतीपुरा सों ८ मील सीधो, पुनः टोड़ के घने होत ११—१२ मील अनुमान है । यहां सों दीग मुकाम की जगह ३ मील है ।

दीग (दीर्घपुर)

श्लोक—गोवर्द्धनै दीर्घपुरै मथुरायां महावने नन्दग्रामे बृहत्सानौं कार्या राजस्थिति स्वया । स्कन्द पुराणाऽन्तरगत भागवत मास पारायण महात्म कथा में बज्रनाभ जी कौं राज्य दीनौ है । (ब्रज की सरहद के गाम बताये हैं) यह ब्रज में हैं । लीला स्थल नहीं है । यहां गोपाल लाल बाबा, टीकेत बाबा आदि तपेली आरोगत हे । किले के पश्चिम यहाँ रूप सागर (बलभद्र कुण्ड) है ताके उत्तर दाऊजी कौ दर्शन है । ताके पश्चिम भुवन कौ बड़ो द्वार है । ताके दाहिने साक्षी गोपाल कौ दर्शन हैं । भीतर भवन में हजारों फुहारे हैं । दक्षिण इमारत की छत्त पै देखवे योग्य तलाब है । पश्चिम कमरा में दिल्ली लूट की नुमायशी चीज रखी हैं । कमरा के सामने दो सिंहासन सफेद, काले, हिंडोरे के पास हैं । ये शाही सिंहासन बिक्रमाजीतके बनवाये भये हैं । कमराके पिछारी कृष्ण कुण्ड नाम कौ तालाब है । ये दोनों कुन्ड कृष्ण बलदेव के नाम सों बनाए हैं । ब्रज में गौ के खुर की बराबर भी जल भरो होय वह तीर्थ के समान है । बर्षा के जलसों गढ़ेला कहीं भरो होय तामें प्रयत्न करिके जरूर न्हाय (वा० पु० म० म० ७ अ० २५ । २६ २७ श्लोक) अथवा आचमन करै । भादों बदी अमावश्या कौ यहां बड़ो भारी मेला इकट्ठो होय है । या दिन यहां रामदल की यात्रा

(१५ दिन वारी) आवै है। देहात कौ आदमी बहुत आवै है। ता दिन ये फुहारे चलैं हैं। यात्रा कुण्ड के पास सड़क पै १ दिन मुकाम करै है। लोहा,घी,नाजकौ व्यापार यहां होय है। गाम बहुत बड़ौ है यहाँ सों वायव्य कामा दरवाजौ है। पक्की सड़क कामा तक गई है दरवाजे के पास दाहिने हाथ कौं दीर्घ सरोवर पक्कौ (बहुत लम्बौ चौड़ौ) है यहाँ बगीची, शिवाले सुन्दर बने हैं। ग्राम निवासी यहाँ (जादा) आवैं हैं। या सड़क सों ३ मील दिदावली गाम है। याके आगे पास ही बांये हाथ कों दगरौ है या रस्ता सों खोगाम २ मील है। परन्तु यात्रा दो मील याही सड़क सों (सुदामापुरी जाय है)।

परमदरों गाम

(परमदरों और शेषसाई भगवान के नासा छिद्र हैं)

(गुरुपनिषदमंत्र) ओं ऐं परमानन्दबनाधिपायादिबद्रये नमः (१६अक्षरमंत्र)अस्य मंत्रस्य शौनक ऋषिःपरमान्दबनाधिपादिवद्री देवता वृहतीच्छन्दः। ममानेकाल्हाद दर्शनार्थे जपे विनि योगः।

(न्यासपूर्ववत)ध्यानं-आदि बद्री सरूपं त्वां परमानन्दवर्द्धनं ध्यायेद्वनाधिपं देवं बन यात्रा वर प्रदम् ॥ इति ॥

यहाँ कृष्ण कुण्ड गाम के उत्तर में है,ताके उत्तर, पारपै सुदामा जी की झोंपड़ी(बैठक)है ताके पश्चिम पारपै बट वृक्ष के पास साक्षी गोपाल कौ दर्शन बगीची में हैं। यहाँ सो पश्चिम दगरौ फांदकै (पुलिया के पास है कैं दो मील—

आदि बद्री अलख गंगा

गंगाजी के पश्चिम सिखिरदार बद्री नारायण कौ दर्शन है। यहाँ गाँठ जोड़ कैं स्नान करैं गौ निष्क्रय दक्षिणा देय (अथवा

गौ देय) गंगाजी कों बाँयौ देकैं अग्निकोण में दगरौ है । ताके सामने गुहानो गाम दीखै है । यहां श्यामबिहारी कौ दर्शन श्याम तलाई है । गाम के नैऋत्य में (गाम में न जानौ होय तौ कछू आगे ही दगरौ दक्षिण जाय है । अलख गंगा सों चार मील अनुमान) ।

खोगाम

यहाँ सों गाम को बांयौ देकैं पश्चिम एक छोटी पहाड़ी दीखै है या कों बांयों देकैं पश्चिम सीधौ बड़े पहाड़ के नीचे करमुका गाम अनुमान दो मील है । ताकौ दाहिनें छोड़कैं नैऋत्य में करमुका पहाड़ के कौने सों चढ़कैं (तथा एक पहाड़ बाँये हाथ कौं भी है) इन दोनोंन के बीच में एक (घाटी) रस्ता है वा रस्ता सों चढ़ कर कैं दक्षिण उतर जाय। जब या करमुका के पहाड़ कौ आखीर कौनों आवै ताकौ दाहिनों देकै पश्चिम नैऋत्य एक पहाड़ और है ताके नीचै अलीपुर गाम दीखै है । ताके पहलें ही एक गोपाल कुंड है । यहाँ वृक्षावली भी है । वा अलीपुर के पहाड़ कौं दाहिनो देकैं तथा एक पहाड बांये हाथ कौं और भी है । इनके बीच में हैकै पश्चिम सों नैऋत्य कौं घूम जाय (ठेठ करमुका सों यहाँ चारों ओर पहाड़ हैं) ये गाम मेवातिन की बस्ती के हैं (थोरे से वनिया, कुम्हार भी हैं) आगे दाहिने हाथ कों गौरी कुंड है । वांये हांथ कौं एक कोठरी है । याकी पत्थर की चौखट बौद्ध जमाने की है यामें गौरी माया देवी कौ दर्शन है ताके बांये हाथ कौं ऊँचौ चढ़ कैं बूढ़े(बड़े) बद्री नारायण कौ दर्शन है । जिनके दाहिनी ओर नर रूप (अर्जुन) बांये उद्धवजी इनके पास गौर वर्ण के राधाकृष्ण कौ सुन्दर दर्शन हैं । (भागवत-एकादश स्कंध में उद्धव कथा है) अर्जुन के पास केदारनाथ,

महादेव, पार्वती गनेश जी हैं । बिलोद के पहाड़ पै इनकी (अकृत्रिम) मूर्ति बूढ़े केदार करकैं विख्यात है । (ताकौ रस्ता आगे लिखौ है) बद्रीनारायण के पिछारी पांचों पांडवन की खंडित मूर्ति हैं। मन्दिर के नीचे तपत कुंड है । यहां रिब ऋषि नें तपस्या कर श्री राधाकृष्ण कौ दर्शन कियो है। जब ऋषि ने दण्डवत प्रणाम करी ताही समय सब शरीर कौ जल है गयो तासो यह तपय कुंड है । या के आचमन करेसों जन्माजन्म के पाप दूर होंय हैं। तथा राधिका जी के महारास में जब पग दूखे हते तब श्री कृष्ण कंधा पै बैठायबे कों भये श्री राधिकाजी जब बैठन लगी तब ही आप अन्तर्ध्यान हैगये । तासमय बद्री नाथ कौं रूप धर कें आन बिराजे और नन्दबाबा कौं या स्वरूप के दर्शन कराये हैं । यह कथा भ० द० ३० अ० ३८ श्लोक में है ।

यहां अक्षय तृतीया कौं मेला जुरै है । हमेशा ११-१२ बजे दुपहर भोग धराय कैं सैन होय है । पीछे ३॥ बजे पै दर्शन खुलैं हैं यहां बेलपत्र कदम्ब आदि की सुन्दर वृक्षावली है । यह गन्धमाल्य पर्वत है । याके पूर्व पश्चिम के पहाड़ जय विजय नाम सों प्रसिद्ध हैं । याके वायव्य नारदकुंड ताके वायव्य उद्धव कुंड है । आगे दक्षिण नैऋत्य सुगन्धिनी सिला है । अनुमान यह रस्ता १॥ कोस है । सीधौ रस्ता पश्चिम अनुमान पांच खेत सुगन्धिनी शिला (याही कौं हर की पैरी (हरद्वार) कहैं हैं ऐसो लेख पाषाण सिला सं० १८८६ कौ भी देखो है । यहां एक नदी (पहाड़ी नाला) अग्निकोण सों आई है वही अलखनन्दा है । तथा एक नदी नैऋत्य सों आई है वाय भागीरथी कहैं हैं । ताके आगे एक मील दक्षिण (जंगल) में लक्ष्मण झूला है । तासों ४ मील आगे दक्षिण गंगोत्री जमुनोत्री दो पहाड़ हैं इनमें सों चौमासे में पानी गिरैं है बाद नहीं (यहां मैं नहीं गयौ या सों रस्ता के निशान ठीक नहीं

लिखैं हैं) इनको देखकैं याही रस्ता सों लौटकें बद्रीनारायण आवों यहां सों कामबन जायबे कौं तीन रस्ता हैं । नं० १— बूढ़े बद्री सों २॥ मील अलीपुर हैकैं पसोवो, वहां से २ मील सबरानों, वहां सो २ मील छिछरबारी, वहां से २ मील कामबन, कुल ८॥ मील है । रस्ता नं०२ ये रस्ता बूढ़े केदारनाथ हैकैं कामबन को जाय है । बूढ़े बद्री सों एक मील अलीपुर, वहां सों दो मील पसोवो, वहां सों एक मील बरौली वहां सों दो मील बिलोद (पहाड़ चढ़ाई १ मील है) ऊपर बूढ़े केदार कौ दर्शन है यह शिव की पिण्डी स्वयं प्रघट भई ऐसौ विख्यात है) बिलोद सों आध मील बादली, तासों आध मील भूड़ाको तासों तीन मील कामवन, कुल ८ मील । रस्ता नं० ३–बद्री नाथ सों खोगाम लौट आवे (जा रस्ता सों जाय वाही रस्ता सों) खो गामसों करीको नगरा हैकैं पसोवो गाम यहां सों ऊपर लिखे प्रमाण बिलोद के पहाड़ हैकैं (कामबन चरण पहाड़ी पास गया कुंड हैकैं विमल कुंड डेरा करै) परन्तु यात्रा खोगाम सों उत्तर ४मील—

सेऊको गाम ।

यहां नैमसरोवर है । दोहा—प्यारे पलन बिसार मोहि, यह बह मांगों देउ । प्रीति प्रघट रस जात है, नैन सरोवर सेउ ॥ यहां सड़क के उत्तर सामने सिहोरा गाम है या सड़क सों पश्चिम पास ही में—

घाटो (आनन्दाद्री)

वास्तविक आनन्द को देनवारो है ।

यहां श्री देवकीनन्दन जी महाराज के बगीचा में बैठक जी

आदि बहुत मकान औषधालय भी हैं। यहां सों कामबन ६ मील, तथा दीग ८ मील है। याके आगें—

इन्द्रोली गाम—

(यह भगवान की पीठ है।)

—है ताके सामने दाहिने हाथ कों एक पोखरा नयो बनो है। ताके वायव्य दो खेत सड़क सों दाहिने इन्द्रकूप है ताके आगें इन्द्रेश्वर महादेव है, इन्द्र ने यहां पूजन कर (श्रीगिर्राज पै) चढ़ाई करी ही। आगे ३ मील कामबन, डेरा तम्बू १ मील याही ओर विमल कुण्ड के पास परै है।

कामबन (काम्य[क]बन)

(यह भगवान की ठोड़ी है)

औं क्लीं काम्यबनाधिपतये गोपीनाथाय नमः (अस्य-मन्त्रस्य नारद ऋषि काम्यबनाधिप गोपीनाथो देवताः गायत्री च्छन्दः मम काम्य फल प्राप्तये जपे विनियोगः

ध्यानं—ध्यायेत् काम्यबनाधीशं गोपीनाथं महाप्रभुम्। क्रोश सप्त प्रमाणेन सांग यात्रा समर्थिता। इति।

श्लोक—ततकाम्यबनं नाम पंचमं परिकीर्तितम्। बहुतीर्थान्वितं यत्र गत्वास्याद्विष्णुलोक भाक्॥ ९॥ यत्तत्र विमलं कुण्डं सर्ब तीर्थोत्तमोत्तमम्। तत्रस्नातो नरोभद्रे वैष्णवं लभते पदम् १० वृ० ना० पु० ७९ अ०।

ब्रज में सब तीर्थ (चातुर्मास यहीं निवास करैं हैं) आये हैं जब पुष्कर राज नहीं आये तब श्रीकृष्णने योगमाया कौ स्मरण कीनौं है। तबही पृथ्वी में सों या जल कौ प्रघट भयौ ता जल में सोंवड़ी सुन्दर (बिमल) स्त्री प्रघट भई ता संग आपने बिमल कैं

जल क्रीड़ा करी और बरदान दीनों है। किंतू आजसों विमला देवी हैकै यहाँ पुजैगी और तेरे नाम सों ही यह विमल कुंड रहैगौ। जो प्राणी या कुंड में स्नान करेंगे उनकौं सातवार पुष्कर स्नान कौ फल होंयगो यह मैंने आज ही सों सर्व तीर्थन कौं राजा (गुरू) कीनो है। तासों याकौं तीर्थराज हू कहैं हैं। (दूसरी कथा) चम्पक नाम नगरी (सिन्ध देश में) विमल नाम कौ राजा हो वाकैं छै हजार स्त्री बांझ ही वानै पुत्र के लिये १०० यज्ञ करे यज्ञ में याज्ञ वल्क ऋषि वहाँ आये विनते राजा ने पुत्र की इच्छा प्रगट करी तब ऋषि ने राजा ते कही कि तेरे या जन्म में पुत्र नही है हजार पुत्री होंगी उनकौ तू कृष्ण के संग बिवाह कर दीजो याते तेरी गती है जायगी। सो ये अयोध्या वासनी कन्या (जिननेंरामचन्द्र जो कौं पती रूप में चाहो और विनने कृष्णावतार में इच्छा पूरी कर कौ वर दान दियो) इनते कृष्ण ने विवाह कर काम वन राखदीनी रास के समय इनकौ स्वेद (पसीना) गिरौ जाते विमल कुंड भयो है याकी कथा महात्य ग० सं० मा० खं० अ० ५ तथा ७ में है। ता पीछें नन्दादिक सब गोप गोपीन कौं आपने यह महात्म्य सुनाय कैं तीर्थराज स्नान कराय, विमलादेवी को पूजन करायो है सो नैऋत्यकौण में दर्शन है। आगें सड़क के पार पास ही पश्चिम में मकसूदन कुण्ड है याके दक्षिण पास ही जसुमत गोपी को खेरो (एक ऊँचोसो टीलो है) तहां जसुमती सीतला कौ दर्शन है तथा जसोदाकुण्ड है। यहाँ जसोदाजी नें पूजन कर श्रीमकसूदन भगवान कौं छाक आरोगाई है। ताके आगे पश्चिम लंका पलंका दो मिले भये कुण्ड हैं। इनके बीच में श्वेतबन्ध (पत्थरन-की दीवारसी) है। श्लोक एवं विहारै कौमारैः कौमारंजह तुर्व्रजे। निलायनैः (आंख मिचौनी) सेतुबन्धैर्कटोत्लवनादिभि ॥ ५७ ॥ भागवत द० अ० ११ ऐसी लीला यहाँ भई ही। यहाँ हनूमान जी

कौ दर्शन है ताके पास ही पश्चिम में छोटी सी छत्री है। तामें श्रीरामेश्वर महादेव कौ दर्शन है नन्दादिक गोप गोपीनकौं यहाँ प्रथम दर्शन करायो है। यहाँ रामेश्वर के दर्शन कौ फल प्राप्त होय है ताके उत्तर दाहिने हाथ कौं चक्रतीर्थ खेत में निशान मात्र है। यहाँ आपने चक्र कों आज्ञा दीनी ही कि जो साधन चहिये सो देनों ओर इन ग्वालन की रक्षा करनों मैं खेल (लीला) करत हों। आगें पश्चिम नैऋत्य कछु दूर चरण पहाड़ी की ओर जाय कैं लुक लुक कुंड :—(यह भगवान की गुदांग है) (आंगिरस संहितायां) ओं खौं क्षिपनक प्रतिबनाधिपतये बालकृष्णाय नमः (२० अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य वृक्षऋषिर्बालकृष्णो देवता अनुष्टुप छन्दः। ममसकलप्रभुत्वसिद्धर्थे जपे विनियोगः (न्यास पूर्ववत) ध्यानं:—ध्यायेत् क्षिपनकाधीश बालकृष्णं मनोहरं बनयात्रा गिरेस्तीरे सांग एव समर्थिता। इति। तहाँ बर के पेड़ के नीचे बांये हाथ कौ। आँख मिचौनी खेल कीनों है (लुक लुक छिप जाना) यहां एक गुफा(कन्दरा)ही सो मट्टी के भीतर पापरी के वृक्ष के पास ढक रही है ता गुफा में श्रीकृष्ण प्रवेश कर चर्ण पहाड़ी ऊपर (गुफासों) प्रघट भये हैं। तहां एक पगसों ठाड़े हैकैं वैणुनाद कीनों है ताकों सुन ग्वाल चकृत हैकैं ढूँढ़न लगे हैं सो आपने वैणुनाद बन्द करदीनो है। पीछे फेर वैणुनाद, वैणुकूप पर कीनों है तहां ग्वालननै आनकैं दर्शन करे तब सबने बड़ो आश्चर्य करौ है। अभी तो शब्द ऊपर मालूम भयो हो यह कहा बात है तब श्री कृष्ण ग्वालन कौ संगले गुफा सौं प्रवेश कर पुनः ऊपर तक गुफा दिखाय, लौटकैं पीछै आये।

लुकलुक कुण्ड सों पश्चिम वायव्यमें दो पीपर के वृक्ष है इनके बीच में बड़ो कुंड हो अब यहाँ खेत है गये हैं। एक पीपर की जड़ के

पास एक खांड़ौ है वामें कभू कभू जल मिलै है। यहां जल क्रीड़ा में ग्वालन कौं पग के पदम कौ दर्शन भयौ है। तासों याहि पदम कुण्ड कहैं हैं। ताके पास नैऋत्य में कछू ऊँची जगह है। यहाँ बैठेकाँकर खेल खेले हैं। तहां कोठे कांकर कौं चिन्ह है। ताके आगे चरण पहाड़ी की पलकारी है। ताके उत्तर दाहिने हाथ कौ (पहले लिख चुके हैं) सो बैणुकूप है। ताके ऊपर चरण पहाड़ी है। छत्री में चरण कौ चिन्ह है। ताके दक्षिण में गुफा है। याते नीचे उतर कैं पक्की सड़क है। तासों दक्षिण नैऋत्यमें थोरी दूर ही सड़क के बांये हाथ कौं सप्त समुद्रिक रतनागर सागर कुण्ड हैकैं पीछे कामबन की ओर यहां लौट आवै आगे वायव्य उगराउली गाम है। ताके पहले ही बम्बा कौ पक्कौ फाटक है वहाँ पै महोदधि कुण्ड है (इन नामन के समुद्र हैं तिनके स्नान कौ यहां फल है।) यहाँ नन्दादिक गोपन ने समुद्र यात्रा करी है। आगे उगराउली सों वायव्य (पहाड़ की ओर) खेत में नन्दकूप नन्दबट जहाँ नन्दजी बैठते हे। यहां सों पूरव सड़क पै दो भीत (दीवार) हैं दाहिनी भींत के सहारे श्री ललिताजी की ज्ञान (बावरी) वापिका है यहाँ ललिताजी ने श्रीकृष्ण कों पूर्ण पुरुषोत्तम निश्चय कर सखीन कों ज्ञान करायो हो। ताके आगे पास ही बांये हाथ कौं मोर कुण्ड है। यहाँ मोरन के संग आप खेलत हे। ताके आगे पास ही दाहिने हाथ कौं मनसादेवी (इच्छाशक्ति रास रचियता योगमाया) कौ दर्शन है भा० द० २९ अ० १ श्लोक। मन्दिर के दक्षिण एक तिवारी है ताके आगे चौतरा पै दो बुर्जी हैं। यहीं देवी कुण्ड है (अब सड़क बनबे सों यामें जल नहीं आवै है) आगे गाही सड़क सौं दीग दरवाजे की ओर थोरी दूर जाय वहाँ दक्षिण में दाहिने हाथ कों गया कुण्ड है ताके पूरव गजाधर भगवान कौ दर्शन है ताके दक्षिणमें काशी कुण्ड, ताके दक्षिण प्रयाग कुण्ड है।

यहाँ गया,काशी,प्रयाग त्रिवेणी भगवानकौ होट है दूसरौ होट सकीतरा में लिख आये हैं। इन तीर्थनकौ जो माहात्म्य है सो माहात्म्य यहांकौ है। पीछे लौटकैं गया कुन्ड सों उत्तरमें गाम भीतर जायवे कौ रस्ता है ये रस्ता पूरवमें हैकैं पश्चिम फिर उत्तर जाय है। बांये हाथ कौं बड़ौ सुन्दर श्री गोपीनाथ जी कौ मन्दिर है। ता मन्दिर में तीन मन्दिर हैं। बीच के मन्दिर में गोपीनाथ जी दानिने श्री राधिकाजी बांये श्री ललिता जी बिराजै है। दूसरे में दाहिनी ओर मदनमोहन जी तथा तीसरेमें बांयीं ओर जगन्नाथ जी बिराजै है। ताके आगे पूरव में एक ऊँचौ गढ़ी के समान टेकरा है। तहाँ चढ़कैं चौरासी खम्बा (थामला) नाम कौ प्राचीन स्थल है। जाकौ फाटक पूर्व मुखी है। खम्भन के ऊपर जंजोर में घंटा के चिन्ह हैं। द्वार में घुसते ही दाहिने हाथ कौ दो तीन गज अनुमान भींत में पृथ्वी सों एक हाथ ऊँची एक फुट चौड़ी सवा डेढ़ गज लम्बी एक शिला है। ताके सिरे पै एक फूल कौ चिन्ह है। तामें विस्तार सों लेख है। वो भाषा बांचवे में नहीं आवै है। और द्वार के सामने पश्चिम भीत में एक वड़ौ आरौ। ताकी महराव में कछू अरबी के से अक्षरनमें लेख है। या जगह छटी पुजी कहैं हैं यह बात विख्यात भी है। ताके पास वायव्यमें ऊँची तिदरी जाको एक रस्ता उत्तर है उत्तर भींत के सहारे२ पूर्व फाटक तक रस्ता बनौ है चारों ओर सों पटैमा बीच खुलासा है। सो मेरे विचार में यज्ञ शाला है, तिदरी जनानी बैठक है, सिंहासन प्रधान देव कौ है। बीच में हवनकुण्ड कौ चिन्ह है चारों ओर ब्राह्मणन के बैठवे कौ (पटैमा) स्थान (अथवा कचहरी) है। आगें पूर्व में चलकैं। दाहिने हाथ कौं मदनमोहन जी कौ मन्दिर है। आगें एक वड़ौ द्वार पूर्व में कामा कौ बजार कछू दूर तक है। यह रस्ता चन्द्रमा जी के मन्दिर कौं दक्षिण में घूम जाय है। रस्ता नं० २—बांये हाथ कौ उत्तर में है भोजनथारी कूँ जाय है। परन्तु यहाँ ते

दाहिने हाथ दक्षिण कौं रस्ता नं० २—गली में घुसकैं बांये हाथ कौं पूरब मुर जाय। आगें जायकैं बांये हाथ कौं गली में चित्रगुप्त धर्मराज कौ दर्शन है। ये चरण पहाड़ी के वैणुनाद कौं सुनकै धर्म लोक सों श्रीकृष्ण के दर्शन कौं यहां आये हैं। आगें दक्षिण हाथ कौं गोविन्दजी कौ दर्शन है। वृन्दादेवी कौ दर्शन है। यहीं नारद, नारदी वनकैं आये हे। विशेष कुसुम सरोवर में लिख चुके हैं।

दोहा—बीस कोस वृन्दा विपिन, पिय प्यारी को धाम।
पशु पक्षी अमरा लया, सुमरत राधा नाम॥

यह बीस कोस में तुलसी (बृन्दा) को बन अब हो। कहूँ कहूँ चिन्ह मात्र हैं। जहां वृन्दादेवी सोई मुख्य वृन्दावन है। यहाँ सों आगें (पुष्टी मार्गीय) मदनमोहन जी कौ दर्शन (गो० श्री गोपाललाल जी महाराज कामबन बारेन कौ) ताके पास चन्द्रमा जी कौ दर्शन। (गो० श्री देवकीनन्दन जी महाराज कौ) ताके सामने दो सुन्दर धर्मशाला हैं। आगें दक्षिण दीग दरवाजौ है। ताके आगें बांये हाथ कौं इमली के पेड़ के नीचे एक १॥ गज ऊँची विचित्र ढङ्ग की शिला है ताकों इन्द्र की सहस्र भग कहैं हैं आगे बिमलकुण्ड पै डेरान कों जाय।

उपरोक्त कहे। नं० १ बाजार में हैकैं आखीर कौने पै गली नं० २—बजार सों उत्तर, ता मार्ग सों दाहिने अथवा सूधौ गाम बाहर निकस कैं श्वेत वाराह कौ छोटो सौ प्राचीन मन्दिर है। दर्शन कर दाहिने हाथ कौं सूर्य कुण्ड है यहाँ सूर्य ब्राह्मण भेष धर कैं आये हैं (सो कथा आगें लिखेंगे) या डगरे सों भोजनथारी कौं इक्का गाड़ी जाय हैं याके पास ही पँजाये कौ टेकरा है ताके

पास गोपाल कुण्ड है यहां श्री कृष्ण गौअन कौं जल पिवायवे पधारत हे । ताके पश्चिममें शीतलकुण्ड जाकी दोनों ओर पूरव दक्षिण पक्की घाट है । या पूर्व घाट ईशान कौने पै पथवारी शीतलादेवी कौ मन्दिर है । याने सूर्य कौ तप करौ हो याते सूर्य नें ब्राह्मण कौ रूप धरकैं वरदान दीनों कि तोकों श्री कृष्ण कौ दर्शन होयगौ पीछै शीतला नाम सों तेरी कलियुग में विशेष मानता होयगी । सो यह दर्शनकौं या पथ(रस्ता)में बैठगई ताते पथवारी नाम भयो याने सूर्य कौ तप करौ हो यासों याकौं (दाह) उष्णता भई सो याकों शीतल पदार्थ प्रिय भये हैं । ताते शीतला नाम भयो । जब श्री कृष्ण नें व्योमासुर कों मार्‌यौ ता लीला कौं नन्द जसोदा नें सुन श्रीकृष्ण सों पूछो जब श्री कृष्ण नें कही मैया मैंने वाय नहीं मारो वो मेरे मारवे को आयौ जब एक बुढ़िया नें मोय बचाय लीनौ और वाको मार डारौ वो भूखी बैठी है । जसोदा यह सुन बासी महेरी, दही और भात लै कृष्णके संग जायकै याकौं खवायो है (पूजन कीनों है) तब सो ब्रजमें बाल रक्षा कारण सब याकौं पूजैं हैं । तथा या कुन्ड के नैऋत्य कोंने पै ब्रह्माजी कौ दर्शन हो । (अब नहीं है) ये भोजन थारी की छाक लीला देख ललचाये हे । यहां ब्रह्मकुण्ड कौ चिन्ह मात्र पत्थर की पलकारी दीखैं हैं पृथ्वी में अट गयौ है ताके पास पश्चिममें श्री (राधा) कुन्ड है । यहां राधाजी ने दारुण तप करो है यहाँ स्नान, दान, जप करवे कौ महत्पुण्य है । नारद पु० ८० अ० ७१ । ७२ श्लो० । एक दिन यहां राधिका जी गोपिन संग पधारी हों गोपालकुण्ड पै श्रीकृष्ण आये हे तिनें देख कैं राधिका जी नें गोपिन कौं सैन देकैं जबरदस्ती पकर कैं बुलाये, होरी लीला करी, चोली सारी पहराय संग २ नृत्य गान कीनो तथा अङ्ग सों अङ्ग सबनने स्पर्श कर मन इच्छा पूर्ण करी । स्त्री बनायवे कौ कारण (लोकापवाद)कि कोऊ देख न लेय किराधिका पुरुष सङ्ग नाचत हैं

याते स्त्री बनाय छिपाय कें लीला करी है ।) कवित्त—फाग मचि-रह्यौ धूम धामसों श्रीकुन्ड मांहि, दोऊ दल बीच में किशोर औ किशोरी के ॥१॥ लघुता निहार निज ओर की कमर राधे होकर सरोस बाक बोली बरजोरी के ॥२॥ जौरकर धाऔ लाऔ अबही पकर कृष्ण सुनत सिधाँई छाँईं पास में पिछौरी के ॥३॥ गहिकें गोपाल ब्रजबालन मचायो सोर, होहो हरि भड़ुआ हजार दाव होरी के ॥४॥

श्रीकुण्ड

(बृहन्नारदीयेः)

ओं ह्रौं श्रीकुण्डाधिबनाधिपतये राधावल्लभाय स्वाहा ।

(१९ अक्षर मन्त्र)

अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिः राधाबल्लभो देवता जगती च्छन्दः मम पुत्र पौत्रादि फल प्राप्त्यर्थे आयु परिपूर्णार्थे जपे विनि योगः (न्यास पूर्ववत) ।

ध्यानं—राधाबल्लभ मध्यक्षाँ श्रीकुन्डाधिबनाधिपं । ध्याये-न्मनोरथर्थाय सांगा स्याद्वनयात्रका । इति ।

यहाँ श्री महाप्रभू जी की (२) गुसांईजी (३) गोकुलनाथ जी की तथा (४) गोबिंदजीकी चार बैठक हैं । ताके उत्तर वायव्य में एक पहाड़ है तामें खिसलनी (गडघिसनी) शिला है । यहाँ आप ग्वालन के संग खिसल २ कैं खेले हैं । यासों ऊँचे चढ़कैं दाऊजी के चरण कौ अकृतम चिन्ह हैं । व्यौमासुर की गुफा के नीचे छत्री में टूटे कठुला कौ चिन्ह हैं । मुकुट कौ चिन्ह है । चरण कौ चिन्ह है बांये हाथ कौ चिन्ह है। आगें याही पहाड़ी पै दक्षिण १ हस्त

१ चर्ण और है। ये सब अकृत्रम हैं। यह व्योमासुरके युद्ध समय के मालूम होय हैं। यहाँ मय दानव के पुत्र व्योमासुर की गुफा है चक्रुर्निलायन क्रीड़ाश्चोरपालापदेशतः ॥२६॥ भा० द० ३७ अ०। राजा चोर के खेल में छिपा छिपी कौ खेल खेले। इनमें यह असुर मिल ग्वालन को गुफा में छिपावन लगो। तब श्री कृष्ण नें याहि मारौ है। ताके ईशान कृष्ण कुन्ड, दो तीन खेत दूर दीखै है। तहां भोजनथारी भोग कटोरा कौ चिन्ह शिला (कुन्ड के ऊपर बड़े आरे) में है यहाँ ग्वालन संग छाक आरोगी है। यहां सों आगे दो रस्ता हैं। नं० १ दक्षिण सामने पक्कौ कूआ दीखै है ताकौ दाहिनों दैकैं खेत में हैकैं नहर के किनारे ही किनारे जाय तो (पहिले लिखे) शीतल कुन्ड पै सूदौ जाय निकसे। जाके पूर्व गोपाल कुन्ड है। अथवा भोजनथारी कौ बांयों दैकैं पूर्व सों दक्षिण में दगरौ जाय है (सूर्य कुन्ड के पास) गोपालकुन्ड सों अग्निकोंण में गरुण कुन्ड है ताके आगे चरण कुन्ड (यह लोप है) ताके आगें रामकुन्ड (यहीं राम रूप धारण कर उपरोक्त सेतबन्ध लीला जो कहि आये हैं सो सब करी है) आगे चन्द्रभागा कुन्ड यहाँ सखिन-ने कृष्ण सों मिलवे कौं शिव पूजन करौ है। व्रतचर्या पद—शिव सों विनय करत कुमारी, अस्तुः। चन्द्रेश्वर महादेवकौ दर्शन तथा दाऊजी कौ दर्शन ताके दक्षिण में बरसाने दरवाजे के पास कामेश्वर महादेव कौ दर्शन ताके आगे पाँचौ पांडवन कौ दर्शन यहाँ बारह वर्ष बनोवास कीनौ है। (तेरहमे बर्ष विराट नगर में अज्ञात बास करौ है) छटे नारायण कौ दर्शन तथा वाराह अवतार चारों युग के महादेव कौ दर्शन ताके पूर्व धर्म (कुन्ड) कूप है ताके दक्षिण पंचतीर्थ दशावतार के दर्शन, यज्ञ कुन्ड, आगे मनो-कामना कुन्ड (यह विमल कुन्ड के ई० उत्तर है) काशी विश्वेश्वर महादेव मणिकर्णिका कुन्ड बाद में मुकाम (डेरान) कौं जाय

(यह यात्रा दो दिन की है याते सब नहीं होय है) आगें मुकाम बरसानों सुनेरा होत ८ मील। गाम भीतर कामेश्वर महादेव के पास हैकैं गाढ़ीन के जायवे कौ रस्ता है। याते कनवारो सुनैरा की कदमखण्डी छूट जाय है। जहाँ सड़कन की पक्की दीवार सुरू होय है वहां एक कूआ है ताके पूर्व दगरौ सूदौ जाय है सामने ही कनवारो गाम दीखै है।

कनवारो (कर्णवन)

यह भगवान कौ गुप्तांङ्ग है।

(भृगूपनिषद) ओं गौं कर्णप्रतिबनाधिपते कमला कराय नमः। [१९ अक्षर मन्त्र]

अस्य मन्त्रस्य विराट ऋषि कर्णप्रतिबनाधिप कमलाकरो देवता त्रिष्टुप छन्दः मम सर्व सौख्य श्रवणार्थे जपे विनि योगः [न्यास पूर्ववत]।

ध्यानं-कर्णप्रतिबनाधीशं कमलाकरमीश्वरं ध्यायेत्प्रदक्षिणा सागां यशोदा पितृवेश्मनि।

यहाँ कर्णकुन्ड पै कृष्ण के कान छिदे हैं। याहि कृष्ण कुन्ड हू कहैं हैं। कामबन सों १॥ कोस है। कान-वारो यानी कृष्ण छोटौ ऐसौ अर्थ या गामके नामसों है। पद-लोचन भरिगये दोऊ मातन के कनछेदन देखत मुरकी। रोवत देखि जननि अकुलानी त्रियौ तुरत नौआ घुरकी॥ भक्त सूरदास।

नोट—जब गोकुल में रहते हे वहाँ कर्णवल में दाऊजी के कान छिदे हैं पीछे नन्दग्राम आयकैं कृष्ण के कान छिदाये हैं यहाँ कान की बारी कौ दान तथा मिठाई को दान है। ताके

आगे पूर्व में दगरे सों दाहिने हाथ पगडंडी बीच पहाड़ में हैकैं जाय है।

सुनहरा की कदमखण्डी

यहाँ सुनहरी पुष्पन के वस्त्र आभूषण आदि शृङ्गार कर झूला झूले हैं। ता समय कदम्बन ने [सुवर्ण सदृश] पुष्पन की [वर्षा] पुष्पांजलि कीनी तासों सुवर्ण सदृश भूमि है गई। याही सों सुनहरी कदमखन्डी कहैं हैं। यहाँ पक्कौ कृष्ण कुन्ड है ताके दक्षिण में [ऊपर] काकावल्लभ जी की बैठक है। ताके पिछारी हिंडोरा है तहां पक्के चौंतरा सिंहासन पै श्रीराधा कृष्ण की बैठक शृङ्गार की ठौर है [ताके दक्षिण कच्चौ पनिहारी कुन्ड बतावै हैं] यहाँ सों उत्तर बांये हाथ कौं पहाड़ के सहारे ही सहारे सुनेरा तक एक मील जाय। पास ही हरसुख कौ नगरा ताके आगे उत्तर सुनहरा गाम है। यहाँ गाड़ीन कौ दगरौ आय मिलै है। आगें या दगरे सों उत्तर बांये हाथ कौं जाय [दाहिने हाथ कों दगरो देह कुन्ड छोड़ कैं बरसाने जाय है] याते थोरी दूर पै सुन्दर वृक्षावली में कूआ है तासों पूर्व पहाड़ पै छत्री है तहाँ राधिकाजी के चरण कठुला कौ चिन्ह है। यहाँ स्वामिनीजी कौ शृङ्गार कर बैंणी गूँथी है। महावर लगाई जाके छींटा पड़े। सो चित्र विचित्र शिला है। ताके ऊपर चढ़कैं छप्पन कटोरान के चिन्ह हैं। यहाँ श्री ललिताजी ने छप्पन भोग की छाक दीनी है, छोटी पुष्करणी, मानिक शिला है। याके उत्तर पहिले दगरे सों ऊँचौ गाम, पहाड़ के ऊपर श्रीललिताजी की जन्मभूमि ताके पश्चिममें देह कुन्ड है। एक दिन श्रीकृष्ण बलदेव सखान सङ्ग गैंद खेलत गैंदोखर [आगे आवैगी] पधारे तहाँ श्री कृष्ण कौं सैंन [इशारो] देकैं श्री

राधिकाजी अपनी वाटिका सों ललिताजी के पास आईं ता समय श्री ललिताजी कुण्ड पै स्नान करती हीं सो आपहू (राधाजी) स्नान करन लगीं (बलदेवजी ग्वाल सब गेंदके खेलमें रहे) श्रीकृष्ण नें यहाँ आनकैं दान माँगों तब श्री राधिकाजी नें ललिताजी कौं संकेत कीनों कि (दान) देउ तब श्री ललिता जी ने अपने आभूषण उतार कैं श्रीकृष्ण को पहिराय दीने। तब श्री राधिकाजी सों माँगे और कह्यौ कि इन सों अधिक आप अब कहा देउगी। यह सुन आप जल उठाय लम्बी भुजा कर कह्यौ तन, मन, धन, श्री कृष्णार्पण। हे प्यारे मैंने सर्वस्व आपके अर्पण कीनों अब ये प्राण आपके देखे बिना पल मात्रभी नहीं रहि सकैं हैं सो इनके लिए आप कहा आधार देत हो सो कहो। आप बोले, हे प्यारी ! मेरो जो सूक्ष्म सोंभी सूक्ष्म स्वरूप है वह आपके नेत्रन के पलकन पै अहरनिश रहैगो जाको दर्शन आप की इच्छा के अनुसार होतही रहैगो याको भेद आपही जानोगी या आपके मेरे भक्तजन जान सकेंगे। यह परस्पर देह अर्पण की ठौर है। विरोप कथा ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण खण्ड योग ज्ञान प्रकर्ण में है। याते याहि देहकुण्ड कहैं हैं। या मंत्र कौ जाप करकें कुण्ड में स्नान करै—

त्रैलोक्य श्रमनाशाय सर्वदान्द दायिने।
सर्वकल्मष निर्धौत दीप्यकाय प्रदायक॥

यहाँ सुवर्ण आभूषण दान देवे कौ माहात्म्य है। ताके आगे बड़े फाटक में (सिखिरदार बलस्थान) दाऊजी कौ प्राचीन दर्शन है। ताके पूर्व दाहिने राधा बाटिका, प्रातः स्मर्णीय नवल निकुँज है।

दो० रे मन नवल निकुँज की सुमर सोहनी प्रात।
लिपटी प्यारी चरण रज रसत सहचरी हाथ॥

अरी सोहनी सोहनी ये न सोहनी रीत।
प्रिया चरन अङ्कन धरत मेट करत बिपरीत ॥

या स्थान पै राधिकाजी नें तुलसीजी की आराधना करी जासों श्रीकृष्ण पति भये याकी कथा गर्ग सहिता में है। बाँये गैंदोखर कुण्ड गैंदलीला की जगह (या लीला कौ पहिले लिख चुके है) आगे पहाड़ कौं दाहिनों देकैं दक्षिणमें घूम जाय।

बरसानौ (बृहत्सानौ)

आगे कुआ के पास राधिकाजी के महल कौं जायवे की दाहिने हाथ कौं पलकारी [चढ़ाई] हैं। [यहाँ पीछे जाँयगे] आगे ऊँचौ कूआ और है तहाँ दो रस्ता हैं। बाँये हाथ कौं पूर्व सों दक्षिण, में दाहिने घूमकैं, बांये हाथ कौं, पूर्वमें दगरे सों,भानोखर जाय [बांये हाथ पूर्व में सड़क पक्की है, सो संकेत, नन्दग्राम होत कोसी गई है] अथवा ऊँचे कुआ सों दक्षिण, में माड़वारी सेठों की दो धर्मशाला भी हैं। उनके आगे बड़ौ बजार है। यहाँ सों पूर्वमें दगरौ भानोखर डेरानकी जगह है। भानोखर की कथा– यहाँ एक दिन श्री राधिका जी स्नान कर रहीं हीं ता समय राजा कंस श्री राधिकाजी के रूप की प्रशंसा सुनकै कुचेष्टा सों यहाँ आयौ और राधिकाजी कौं पकर ले जायवे कौं जल में घुसौ श्री राधिकाजी वाकी अन्तर इच्छा कौं जान गईं वो जैसे २ जल में घुसतौ गयौ वैसे २ ही स्त्री रूप होतो गयौ जब राधिकाजी के पास स्त्री रूप में पहुँचौ तब गोपी वाय राधिका जी की आज्ञा सों पकर लै गईं और वाकौं गौअन के खिरक में गोबर उठायवे पै राख दीनों। तब वो दुखी है कै बृषभान राजाके पास गयौ और अपनी गलती की क्षमा माँग कै असली रूप में करिवे की प्रार्थना

करी तब वृषभानजी के कहे सों दया करकैं राधिकाजी नें क्षमा कीनी और कहौ कि तू और तेरे असुर मेरे राज्यकी सीमामें आवेंगे तौ भस्म है जाँयगे अब जा जब तू या सौंऊँ परसों निकसेगौ तभी तेरौ निज रूप है जायगौ, यह बात सुन कंस मथुराकी ओर भागौ यहाँ सों सीपरसों गाम होत भई गोवरधन सड़क १३ मील है।

नोट—याही सों नन्दगाम बरसाने को सरहद में कोऊ असुर लीला नहीं भयी।

भानोखर के उत्तर में पास ही कीर्ति कुण्ड, श्री राधिकाजी की मैया कौ है।

दक्षिणमें कोट बाहर बांये हाथ के एक दगरो कौं छोड़कैं दूसरे दगरेसौं पूरबमें जाय। थोड़ी दूरपै [कच्चौ] रावल [जोगी] कुन्ड है। यहाँ श्रीकृष्ण ने जोगी भेष कीनौं है। आगे दक्षिण अग्निकोंण वृक्षावली में पाउड़ी (खड़ाऊँ) कुण्ड है। याकों बांयों देकैं दक्षिण नैऋत्य में दगरौ है ताके बांये बाग (बाटिका) में बांये हाथ कौं चौतरा पै ठाकुरजी की बैठक है वहीं अलख जगाय कैं आसन लगायौ है। [जोग लीला स्थल] यहां सों पश्चिममें दगरे सों जाय, कूआ के दक्षिण खेत में तिलक कुण्ड [जलहीन] है। यहाँ राधादि सखिन ने तिलक लगायकैं जोगीजीकौ पूजन कीनौ है। आगे चार रस्ता हैं। उत्तर दक्षिण में नहीं जाय। पश्चिम में पहाड़ [विलासगढ़] दीखै है ताके पूरब में [श्मशान पास] तिवारी है ताके आगे एक पापरी के वृक्ष पास।

मोरकुण्ड (मयूर वन)

यह भगवान कौ ललाट अङ्ग है।

[शुकोपनिषद्] ओं ह्रौं मयूरबनाधिपतये किरीटिने स्वधा।

[१६ अक्षर मन्त्र] अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषि र्मयूरबनाधिपः किरीटी देवता अष्टौ छन्दः ममानेकाल्हा दर्शनार्थे जपे विनियोगः [न्यास पूर्ववत]

ध्यानं—मयूराधिपतिं देवं किरीट-मुटकु-धृतं वन्दे नन्दसुतं कृष्णं गोपीभिः परिशोभितं । इति ।

यहाँ सों मोर रूप धर कुहक मारि [कुहकवुण्ड] उड़कै मोर कुटी [सामने दीखे है] पै जाय नृत्य कीनों है आगे कछौ ललिता कुण्ड है । ताके आगे विशाखा कुन्ड है । याकौ और विहारकुन्ड कौ जल [चौमासे में] एक हैजाय है ।•याके पश्चिममें जलविहार कुन्ड है यहाँ राधा कृष्ण ने जल विहार कर विरहाग्नि बहायौ है, यहां सों उत्तर गाम भीतर है कैं साँकरी गली पहाड़न के बीचमें है यहां दूसरे दिन यात्रा जायमी । आगे पश्चिम में पास ही—

दोहनी कुण्ड

यहां वृषभान जी की गोअन कौ खिरक हो । एक दिन श्री राधिकाजी यहाँ दूध काढ़ रहीं, ता समय श्रीकृष्ण गोपी रूप धर यहाँ आनकैं बोले । हे सखी ! तोपै दूध काढ़वो भी नहीं आवैहै ला मैं बताऊँ । यह कहि गौ दुहन लगे, ता चतुराई कौं देख श्री राधिका जी बोली अरी वीर मोय सिखाय यह कहकैं सामने बैठ गई । श्री कृष्ण ने कह्यौ—अच्छौ दो थन आप दुहो और दो मैं दुहौं, आप मेरी ओर निगाह राखो । दोहा—आमें सामें बैठ दोऊ दोहत करत ठठोर । दूध धार धरणी गिरत, दृग भये चन्द्र चकोर ॥१॥ प्रीत प्रभाव भरी यह सरिता,रसिकन को रस छद्म कह्यो । भरि दोऊ अङ्क मिले पिय प्यारी, जल विहार विरहाग्नि बह्यो ॥२॥ पद—प्रेम पय प्रेमी जनन पियो । धन ये ग्वाल धन्य वृज बनिता,

इन्ह तप कौन कियौ ॥१॥ जा पय कौं ब्रह्मादिक तरसत सो यहाँ गलिन बह्यो ॥२॥ कछुक शेष शंकर ले भागे, भक्तन बांट दियो ॥३॥ नारायण गिरिधरण युगल छवि निरखत सोई जियो ॥४॥ अस्तुः या प्रेम ने या कुण्ड कौं ही दोहनी बनाई है याही सों याकों दोहनी कुण्ड कहैं हैं। या प्रेम पय के इच्छुक यहाँ दूध दोहनी (लोटा) दान करैं हैं।

नौबारी चौबारी देवी

बरसाने सों ३ मील अनुमान दक्षिण में (चम्पकलता सखी कौ) डभारौ गाम है। ताके अगारी सूर्य कुंड है। एक दिन श्री राधिकाजी चम्पकलताजी के घर पधारी, तब चम्पकलताजी नें आपकी भेट मैं एक हार रत्ननकौ दियौ यह हार चम्पकलताजी कौं सूर्य सों प्राप्त भयो हो। (आप सूर्य की उपासक हीं) यहाँ सों आगें गाम बाहर दक्षिण में वृषभानु राजा की गोबर उठावनहारी नौबारी चौबारी नामकी दो सखी रहती हीं विनने श्रीराधिकाजीके दर्शनकर छाक दीनी तिनके सङ्ग आप गुड़िया गुड्डा कौ खेल खेलीं हैं (यह बसन्त पंचमी के दिन व्रज में अबहू (खेल कौ) पूजन होय है यहां सों आप चलीं जब मनमें बिचार भयौ कि या हारकौं देखकैं मैया बाप जानें कहा कहेंगे या डर सों हार तोर कैं कुन्ड में डार अपने घर गईं। वहाँ वृषभान जी कौं चिन्ता में देख पूछन लगीं बाबा आपकों आज कहा सोच है ये कहि गोद में बैठ गईं। श्री वृषभानजी प्यार कर बोले हे बेटी! मैंने ब्याह कौ टीकौ पत्रिका और मोतिन कौ हार वा नन्द कें भेजो है। सो बेटी वा नन्द के छोरा नें जाने कहा कीनों, वहाँ सों एक डलिता भरकें मोती आये हैं। अब हम कहा देंय। श्रीराधिकाजी नें कह्यौ बाबा तेरें तो रत्नन

कौ कुण्ड भरौ है। वामें सों चार डलिया भर कैं भेज देउ। अरी राधा बाबरी भई है मेरे रत्नन कौ कुण्ड कहां है, बाबा तुमतौ अपनी चीज कौं भी भूल जाओ हो, चलौ मैं दिखाऊँ। यह कहि अपने सङ्ग लाय या रत्नकुण्ड सों रत्न काढ़ २ कैं ढेर लगाय दीनें, श्री वृषभानजी ने यह देख बड़ौ आश्चर्य कर पूछौ, हे बेटी! तू सांची कहिदे यह कहा बात है। तब आपने उपरोक्त हार मिलो ताकी बात कही, बोली बाबा मैंने वा हार कौं तुम्हारे डर सों तोरकैं या कुण्डमें पटक गई सो ये और ऊग आये हैं यह सुन वृषभानजी समझ गये। मन ही मन में प्रणाम कीनौं इन रत्नन की ४ डलिया भर नन्दजी कें भिजवाय दीनी। याते यह रत्न कुन्ड है। यहां सों पीछे लौटकैं दोहनी कुन्ड आवे। ताके पास वायव्य में–

गहवर (गह्वर) वन

यहाँ कृष्ण कुन्ड महाप्रभू जी की बैठक है ताके ऊपर मान-गढ है याकौ एक रस्ता दोहनी कुन्ड के पच्छिम में गामके कौनेसों पहाड़ के ऊपर जाय है या रस्ता ही डोली म्यानें जाय है।

मानगढ़

भगवान कौ नासा अङ्ग है

(सौपर्णोपनिषदि) ओं ग्रौं मानेंगितबनाधिपतये बन मालिने नमः (१८ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्यांगिरस ऋषि मानेंगितबनाधिपो बनमाली देवता गायत्री छन्दः ममानेक सौख्य कृष्ण दर्शनार्थे जपे विनियोगः। (न्यास पूर्ववत्)।

ध्यानं—राधाविज्ञप्ति संयुक्तं कृष्णं मान विवर्द्धनं। वन्दे त्वदर्शनायात्रा सांग एव समर्थितः ॥इति॥

यहाँ मान लीला कौ रास होय है। मान विहारी कौ दर्शन है।

ऊपर सों एक रस्ता महाप्रभूजी की बैठक उतरकैं आवैं हैं (तथा एक ऊपरही ऊपर दानगढ़ जाय है) नीचै कृष्ण कुन्ड सों उत्तरमें श्री महाप्रभू जी की बैठक है। आपने यहाँ सप्ताह पारायण करी है। पुनः एक अजगर सर्प जो कि वृन्दावन कौं (भूतपूर्व) दुश्चरित्र महन्त शिष्यन के द्रव्य कौं कुमार्ग में व्यय कीनों याते सर्प योनि मिली। वाकूँ चर्णामृत (पग कौ) देकैं सर्प योनिते मुक्त करी ही। यही वार्ता दामोदर हरसानी सों स्वयं श्री महाप्रभूजी नें कही है। अस्तुः कुण्ड सों पूर्वमें जो ऊँचौ पहाड़ है वहाँ मोरकुटी मयूरबिहारी कौ दर्शन है। यहाँ मोरकुन्ड सों आयकैं नृत्य कीनों है। एक समय श्रीराधिकाजी मानगढ़ पै मान करकैं बैठी ता समय या नृत्य कौं देख श्री राधिकाजी प्रसन्न है बोली हे मयूर तेरौ जैसौ नाच हमारौ प्यारौ हमें दिखायौ करै है। यह सुन उड़कै पास जाय अपने निज रूप कौ दर्शन दीनों है। आगे उत्तर में दानगढ़ (यहां भूला भूले हैं) यहां दान लीला कौ रास होय है। यहां दानबिहारी कौ दर्शन है। यहाँ महाप्रभूजी की बैठक सों आयबे कौ रस्ता (उत्तर) पक्की बनी है। यहाँ सों मोरकुटी कौं रस्ता है। याके पास जयपुर नरेश श्री माधोसिंहजी कौ बनवायौ सुन्दर विशाल मन्दिर ठाकुर श्री वैणुगोपाल, हंसगोपाल श्यामबिहारी (लाड़िलीलाल) कौ दर्शन है। यह अपूर्व जगह है। आगे लाड़िलीजी के भवन (शिखिरदार) है। यहां श्रीराधाकृष्ण कौ दर्शन है। राग रामकली—नव कुँवर चक्र चूड़ा नृपति सांमरो राधिके तरुण मन पटूरानी। शेष गृह आदि बैकुन्ठ पर्यन्तलों लोक थानेत वृजराज धानी। मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत, यहाँ मुक्ति चारों यहाँ भरत पानी सूर्य शशि पहरुआ पवन जल इन्द्रहू बरुणदासी

भाट निगम वानी । धर्म कुतवाल, सुक सूत नारद यहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी । सत्व गुण पौरिया काल बधुआ यहाँ ड्यौढ़ी पति कामरति सुख निसानी ॥ कनक मरकति कुञ्ज कुसमित महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी । पलन विछुरत दोऊ तहाँ न पहुँच सकत कोऊ व्यास लिये ठाड़े महलन पीकदानी ॥ श्री कृष्ण यहां बहुत से रूप धर धर कै आये हैं । जैसे मालिन विसायतिन, मनिहारी, सफेरो (गारुड़ी), लिलहारी आदि । लीला स्थल यही भूमि है । नीचे सङ्गमरमर की छत्री में चर्ण कौ दर्शन है । आगे पौरी के सामने (खिड़की में) ब्रह्माजी कौ दर्शन है । ये यहाँ गोपी रूप सों ड्यौढ़िन कौ पहरो देंय है । ये पर्वत चार मुख कौ (ब्रह्मा कौ स्वरूप) है । पूर्व मुख बिलासगढ़ १—पश्चिम मुख मानगढ़, २—दक्षिण मुख मोरकुटी दानगढ़, ३—उत्तर मुख जहाँ बैठे हैं ४ । नोट—(नन्दग्राम शिवरूप, गिरिराज विष्णु रूप है) बीच में उतर कैं दाहिने वृषभानुजी के माता पिता महीभान सुकमाजी कौ दर्शन है । नीचे कुआसों दक्षिणमें दगरौ है । बांये हाथ कौं वृषभानु श्रीदामा(राधाजीके पिता भ्राताकौ दर्शन) दाहिने अष्टसखीन कौ दर्शन है । आगें मुकाम दूसरे दिन-गाम के बजार में सों दक्षिणमें (कोतवाली) विलासगढ़ के सहारे २ पश्चिम सों नैऋत्य में—

साँकरीखोरि (तंग गली)

दानगढ़ विलासगढ़ के बीच तङ्ग रस्ता है । ये पहाड़ वृक्षावली सों सुशोभित हैं इन्ही पै यात्री बैठ कैं दान लीला देखैं हैं ।

—०—

❀ अथ दानलीला ❀

राग विलावल ।

तुम नन्द महर के लाल मोहन जानदे । रानी जसुमति प्राण अधार मोहन जानदे ॥ श्री गोवर्धन की शिखरतें हो मोहन दीनी टेर । अन्तरंग सों हम कहत हैं इन ग्वालिन राखौ घेर ॥ नागरि दानदे ॥ ग्वालिन रोकी ना रहें हो ग्वाल रहे पचिहारि । अहो गिरधारी दौरियो तेरो कह्यौ न मानति ग्वारि ॥ नागरि० ॥ चली जाति गोरस मदमाती मानौं सुनति नहिं कॉन । दौरि आये मन भाँवते सो तो रोकी अंचल तॉन ॥ नागरि० ॥ एक भुजा कंकन गह्यौ हो एक भुजा सों चीर । दान लैन ठाड़े भये लाला गहवर कुँज कुटीर ॥ नागरि०॥ बहुत दिना तुम बचि गई हो दान हमारो मारि । आजु लेहुँगो आपनो दिन दिन को दान सँभारि ॥ नागर०॥ रस निधान नवनागरी हो निरख वचन मृदु बोल । क्यों मुरि ठाड़ी होति है प्यारी नैंक घूंघट पट मुख खोल ॥ नागरि०॥ हरख हिये कर करखि कैं हो मुखतें नील निचोल । पूरण प्रगट्यो देखिये मानो चन्द घटा की ओल ॥ नागरि० ॥ ललित वचन समुझति भई नेति नेति यह बैन । उर आनन्द अतिही वढ्यौ हो सुफल भये दोऊ नैंन ॥ नागरि० ॥ यह मारग हम नित गई हो कवहू सुन्यो नहिं कॉन । आजु नई यह होति है लाला मांगत गोरस दान ॥ मोहन० ॥ तुम नवनि नवनागरी हो नूतन भूषन अङ्ग । नयो दान हम माँगहों प्यारी नवो बन्यो यह रङ्ग ॥नागरि०॥ चंचल नयन निहारिये अति चंचख मृदु बैन । कर नहीं चंचल कीजिये तजि अंचल चंचल नैन ॥ मोहन० ॥ सुन्दरता सब अङ्ग की हो बस नति राखी गोइ । निरखि निरखि छवि लाड़िली मेरो मन

आकरषित होइ ॥ नागरि० ॥ लै लकुटी ठाड़े भये हो जानि सांकरी खोरि। मुसकि ठगोरी डारिकें प्यारे सकति लई रति जौरि ॥ मोहन० ॥ नेंकि दूरि ठाड़े रहो हो तनक रहौ सकुचाय। कहा कियौ मन भाँवते मेरे अञ्चल पीक लगाइ ॥ मोहन० ॥ कहा भयौ अञ्चल लगी हो पीक हमारी जाइ। याके बदले ग्वालिनी मेरे नैननि पीक लगाय ॥ नागरि० ॥ सूधे बचनन मांगिए हो लालन गोरस दान। मोहन भेद जनाइकें लाला कहत आँन की आँन ॥ मोहन० ॥ जैसी हम कछु कहति हैं तैसी तुम कहि लेउ। मन मानैं सो कीजिए पै दान हमारो देउ ॥ नागरि० ॥ कहा भरैं हम जात हैं हो दान जु मांगति लाल। भई अबार घर जानिदै सो तो छांड़ अटपटी चाल ॥ मोहन० ॥ लिये जाति हौ श्रीफल-कंचन कमल-बसन सौं ढांक। दान जु लागति ताहि कौ तुम दैकरि जाउ निसाँक ॥ नागरि० ॥ इतनी विनती मानिये हो मांगति ओली ओड़। गोरस को रस चाखिये लाला चंचल अञ्चल छोड़ ॥ मोहन ॥ सङ्ग (की) सखी सब फिरि गई हो सुनि हैं कीरति माइ। प्रीति हिये में राखिये प्यारे प्रगट किये रस जाइ ॥ मोहन० ॥ काल्ह बहुरि हम आई हैं हो गोरस लै जब ग्वारि। नींकी भांति चखाई हैं मेरे जीवन प्रान अधारि ॥ मोहन० ॥ सुन राधे नवनागरी हो हम न करें विसवास। करको अमृत छांड़िकें को करै काल की आस ॥ नागरि० ॥ तेरो गोरस चाखिवे कों मेरो मन ललचाइ। पूरन ससि कर पाइके चकोर न धीर धराय ॥ नागरि० ॥ मोहन कंचन कलसिका हो सिर तैं लई उतारि। स्रमकन बदन निहारिकें प्यारी ग्वालिन अति सुकुमारि ॥ नागरि० ॥ नव बिजना गहि लालजू हो श्रीकर देति डुराइ। स्रमित भईं चलो कुँज में प्यारी नेंकि पलोटौं पांइ ॥ नागरि० ॥ जानति हों इह कौंन है हो ऐसी ढीठ्यौ देति। श्री वृषभानु कुँमारि हे सखी तोहि दीच कौ लेति ॥

॥नागरि०॥ गोरे श्री नन्दराइ जू हो गोरी जसुमति माइ। तुम याही तें सावरे लाला ऐसे लच्छिन पाइ ॥ मोहन० ॥ मन मेरौ तारन बसे हो जिम अंजन की रेख। चोखी प्रीति निभाइये प्यारी जासों साँवल भेख ॥नागरि०॥ आप चलें सो चालिये हो यही बड़ेन की रीति। ऐसी कबहुँ न कीजिये लाला हँसें लोग विपरीत ॥मोहन०॥ ठाले ठूले फिरत हौ हो औरु कछू नहिं काम। घाट बाट रोकति फिरो तुम आँन न मानति श्याम ॥मोहन०॥ यही हमारो राज है हो ब्रजमण्डल सब ठौर। तुमहिं हमारी कुमुदनी हम कमल बदन के भौंर ॥नागरि०॥ ऐसे में कोई आइकें हो देखे अद्भुत रीति। आज सबै नन्दलालजू हो प्रगट जनावत प्रीति ॥मोहन०॥ ब्रज वृन्दावन गिरिनदी हो पशु पंछी सब सङ्ग ।इनसों कहा दुराइये प्यारी राधा मेरो अङ्ग ॥नागरि०॥ अंस भुजा गहि ले चले प्यारी चरण निहोर। निरखत लीला'रसिकजू' जहाँ दान मान की ठौर ॥ नागरि दान दे। (पूर्ण)

यहाँ सों आप दोनों विलासगढ़ पधारे हैं।

आगे रस्ता—यहांते उत्तरमें बजार मार्ग सों श्रीराधिकाजी की पलकारी (सिड्डी) तक आगे पूरवमें दगरे सों जाय। थोरी दूर दाहिनें पीरी पोखर यहाँ विवाहके हल्दी सों पीरे हाथ धोये हे ताके आगे १। मील अनुमान।

प्रेम की सरोवर

(बार्हस्पत्यसहितायां) ओं ब्रूं प्रेमबनाधिपतये ललितामोहनाय स्वाहा। (१७ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य गुरु ऋषिः प्रमोबनाधिपो ललिता मोहनो देवता उष्णिक्छन्दः मम सकल प्राधान्य कृष्ण दर्शनार्थे जपे विनि योगः। (न्यास पूर्ववत)

ध्यानं—ध्यायेत प्रियान्वितं कृष्णं प्रेमपूर्णं मनोहरं बनयात्रा प्रसंगस्तु त्वत्समीपे समर्थिः । इ ति ।

यहाँ सेठ घनश्यामदास जी के पुत्र लक्ष्मीनारायण जी पोद्दार रामगढ़ निवासी ने श्री राधागोपाल को मन्दिर, बगीचा बनायो है । यहाँ सदावर्त; पाठशाला भी है ।

कवित्त

उत आवत है नन्दलाल इते आल आय रही वृषभान कुमारी ।
बिच प्रेम सरोवर भेट भई यह प्रेम निकुञ्ज नवीन निहारी ॥
चित चाहत है इतही रहिये यह कीन्ह विनय पियसों जब प्यारी ।
तब नित्य निवास कियो इतही मिलि राधेगोविंद निकुँज बिहारी ॥

यहाँ रास चौंतरा है । सरोवर के बायव्य में गुसांईजी की बैठक है । ताके ईशान सिखिरदार मन्दिर में प्रेम बिहारी को दर्शन है ।

दोहा—प्रेम सरोवर प्रेम की, भरी रहत दिन रैंन ।
जहाँ लालिड़ी पग धरत, लाल धरत दोऊ नैंन* ॥

यह जगह बरसाने सौं १॥ मील है । यहाँ सौं १॥ मील संकेत सड़क सों दाहिनी ओर गाम के अग्निकोण में ।

विह्वल कुण्ड (विह्वल वन)

यह भगवान की दन्त पंक्ती है

(अगस्त संहितायां) ओं रौं विह्वल बनाधिपतये विह्वल स्वरूपाय नमः । (१९ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्याहिर्बुध्न ऋषि विह्वलो देवता पंक्तिच्छदः । मम इष्टरूप दर्शनार्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानं—राधादि युतं कृष्णं बन्दे विह्वल रुपिणं वृषभानु पुरा यात्रा सांगत्वत्पार्श्व गामिनी । इति ।

---

*कोमल चर्णारविन्द में कांटे, ऋण, कांगरी, नहीं लगजाय ।

यहां बिह्वला देबी कौ (चतुर्भुज) दर्शन है तहां एक शिला में कल्पवृक्ष जापै सुन्दर मयूर बैठे हैं। वृक्ष के बांई ओर कृष्ण सखन संग दाहिनी ओर गोपी तीन तीन मूर्ति हैं। याके पश्चिममें

संकेत बट

(राधा पटले) औं ह्रां ल्क्रीं मः संकेट बटाधिबनाधिपतये राधा रमणाय नमः। (२३ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिः संकेत बटाधिबनाधिपो राधारमणो देवता गायत्रीच्छन्दः मम कृष्ण विहार दर्शनार्थे जपे विनियोगः (न्यास पूर्ववत्)

ध्यानं—राधयाऽशोकनन्दिन्या कृष्णं वैहारिणं हरिं। बन्दे संकेतशोभाढ्यं बनाधीशं मनोहरं। इति।

यहाँ ग्राम के बीच में प्राचीन राधारमणजी कौ शिखिरदार मन्दिर है, यह गाम ९५० वर्ष कौ बसौ है। ताके पहले कौ यह मन्दिर है ताके उत्तर में संकेतबिहारीजी कौ मन्दिर है। जाके बाँई ओर (भीतर) चैतन्य महाप्रभू जी (गौड़िया सम्प्रदाय) की बैठक है ताके सामने विवाह कौ चौंतरा है वाके दक्षिण में हिंडोरा है, तहाँ एक यंत्र शिला है। ताके पश्चिम (दीवार) में एक फुट कौ, संकेत देवी कौ मन्दिर है। यह सखी (देवी) संकेत (इशारो) करबे में प्रवीण ही, या स्थान के बाहर दक्षिणमें कृष्णकुण्ड है, ताके वायव्य में महाप्रभूजी की बैठक है, यहाँ छोंकरा के नीचे भागवत सप्ताह पाठ कीनों है, यहाँ विवाह की लीला होय है। आगे रस्ता नं० 1 कुण्ड कौं दाहिनें धूनकैं पश्चिम में आवै हैं। रस्ता नं० २ कुण्डकौ बांयों देकैं कदमखण्डीमें सों सीधौ पश्चिममें दगरे सों (जल न भरो होय तो) तीन मील—

रीठोरा

(दधीचि संहितायां)ओं धीं धांश्चन्द्रावलि प्रतिबनाधिपतये पीताम्बराय स्वाहा। (२१ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य संकुषिक-स्मृषिश्चन्द्रावलि प्रतिबनाधिप पीताम्बरो देवता जगती छंदः मम सर्वालंकार समृद्धयर्थे जपे विनियोगः (न्यास पूर्ववम्)

ध्यानं—चंद्रावलि बनाधीशं ध्यायेत्पीताम्बरं हरिं बनयात्रा प्रसंगस्तु साँग एव समर्थितः ।इति।

गाम के अग्निकोंण में रस्ता सों बांये हाथ कों वृक्षावली के पास चंद्रावलिकुण्ड पै श्रीठाकुरजी की बैठक है, यहाँ चंद्रावलि सखीकैं एक रात्रि श्री ठाकुरजी में निवास कियौ हो; यहाँ श्री गुसांईजी की भी बैठक है (आप चंद्राबलि सखी कौ अवतार हे) या कुंड सों उत्तर (ईशान)में ४ मील नंदगाम है। आगें गाम कौ बायौं देकै वायव्य कौने सौं पश्चिममें दगरो २ मील भांडोखरकुंड भांडोखर गाम है ताके सामने दक्षिणमें क्षीरकुँड है (यामें भांड़े धोये जाते हे) महराने सों यहाँ तक अभिनन्दन गोप की गौशाला ही। यहाँ दूध के भांड़े (दोहनी, घड़ा) भर कें धरते हे तासों भांडोखर नाम भयो है। आगे पश्छिम में १ मील—

महरानो गाम

यह अभिनंदन गोप कौ गाम (श्री कृष्ण की ननिहार) है गाम के ईशान में यशोदाजी रामचंद्रजी कौ दर्शन है, ताके पास यशोदा कुंड है। कहैं हैं कि शिवरात्रि के दिन अर्ध रात्रि के समय दूध की धार कुंडमें सों निकसै है याते क्षीरसागर हू कहैं हैं यहाँ श्री कृष्ण सौं यशोदा जी ने राम कहानी कही ही।

पद—सुन नद नन्दन एक कहूँ कहानी। रामचन्द्र राजा दशरथ सुत जनकसुता वाके घर रानी। तात वचन सुन पंचवटी बन, छांड़ चले ऐसी रजधानी॥ तहां बसत सीता हरलीनी रजनीचर अभिमानी। पहली कथा पुरातन सुन सुन जननी के मुख बानी॥ लक्ष्मण धनुष धनुष कहि टेरत यसुमत सूर डरानी। आदि। और भी कीर्तन में पद हैं। आगें गाम के दक्षिण में चंद्र-कुण्ड है। यहां श्रीकृष्ण, चन्द खिलौना लैहों मैया, यह कहि मचले हैं, जब कुण्डमें चन्द्र दिखायो है। आगें गामसों वायव्यमें श्याम-कुण्ड है (यहाँ पीपर के वृक्ष हैं यासों गाम के लोग पीपरवारो कहे हैं यहाँ श्यामसुन्दर कौं अभिनन्दन गोपनें स्नान कराय कें पुष्पन कौं शृङ्गार धरायो है। वाके पास में भ्रमर कुण्ड है। यहाँ अभिनन्दनजी बैठे २ भ्रमर की नांई पुष्पन की सुगंध लियो करते। भ्रमर बनों बैठो रहियो रसिया—आदि वृज कौ भजन विख्यात है मस्तक प्रेम सों सूँघत हे। श्यामसुन्दर भौंरान के पीछे २ भाजते फिरते हे। रास्ता नं० १ भांड़ोखर सों बेलकुण्ड (छोटी चरण पहाड़ी) हैकैं ६ मील नन्दगाम है। रस्ता नं० २ सांचौली गाम—(सीधा बन) भगवान को वाणी अङ्ग है। यहां सांचौली देवी कौ दर्शनहैं ये अभिनन्दन गोप कीं कुल देवी हैं। यहाँ सों गिड़ौयो हैकैं १० मील नन्दगाम है। रस्ता नं० ३—महराने सों यशोदाकुण्ड कौ दाहिनों देकैं उत्तरमें दगरो वांये हाथ कौं जाय है, तासों ईशान झुकतो जाय, अगारी जाय कैं बांये हाथ कौं सोधो दगरो उत्तर में है बासों नहीं जाय। दाहिने हाथके दगरे सों पूरब सों उत्तरमें जाय। साढ़े चार मील—

गिड़ोयो गाम

गाम के नैऋत्य में एक बगीची है वहाँ एक कूआ है वाके

पास में गोरीकुण्ड है। आगें गामके पश्चिममें एक कूआहै (जहाँ वृक्ष नहीं हैं) तहां रोहनी कुण्ड (यह छोटी सी तलैया) है यहाँसां पश्चिम रस्ता सांचोली देवी हैके आवै है। गाम के वायव्य में विहारकुण्ड जहाँ पक्को सिविरको सनाथोहै ताके पश्चिममें कुण्ड है। गाम सां उतर यहाँ सां ईशान नीमन के पेड़न में एक बगीची कूआ है तहाँ पनिहारी कुण्ड है। याको बाँया देकैं दगरे के सामने गाम के ईशान में वृक्षावली है तहां गेंदोखर कुण्ड है यहां भी गेंद लीला करी है। जुगलकिशोरजी को सुन्दर दर्शन है। यहां सों दक्षिण गाम के अग्निकोण गारुड़ी कुण्ड विहारीजी कौ दर्शन है। यहाँ सां श्रीकृष्ण गारुड़ी (सपेरा) भेष धर कैं गये हैं (ताहि आगे लिखेंगे) या कुण्ड में पक्को घाट और दो बुर्ज हैं यहां के लोग इसे गहदर बन कहैं हैं। गदहर शब्द कौ अपभ्रंस हैगयो है। गद (रोग) हर (दूर करनो) यहाँ गर्गाचार्य जो ने तपस्या करी ही, विहारीजी की मूर्ति (या कुण्ड में सों प्रकट भई ही) उनको सेवा को है। यहाँ सों २॥ मील नन्दगाम अग्निकोण में दीखै है। या कुण्ड ओर मन्दिर कौ बाँयो देकैं दक्षिण सों, बांये हाथ कों ऊँचे पै पूरब में पीपर को बड़ो पेड़ है। ताके नीचे हैकैं (बांयां देकैं) एक रस्ता नहर के पुल कों अग्निकोण में जाय है। तहाँ पीपर को वृक्ष मीठो कूआ बगीचो है यहां सों थोरी दूर उत्तर में नहर की पटरी २ जायकैं आगे पूरब में दाहिने हाथ कौं वृक्षावलीहै तहाँ विलास कुण्ड शृङ्गारबटहै। यहाँ श्री राधिकाजी कौं श्रीकृष्ण ने पुष्पन कौ शृङ्गार कीनौ है। याके पूरब ईशान में पास ही साँस की कुण्ड है। याकी लीला आगे लिखी है। यहाँ फुलवारी कुण्ड नैऋत्य में है। यहाँ हैकै जाय तो दूसरे दिन इतनी दूर नहीं आना परे। पीछे सड़क सों पश्चिम में श्यामपीपरी देख, पूरब में टेर कदम चलो जाय यह रस्ता आगे लिखेंगे अथवा वाही

नहर के पुल बगीची कौं दाहिनो देकैं दगरे सों फुलवारी कुन्ड हैं कैं—

नन्दगाम

(संमोहनतन्त्रे)—ओं क्लीं नन्दग्रामाधिवनाधिपतये यशोदा नन्दनायनमः। (२१ अक्षर मंत्र) अस्यमंत्रस्य भार्गव ऋषिर्नन्द-ग्रामाधिवनाधिपो यशोदानन्दनो देवता अष्टीच्छन्दः मम सकल मनोरथ सिद्धर्थे जपे विनयोगः (न्यास पूर्ववत्)

ध्यानं—यशोदानन्दनं वन्दे नन्दग्राम बनाधिपं। वृषभानु पुरा यात्रा सांग एव समर्थिता। इति।

फुलवारी कुण्ड कदम्ब के वृक्षन में है। श्रीराधिकाजी सखीन संग फूल बीन रही ही तब श्रीकृष्ण आनकैं रोकन लगे। कवि बनारसी का ख्याल—ग्वालिन से कृष्णजी कहै अरीं तुम कौन फूल बीनन हारी। यह बाग हमारा, करें निश दिना बाग की रखबारी। या भाव की वार्ता सुन श्रीराधिकाजी नें डाट बताई कि मोकूँ नहीं जानै है। यह कहि पुष्प तोड़कैं सूँघन लगी तबही पुष्प में श्रीकृष्ण कौं मुरली बजाते सेन चलाते दर्शन कर आप विरह व्यथा सों व्याकुल हैकैं बैठ गई यहाँ श्रीराधिकाजी की कदम के नीचे गुप्त बैठक है)। और ललिताजी कौं पुकार कैं कह्यो, कि मैं कारे ने डस लीनो ये कहि बेहोस है गई ता समय बहुत से यतन कीने जब कछू होस आयो तब सखीं-घर लेगई। और वहां पै कीर्तिजी ने भी बहुत से इलाज किये पर अच्छी नहीं भई तब आप निज सखी सों बोली-रसखान कवि कृत-कवित्त—

काहे को वैद्य बुलावत हो मोहि रोग लगाय निज नाड़ी गहोरी।
चो मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहौ कैसे जियोरी॥

चन्दन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरोरी ।
और इलाज कछू न करौ वृजराज मिलै सो इलाज करोरी ॥१॥

जब ही श्रीकृष्ण सफेरे के भेष में आय कैं जन्त्र मन्त्र कर कान में फूँक मार बोले, मैं आय गयो देख तो सही, यह सुन श्रीराधिका जी तुरन्त उठ कैं बैठ गईं और हँसी। फुलवारीकुण्ड सों अग्निकोण दक्षिण में दगरो है तथा बांये खेत में पगडंडी भी सूधी जाय है। यासों मोतीकुण्ड दाहिनौं है। दगरे सों आयवे में बांयो है। यहाँ श्रीकृष्ण ने मोतीन कौ हार तोर कैं बोय दीनो (जोकि टीके में बृषभानजी ने भेजो हो) जब नंद बाबा ढूँढ़न लगे तब आप बोले, बाबा मैं लेगयो और वाय तोर कैं बोय आयो नन्दजी ने कही कि लाला तू बड़ो बाबरो है कहूं मोती बोये जाँय हैं यह सुन श्रीकृष्ण हाथ पकर कैं नन्द यशोदाजी ग्वालन कों मोती ऊगे दिखाये और कुण्ड सों निकासकैं ढेर लगायो उन मोतीन कों नन्दजी नें डला भराय कैं वृषभान के भेज दीने और नेगीजन संतुष्ट कीने हैं। यहाँ मुक्ता बिहारी कौ दर्शन हैं यहाँ मोतीदान होय है। ताके पास दक्षिणमें जात्राके डेरा परे हैं। वहाँ बांये हाथ कौं छोटी तलैया सो ईश्वरा ग्वाल की पोखर है। याके नैऋत्य बड़ो सरोवर सो पामरी कुन्ड (पान सरोवर) है ताके उत्तर पार पै श्रीमहाप्रभूजी की बैठक है। यहाँ श्रीमहाप्रभू जी ने मास परायण कीनो है। यहाँ दुशाला को दान होय है। (दुशाला कों पामरी और कम्बर को कामरी कहैं हैं) श्रीकृष्ण के विवाह के समय नन्द बाबा ने यहाँ दुशाला बांटे हे। जो गिडोये हैकैं न आवे तो यहाँ सों यात्रा जायवे को क्रम—पामरी कुन्ड सों ईश्वरा ग्वाल की पोखर (डेरान के दाहिने हाथ पूरबमें है) ताके उत्तर में मोतीकुन्ड है ताके वायव्य में फुलवारी कुन्ड ताके पूरब में पगडंडी सों साँस की कुन्ड है (एक मील अनुमान

नन्दगाम सों दगरो उत्तर में छाछ कुन्ड के पास हैकैं साँसकी कौ जाय है मोतीकुन्ड सों भी पूरब में नीम वृक्ष के पास याही में आय मिलत है) यहां एक दिन आप गौअन के पीछे भगते भगते हिरान है गये तब यहाँ बैठ कैं साँस लियो हो याते साँसकी कुन्ड हैं यहाँ ठाकुरजी की बैठक है ताके अग्निकोंण में श्याम पीपरी के नीचे श्यामा गाय की बैठक (यह पेड़ टूट गयौ है कुछ ऊपर कौ हिस्सा है) ताके पास पूरब में सड़क फाँद कैं पगडंडी सों ८-१० खेत अग्निकोंण में टेरकदमहै यहाँ कच्चौ कृष्णकुन्ड है एक घाट दक्षिणमें पक्कौ है ईशान में एक पक्कौ चौंतरा है वहाँ श्री कृष्ण की बैठक है। गौअन के चरवे कौ यह स्थल है। आगे एक चौंतरा पूरव में है वापै एक कदम कौ वृक्ष (वा वृक्ष की संतती है) जापै चढ़ कैं आप बंसी में गौअन के नाम लेकैं टेरते हे। गोपीगीत भा. द. ३५ अ. २२-२३ श्लो. यही बंसी गान की ठौर है। —कदम चढ़ कान्ह बुलावत गैया। मोहन मुरली को शब्द सुनत ही जहाँ तहां ते उठि धैया॥ आवो आवो सखा संग के पाई है इक ठैया। गोविंदप्रभू बलदाऊ सों कहन लागे अब घर कों बगदैया। लेओ टेर कदम चढ़ ऊंर दूर जात हैं गैया ॥१॥ यह पद यहीं कौ है। यहाँ रासधारी गौचारन लीला करैं हैं यात्री गौअन कों लड्डू गुड़ खबावैं हैं। बहुत सी गऊ यहाँ प्रतिदिन आवैं हैं।

यहाँ घाट के पास रूप सनातन गोस्वामी की कुटी है (गौड़िया बंगाली संप्रदाय के गुरु) इनकौ एक दिन खीर (दूध पाक) खायवे की इच्छा भई तब श्रीराधिकाजी स्वर्ण कटोरा भर कपड़ा सों ढककैं लायीं और कह्यो अरे साधू मेरी मैया ने तेरे काजें यह खीर भेजीहै। सो खायलै आपने वह कटोरालेकैं पूछीतू कौंन की बेटी है। जबाव—अहीर की हों। मेरी गैया देख भगी

जाय है। मैं आय कैं कटोरा (बेला) लेजाऊँगी । यहि कहि कछू दूर पै जाय अन्तरध्यान है गईं साधू नें कपड़ा उठाय कैं कंचन पात्र देखौ बस साधू देखते ही व्याकुल है गयौ। और समझ गयौ कि श्री राधिकाजी के सिवाय मेरी इच्छा, कौन जाने? और ये स्वर्ण पात्र भी उन्हीकौ है। अब आमन देउ,वे क्यों आयवे लगीं? हे मित्रो! यह ऐसी चमत्कारी भूमि है। जहाँ श्रीराधा कृष्ण नित्य बिहार करै है। आगें दक्षिण में दगरो है तासों थोरी दूर पै (पूर्व में) दो तीन खेत दूर आसकुंड आसेस्वर महादेव कौ दर्शन है। श्री कृष्ण के दर्शन कौं, कैलास सों आस लगायकैं व्रज में प्रथम ही यहां आनकैं विराजे हैं। पीछैं नन्दभवन जाय अलख जगायौ है तब जसोदा जी नें दर्शन करायौ है।

नोट—विशेष लीला आगे जोग कुन्ड सों लिखी है।

या कुण्ड के पश्चिम सेठ बिहानी बारे कौ बगीचा है। दगरे के सहारें बगीचा के अग्निकोंण में कूआ है। जाके पास में एक छोटो कच्चौ बिहार कुण्ड है। आगें दगरे सों दाहिने खेत में मोर कुहक कुण्ड है। यहां श्रीठाकुर जी मोरन के संग नाचकैं कुहकत हे। आगे गामके ईशानकोंणमें कृष्ण कुंड है। यहाँ माला-धारी कृष्णकौ दर्शन है मालानकौ पहरे गौराजसों सुशोभित संध्या समय जब गौ चरिकैं बनसों आतीं वा समय यहाँ ठाढ़े हैकैं मणिन की माला सों गौअन को गिनते, मणिधरः क्वचिदा गणयन गा मालया भा० द० ३५ अध्याय १८ श्लो० । और पूरी गिनती हैवे पै खुश हैकैं नाचते तासों नृत्य गोपाल हू कहैं हैं। राग पूर्वी—गायन के पाछैं पाछैं नटवर काछैं काछैं बन्यो है। टिपारो आछो लाल गिरधारी के। धातू को तिलक किये बनी गुँजमाल हिये, बनिके शृङ्गार सब विपिन बिहारी के नटवर भेष किये ग्वाल

बाल संग लिये गावत बजावत देत कर तारी के ॥ गोविन्द प्रभू बनते व्रज आवत दौर २ व्रजनारी झाँकत मध्य जारी के ॥ पुनः आगें गाय पाछैं गाय इत गाय उत गाय गोविन्दा को गायनहीं में बसवोही भावै । गायन के संग धावें गायन में सचुपावें गायन की खुर रज अङ्गसों लगावें । गायन सों व्रज छायौ वैकुण्ठहू बिसरायौ गायन के हेत कर लै उठावें । छोत स्वामी गिरधारी विट्ठलेष बपु-धारी ग्वारिया को भेष धरें गायन में आवे ॥ आगें सड़क फांद-कें दगरौ, गाम कौ बांयों देकें डेरान कों जाय । ताके पहिले नन्द भवन की पलकारिन के पास, दगरे के दाहिने हाथ कों एक शिखर दार छठियारी देवीको मन्दिर छाछ कुन्ड है । यह गामकी शीतला देवी है बाल-रक्षा के हेत नन्द यशोदा नें पूजी है । और छाछ सों स्नान करायो है छाछके स्नानसों यह बड़ी प्रसन्न रहै हैं गौ कीपहिले दिनकी सब छाछ इनपै चढ़तो ऐसी याकी मानता ही और श्रीकृष्ण गौ चरायवे बन में जाते तब यह ग्वालिन के भेषमें जायकै छाछसों सेवा करती सो श्रीकृष्ण ने याको नाम छठियारी धर दीनो हो ।

दूसरे दिन की परिक्रमा—कृष्ण कुण्ड कौ बांयौ देकैं कूआ के पास पूर्व दगरे सों, पास ही दाहिने हाथ कौ बहकबन पेड़न के भीतर छोटो चौंतरा मढ़ी है ताकौं महादेव जी की बैठक कहैं हैं । कृष्ण कौ दर्शन नहीं भयौ । याते महादेवजी बहके २ डोले हे । आगें दगरे के दाहिने जोगधूनी जोगकुण्ड । यहाँ आसन लगाय शिवनें अलख जगायौ है । पीछैं यहीं सों सखी नन्दभवन ले गईं हीं आगें पूर्व में पास ही बांये हाथ कों झगरा कुन्ड । यहां ग्वाल-बालन में (छाक समय) झगरौ भयो [यहां कूआ के पास कदम्ब के पेड़ में भंडारो है । यहां सों सामिग्री काढ़ काढ़ कैं दीनी ही] ताके आगें दाहिने हाथ कों कदम्बन में भण्डार कुन्ड है । यहां सों

ईशान बमूरन के पेढ़न में कदम्ब हैं। तहाँ लेऊ कुंड है। यहाँ लेउ २ कहि कैं परोसते हे। याकों बांयों देकैं नहर की पटरी २ दक्षिण पुलते दाहिने हाथ कौं पहले खेत में पीलून के वृक्ष, दगरे के सहारे अक्रूरजी की बैठक है। अक्रूर मथुरा ते सबेरे के चले संध्या कों आये। भा० द० ३८ अध्याय २४ श्लोक तब वृज रज में चरण चिन्ह देखकैं यहाँ लेटे हे। श्लोक २६। गौ दुहिबे की समय कृष्ण बलदेव ने अक्रूर जी कौ दर्शन कर हाथ पकर कैं घर लै जाय आसन मधुपर्क ॥३८॥ आदि पूजन करि बैल भेटमें दीनों ॥३९॥ अक्रूर (स्वकल्प के पुत्र) सों काका कहिकें बड़ौ सन्मान कर सँदेसो पूछौ है। आगें याही दगरे सों दाहिने हाथ कों वस्त्र बन, वस्त्र कुण्ड है यहां वस्त्र दान करनौ चहिये। कदम के पेड़ के नीचे जड़ में गौके खुर कौ चिन्ह है। यहाँ ग्वारिया भेष के वस्त्रन कों परित्याग करौ है। यहाँ सों रथ में बैठ गाही दगरे सों मथुरा गये। प्रातःकाल के चले सायंकाल कौं श्रीयमुना किनारे अक्रूर घाट मथुरा में पहुँचे हे। विशेष कथा अक्रूर घाट मथुरा में लिखी है। आगें थोरी दूर या दगरे के सहारे दाहिने हाथ पीपर कौ वृक्ष है। ताके सामें दक्षिण बांये हाथ कौं पगडंडी खेतन में हैकैं जाय है। जोसघन वृक्षावली नेऋत्यमें दीखै है वही पाड़रबन है।

यहाँ एक पक्की गोल चौंतरा—जाके चारों बाजू पक्की भींत (दीवार) कमर भर ऊँची बनी है यहीं नन्दवृषभान समागम की ठौर है। जब नन्दजी प्रथम यहां आये हे तब श्री वृषभान जी यहाँ आयकैं मिले हे। और कह्यौ कि आप या पर्वतपै निर्भयतासों रहो (वृषभान राजा कौं भानोखर पै कंस के स्त्री हैवे की बात मालूम ही कि असुर मेरे राज्य की सीमा में नहीं आय सकैं या ही लियें नन्दबाबा कौं निर्भयता सों रहवे की बात कही और या प्रकार नन्दगाम बस्यौ। सो नन्दजी ने नन्दग्राम बसायौ है।

ताके पास ही कचौ मोहन कुन्ड है जिने उद्धव के क्यार कहैं हैं। यह सब विशाखाजी की कुंज है। उद्धवजी जब यहाँ आये हैं तब सों यह उद्धव क्यार विख्यात है असल में उद्धव क्यार नहीं है। यहाँ (भ्रमर गीत) उद्धव गोपी सम्वाद भयो है। ता समय भ्रमर रूप में श्री कृष्ण गोपिन कौं दीखे हे ताहि देखकें गोपीश्यामसुन्दर के मोह कौं प्राप्त भईं हीं तिनके प्रेम कों देख उद्धव जी मोहित है गये ता समय (मोहसों) गोपिन के अश्रुपात बहे, सो जल धारान कौ यह मोह कुंड है। याके वायव्य ललिता कुंज, ललिता मोहन कौ दर्शन हो वो मूर्ती नन्दभवनमें गई। यहाँ ललिता कुंड ललिता जी के सङ्ग हिंडोरा झूलन कौ ठौर है। यहाँ सों वही विशाखा कुञ्ज (उद्धव क्यार) दक्षिण में लौट कें जाय कूआ के पश्चिम मेंउद्धव कुन्ड है। पूर्वमें सिंहासन(कदम्बके नीचे)उद्धवजीकी बैठक है। यहाँ पहिले बिशाखाजी की बैठक ही। उद्धवजी पधारे जब विशाखाजीने प्रथम स्वागत कर यह आसन दीनौ है। याके दक्षिण कदम्बन के बीच चौक में विशाखा कुण्ड है। यहां बड़ौ सुंदर देखने योग्य रास होय है। गोपिन कौ प्रेम सबकों प्रेमी बनावै है। कृष्ण वियोग रुबावत है। (या कृष्ण वियोग कौं ब्रह्म संबंधी जन ही विशेष जान सकेंगे) आगें कदमखंडी सों नैऋत्य जाय, वहाँ एक छोटो सो बाग है। तहाँ पलकारी चढ़कें एक कुटी है। वहीं एक नंद बैठका है। ताके पीछे नंद पोखर है। तहाँ सों दाहिने हाथ कों वायव्य में यसोदा कुन्ड तथा यशोदाजी कौ दर्शन है। यहाँ दो हाऊ बिलाऊ हैं। जब श्री कृष्ण बछरान के संग यहाँ आयकें खेलते हे तब यशोदाजी छाक लेकें आवत हीं तब डर-पाइवे कौं कहतीं—दूर खेलन मत जाउ लाल यहां हाऊ आये हैं। हँस कर पूछत कान्ह मैया यह किनै पठाये हैं॥ आदि,ताके पश्चिम में पदमकुंड है यहाँसों उत्तरमें गामके पास दाहिने हाथ कोठरी में

नरसिंहजी कौ दर्शन हैं। ताकैं पश्चिम नैऋत्यमें बायें मकसूदन कुण्ड [यहाँ दो मीठे कूआ हैं] उत्तर नन्दभवन जायबे कौं रस्ता है। ताकैं पहिले दाहिने हाथ कौं एक हाथरस वारे मारवाड़ी की धर्मशाला है ताकैं सामने पश्चिम में एक छोटी सी कोठरी में माँट (जामें एक आदमी ठाड़ो है सके) धरती में गढ़ो है। याकों यशोदाजी के दही बिलोयवे कौ कहैंहैं। आगे याकों दाहिनों देकैं पश्चिम नैऋत्य में (कामा दगरे के सहारे वृक्षावली में) बेलकुण्ड है। लाला कींबेल बढ़े ऐसो बेल बधायो गायो है। ताकैं उत्तर नंदगांमसां पश्चिम नैऋत्यमें पनिहारी कुंड है। यहाँ गोपी पानी भरवे कौं आवत हीं श्रीकृष्ण गागर में कंकर मारकैं फोर डारते। गोपी यशोदाजी कौं उराहनो देवे जातीं। पनिहारी कुंड सों ईसान में छौटी चरणपहाड़ी लौट आवे। ऊपर छत्री में भगवान के चरण कौं चिन्ह है। यहाँ चौडोखर (चरन कुण्ड) है यहाँ रोहिणी जी ने कृष्ण बलदेव की चौटी गुही हीं आगे उत्तर रोहिणीजी कौ रोहिणीकुंड तथा मोहनीकुंड पास पास हैं। यहाँ, मोहिनी रूप बनायो हरि वानो ताकैं पास गोपीनाथ ग्वाल की पोखर है पामरीकुंड के मोड़ पै सामने ही खेतन में पत्थरन के (गायन के) खूँटा हैं यहाँ गौशाला मैं गौ बँधती हीं आगें ग्वाल पोखरा, जाय पहिले लिख चुके हैं।

तीसरे दिन ॥ नन्दभवन—यहाँनन्दोत्सब होय है। एक दिन संध्या कैं ३-४ दजे श्री महाराज (बालक) और यात्री सब मिलकैं नन्दभवन में नाचैं हैं तथा मिठाई लुटावैं हैं। नन्द के आनन्द भयो जै कन्हैयालाल की, आदि कह कैं जन्माष्टमी की लीला करैं हैं। गुलाल, दही, हरदी सों दधिकादों मचत है। चारों बाजू के ब्रजवासी मेला देखवे कों आवैं हैं। दर्शक ऊँचे बैंठ कैं

आनन्द लूटै हैं। मंदिर में दर्शन—नन्द यशोदा तिनके बीच कृष्ण बलदेव, यशोदाजी के दाहिने (उत्तर) श्री राधिकाजी सास की ओट में हैं, उनके उत्तर में रेवतीजी, श्रीदामा, मनसुखा (ललिताकुन्ड की निधि) ललितामोहन जी पौरी में बूढ़े बाबा महादेवजी निकसत ही दाहिने किवार के पीछे (आप यहां जोगी रूप सों दर्शन करवे आये हैं) यह पर्वत भी पिण्डी के आकार शिवस्वरूप हैं। पहिले लिखे जोगकुण्ड पै जायकें गोपिन नें पकर कैं शिव सों कह्यौ।

राग भैरव—चलरे जोगी नन्दभवन में यसुमति तोहि बुलावै।
लटकत लटकत संकर आवै मन में मोद बढ़ावै॥
नन्द भवन में आयो जोगी राई नोन कर लीनो।
बार फेर लाला के ऊपर हाथ शीश पर दीनो॥
विथा भई सब दूर बदन की किलक उठे नदलाला।
खुशी भई नदजू की रानी दीनी मोतियन माला॥
रहुरे जोगी नन्दभवन में ब्रज को बासो कीजै।
जब जब मेरो लाला रोवै तब तब दर्शन दीजै॥
तुम तो जोगी परम मनोहर तुमको वेद बखानें।
(शिव बोले) बूढ़ो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहि जानें॥

आगे उत्तर में पौरसान के कछू उतर के दाहिने हाथ कौं विलास भवन में श्रीराधा संग नन्दनन्दनजी कौ दर्शन है। बांये पश्चिममें सिखिरदार मन्दिर गोरधननाथ जी कौ दर्शन है यहांसों करहला मुकाम जाय है ताके रस्ता ३ हैं। नं० १—ब्रजवारी गाम किशोरीकुण्ड हैकैं आजने जाय मिलें। या रस्ता गाड़ी जाय हैं। नं० २—अग्निकोंण पूरब में उद्धव क्यारिन कौ दाहिनो देकैं दगरे सों पगडंडी (यामें पूरनमासी डोमन बन छूट जाय है)

आजने जाय मिले है। नं० ३—यात्रा कौ असल रस्ता—सूर्यकुण्ड नवीन मन्दिर पुष्टिमार्ग की सेवा कौहै, धर्मशाला के पास हैकैं उद्धव जी की कदमखण्डी ताकौ वाँयो देकैं अग्नि कोंण में १ मील पूरन-मासी कुण्ड है। (नन्दजी की प्रोहितानी जी कौ) याकौं बांयों देकैं अग्निकोंणसों दगरो दक्षिणमें है पासही डोमनबन (दोऊ मिल बन) भीतर घुस कैं पूरब जाय तहाँ रुनकी कुण्ड छोटी सी मढ़ी के पश्चिम कदम्बन में है। ताके पूरब पक्की तिवारी में राधाकृष्ण सालिग्राम हनूमानजी संतनकी सेवा कौहै,ताकेपिछारी झुनकीकुन्ड है ये रुनकी झुनकीद्वै सखी हीं तिनकी कुञ्ज हैं, ये दोनों सलाहकर एक दिन, एक राधा जीके पास गई एक कृष्ण के पास जाय बुलाय लाईं। राधाजी सों कही कृष्ण बुलावैं हैं और कृष्णजी सों कही कि राधाजी बुलावैं हैं ऐसी चतुराई सों दोनों मिलाये। दोहा—इत सों आई कुमरि किशोरी उत सों नन्दकिशोर, दोऊमिल बन क्रीड़ा करत बोलत पंछी मोर। पीछे अपने घर(आजने गाम)लेगई वहां हिंडोरा में दोऊ बैठार कैं दोउन नें मिलकै झुलाये। माखन मिश्री आरो-गायो गाम के पक्के मकानन के उत्तर में नहर के पुलसों उतर पूरव

आजनों (अंजन बन)

(पाद्मे) ओं सौं अञ्जन प्रति बनाधिपतये पुन्डरीकाक्षाय स्वाहा। (२१ अक्षर मन्त्र) अस्य मंत्रस्य गृत्समद ऋषि रञ्जन प्रतिबनाधिपः पुन्डरीकाक्षो देवता अष्टीच्छन्दः मम सकल सौभाग्य संपत्फल प्राप्यर्थे जपे विनियोगः। (न्यास पूर्ववत्)

ध्यानं—अंजनाख्यबनाधीशं पुन्डरीकाक्षमव्ययं। ध्यायेत् प्रदक्षिणा सांगा त्यत्समीपे समर्थिता। इति।

गाम के पूरब में अजनोखर झूला की ठौर। यहां माखन

मिश्री दान करे। श्लोक० धन्यागोकुल कन्या वयमिह मन्या महे जगती। यासां नयन सरोजे अञ्जन भूतौ निरञ्जनो वसती ॥१॥ यहाँ एक सुरमा की पहले सिला ही जापै श्रीकृष्णनें उंगरी घिसके राधिका जी के अंजन लगाय आँजो कुन्ड में हाथ धोये तब सों आजनो गाम, अजनोखर नाम भयौ है। यहाँ सो ईशान में—

लुधौली

(श्रैधरोपनिषदि) ओं श्रैं ललितागामाधिबनाधिपतये ब्रज किशोराय नमः (२१ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य विभाण्डक ऋषि ब्रजकिशोरो देवता गायत्री छन्दः सकल पापक्षय द्वारा युगल कृष्ण दर्शनार्थे जपे विनि योगः (न्यास पूर्ववत्)।

ध्यानं—ललिता संयुत कृष्ण सर्वाभिः सखीभियुतं। ध्यायेत त्रिवेणी कूपस्थं महारास कृतोत्सवम्। इति।

गाम के अग्निकोंण सों रस्ता घूम कैं उत्तर में गाम बाहर ललिता कुन्ड ताके पूरब पार पै ललित बिहारी कौ दर्शन है यहां दोऊ मिल पधारे तब ललिताजी नें दही की छाक दीनी है यहाँ दही दान करे। या गाम सों अग्निकोंण में जाय, आगे दगरो है तासों पूरब में दो मील—

करहला

कमई और करहला भगवान के नितम्ब देश है।

(ध्योम्योपनिषदि) ओं ह्रं करहप्रतिबनाधिपतये मुरलीधराय स्वाहा (२० अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य मरीच ऋषि करह प्रतिबनाधिपो मुरलीधरो देवता पंक्तीछन्दः ममानेक सुख कृष्ण दर्शनार्थे जपे विनि योगः (न्यास पूर्ववत्)।

ध्यानं—करहप्रतिबनाधीशं मुरलीधर संज्ञकम्। गोपीभिर्मण्डितं कृष्णं ध्यायेद्यात्रा शुभ प्रदम्। इति।

यहाँ प्रथम ही दाहिने हाथ कौं कंकण कुण्ड है यहा महारास कौं कंकण बँधो है। यहाँ रास बिहारी कौ दर्शन है। हिंडोरा की ठौर श्री ललिताजी नें हिंडोरा में झुलाये हैं। कंकण बाँधो है। आगे गाम भीतर महल में पुराने मुकट कौ दर्शन है। गाम बाहर हवेली में नये मुकट कौं दर्शनहै। पासमें श्रीमहाप्रभूजी की श्री गुसांई जी की और गोकुलनाथ जी की तीन बैठक हैं (महारास को चौंतरा) कृष्ण कुण्ड ही श्रीनाथजी को जलघड़ा है यहाँ महाप्रभूजी के साथ श्रीनाथजी पधारेहैं। यहाँ के ब्रजवासी श्री कृष्ण रास लीला के ज्ञाता पंडित प्रेमीजन हैं जब यहाँ यात्रा आवैहै तब सब मण्डली मिल,मण्डल बनायकैं देखवेलायक लीला करैं हैं यहाँ यात्रा को मुकाम होत है। यहाँ की कदमखण्डी बड़ी सुन्दर है याकौं कजली बन कहैं हैं।

कजली वन।

(ब्रह्म यामले) ओं ह्रीं कजलीबनाधिप लक्ष्मीनारायणाय स्वाहा। (२१ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य शाण्डिल्य ऋषिः कजली-बनाधिपो लक्ष्मी नारायणो देवता जगतीच्छन्दः मम सकलवाहना-दि सोख्यलाभार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानं—कज्जलाख्य बनाध्यक्षं लक्ष्मीनारायणं हरिं बन्दे यात्रा प्रसंगस्तु सांग एव समर्थितः। इति।

कमई।

यह और करहरा भगवान के नितम्ब देश है। यहाँ कभी कभी यात्रा जाय है (करहला सों ३ मील दक्षिण नैऋत्य में हैंकै यहीं लौट आवै हैं अथवा लुधौली सों कमई होत करहला आवै) यहाँ दाऊजी कौ दर्शन तथा बलभद्रकुण्ड है रेवतीकुंड है सूर्य

कुंड, मुचकुंड क्षेत्र बाराहपुराण मथुरा माहात्म्य ७ अ० २७।२८ श्लोक कदमखन्डी में मुचकुन्द ऋषि की गुफा तपस्थल है।

पियासो गाम।

करहला ते कदमखण्डी कौं दाहिनों देकैं वायव्य कोने सों उत्तर में १ मील जाय गाम पास सों बाँये हाथ कों पगडंडी सों गाम के नैऋत्य कोने पै कदमखण्डी में किशोरीकुण्ड ताके वायव्य में स्यामतलाई स्यामजी की बैठकहै। यहाँ बैठ कैं आपने रासकौ श्रम दूर कीनों है। साथ में किशोरीजी सखिन सहित सबननें। अपने २ आँचरन सों ब्यार कीनी है ता समय आपने कही कि में पिसायों हों (ताते पिसायो गाम) सोही तुरन्त श्री राधिकाजी ने अपने प्रेम प्रवाह तरङ्गन सों जल प्रघट कीनो सो किशोरीकुंड है ता जलकौं कृष्ण ने पान कीनौं है। पुनः गोपीननें आपके चरणारविन्द धोये हैं। ता जल सों यह श्याम तलाई है। (याकौं पग प्रक्षालन कुंड भी कहैं हैं) श्याम तलाई को दाहिनों देकैं ईशानमें जाय, आगें सों दगरों उत्तरमें हैंकैं ३ मील खिद्रबन यात्रा जाय है, नोट—यहां सों छत्रबन (छातई) यात्रा नहीं जाय है सीधी खिद्रवन चली जाय है।

छातई (छत्रवन)

श्री प्रभू व्रजेन्द्र व्रजचंद श्री कृष्णचन्द्र भगवान कौं व्रज-स्वरूप विग्रह मुर्त्ति अङ्गविग्रह में छातई और लोहबन नैत्र माने गये हैं याको मंत्र ॐ त्रीं छत्रबनाधिपतये हरये स्वधाः इति (१४ अक्षर) याकौ आनंद ऋषि पंक्ती छंद हरि देवता मम सचक्र मुकुट रक्षणार्थे जपे विनयोगः

ध्यानं–ध्यायेच्छत्रवनाधीशं त्रैलोक्याधिपति हरिः ब्रजयात्रा कृता सिद्धा साङ्गमेव समर्पितः।

या श्लोक में हरि नाम जो प्रस्फुट है या हरि पद से श्री गिरराज ही प्रतीत होंय हैं याते मालुम पड़े है कि गिरराज उठाने कैं पहिले श्रीकृष्ण चन्द्रनें श्रीगिरराजकी प्रार्थना करीकि हे गिरराज आप मेरे छत्र होकर मेरे मुकुट चक्रादि की रक्षा करियो तासों या बन को नाम छातई पड़ो। उपरोक्त भागवत दशम पूर्वार्ध अ० २५ श्लो० १९।

खदिर (खिद्र) बन (खायरो गाम)

खदिरबन तथा भद्रकबन भगवान के स्कन्द हैं।

ओं ह्रां खदिरबनाधिपतये नारायणाय स्वाहा (१६ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य मेधातिथिः ऋषिं खदिरबनाधिपो नारायणो देवता जगतीच्छन्दः मम सकल भोग सम्पत्प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः

ध्यानं—ध्यायेन्नारायणं देवं खद्रीशं श्री रमाधिपं धनधान्य सुखं भोगं प्रयच्छ मम सर्वदा। इति।

खादिरन्तु वनंदेवी सप्तमं यत्र मानवः।
स्नान मात्रेण लभते तद्विष्णो परमं पदम् ॥१३॥
वृ० ना० पु० ७९ अ०।

यह ब्रज के १२ बनन में है। गाम भीतर हैंकैं पश्चिम सों बायव्य कौंने पै जाय वहां एक शिखिरदार गोपीनाथ जी कौ मन्दिर है ताकैं वायव्य में दाऊजी कौ दर्शन है। ताकैं पास दाहिने हाथ कौं महादेवजी कौ मन्दिर और बांये को (कुण्ड) पक्को घाट सामने सुन्दर छत्री पत्थर की है। भा० द० ३४ अ०।

यहां कृष्ण बल्देव दोऊ मिल (यात्रा सों आय कैं) गोपीन सङ्ग रास करो है तिनके गान कौं सुन कुबेर को टहलूआ संखचूड़ सब गोपिन कौं खदेर कैं (जबरदस्ती) लै गयो। श्लो० २६। (खदेर कैं लैचलो तासों खदिरबन नाम भयो है) तब कृष्ण बलराम दोनों, साल के लक्कड़ हाथन में लैकैं शंखचूड़ के मारवें कौं दौरे। उत गोपी डर सों डकरावत हीं। विनके चीर आभूषण गिर गये। तब उनको आवाज दै दै कैं आश्वासन दीनों, जब गोपीन को छोड़ प्राण बचाय शंखचूड़ भागो। दाऊजी यहां गोपीन के पास ठाड़े रहे। कृष्ण ने झपट कैं वाहि मारो और मस्तक सों मणी काढ़ लीनी और गोपीन कौं दिखायकैं दाऊजी कौं दीनी। याते दाऊजी गोपीनाथ दौनों कौ यहाँ दर्शन है। कुण्डलबन, चीरतलाई वहां गोपीन के कुँडल चीर गिरे हैं सो आगें यहाँ सों पश्चिम नैऋत्य १। कोस पै है। दक्षिण नैऋत्यमें यहांते ब्रजवारी, मदोखरा, किशोरीकुण्ड भी जाय सके हैं। जो कि गाड़ीन के रस्ता नन्दग्राम सों लिख चुके हैं यहाँ यात्रा पहिले जात ही या रस्ता में ३ मील अनुमान विशेष है बलभद्रकुण्ड कौ बायों देकैं बायव्य कोंने सों पगडंडी में हैंकैं पश्चिम में २॥ मील अनुमान–

जावट।

(धौम्योपनिषदि में किशोरीकुंड कौ मन्त्र) ओं क्लीं रंक-प्रतिबनाधिपतये नन्द किशोराय स्वाहा (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य पराशर ऋषिः रंक प्रतिबनाधिपो नन्दकिशोरो देवता वृहतीच्छन्दः। मम परमोत्सव दर्शनार्थे जपे विनि योगः। (न्यास पूर्ववत)।

ध्यानं—ध्यायेद्रंकबनाधीशं किशोरं नन्द नंदनम् बनयात्रा कृतां पूर्णां प्रयच्छ मम सर्बदा (इति)

गाम के दक्षिणमें पहिले ही कच्ची छोटीसी चुरी तलाई है यहाँ मनिहारिन बनकैं श्रीकृष्ण नें किशोरीजी कौं चूरी पहिराई हैं गाम के पश्चिममें चीर तलाईहै जाके दो बाजू पक्केघाट भी बनरहे हैं। उत्तर पार पै ब्रजमोहनजी कौ दर्शन याके पश्चिम में नटकुन्ड है (वहाँ पीछै जाँयगे) नट रूप सों यहाँ भैंसा पै सामान धर कैं नन्द ग्राम पाड़रबन सों आये हे, और बाँस पै चढ़कैं कुशलकला दिखाई जब किशोरी जी ने चीर (ओढ़नी) दीनों ताकों ओढ़कैं नाच दिखायो ता नाच कों देखकैं सब ब्रजबासी मोहित भये ताही सों यह चीर तलाई ब्रजमोहन जी कौ दर्शन है। यह देख श्रीराधिका जी पहिचानकैं बोली हे नटवर कहा मोकों छलवेकों पधारे हो। यह सुन हँसकर (दोऊ) मिले हैं यहां सों आगें पूर्वमें गाम बाहर किशोरी कुन्ड है। पश्चिम पार पै राधाकान्त जी कौ दर्शन है यहां एक दिन यात्रा मुकाम करै है। दक्षिण सों एक दगरौ यहाँ सूदौ चुरी तलाई कों बांयो देकैं आवै है। कुण्ड के पूरब पार पै बटवृक्ष हो सो टूट गयौ वहाँ पै एक हिंडोरा चौंतरा बनाय दीनों है। बा बटकी जटान में गाँठ मार कैं किशोरी जी कों आपने स्वयं झुलायौ हो। यहाँ श्रीराधिकाजी कौ (प्राचीन) मंदिर में दर्शन भी है। या मन्दिर कों बांयों देकैं दगरे सों आवें। गाम के बाहर पश्चिम में पाड़रकुण्ड है यहां पड़ा (भैंसा) कौ जल पिवायो है जब कि नट रूप सों आये हे। यहां नटवरजी (रूप) की बैठक है। याके दक्षिण दगरो ताके दक्षिण नीम वृक्षन के पास नट कुण्ड है। (लीला पहले लिख चुके हैं) इन दोनों कुन्डन के बीच दगरौ पश्चिम में सड़क फांद कें बमूरन के पेड़न में १ मील अनुमान—

कोकिलाबन

कोकिलाबन तथा भान्डीर बन दोनों भगवान के हस्त हैं।

(वृह्म यामले) ओं ल्कीं कोकिलाबनाधिपतये नटबराय स्वधा (१७ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः कोकिलाबनाधिपो नटवरो देवता अनुष्टुप्च्छन्दः मम कृष्ण विहार दर्शनार्थे जपे विनि योगः।

ध्यानं—कोकिलाधिपतिं देवं नट रूपं कलान्वितम् ध्यायेच्छु भकरंश्रीशं सांग यात्रा समर्थितः। इति।

कोकिला स्वर भूषण (विष्णु सहस्र नाम) यहाँ कोकिला के स्वर सों स्वर मिलायकैं बोले हे। तासों कोकिला बन नाम भयौ है। यहां कोकिला बिहारी कौ दर्शन है। ताके पास चतुरा नागा की बैठक है। यहाँ भी चतुरा नागा जी सेवा करते हे। या मन्दिर के दक्षिण में कृष्ण कुण्ड, पश्चिम में पनिहारी कुण्ड, इन दोनोंन के बीच श्रीमहाभूजी की बैठक है। पनिहारी कुन्ड के पार पै ललिताकूप ताके पास छत्री में महादेव जी तथा शनीचरजी कौ दर्शन है इनके वायव्य में कोकिलाकुन्ड है यहाँ गोपी पानी भरवे आती हीं जब श्रीकृष्ण पनघट पै रोकते हे। एक समय आप नें होरी के त्यौहार पै यहाँ होरी खेली हीं। होरी—छैल रंग डार गयौ मोरी वीर। भीगगयौ अति अतलसरोटा हरित कंचुकी चीर। घालत कुमकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर। ललित किशोरी कर बरजोरी मुख सों मलत अबीर ॥४॥ कृष्ण कुन्ड के ईशान में सूर्य कुण्ड है। याके वायव्यमें नहर की पटरी २ पौंन मील पुल है तासों पूर्व दाहिने हाथकों वृक्षावलीमें पांडव गङ्गा है। यहां अर्जुन नें बाण सों गङ्गा प्रकट कर युधिष्ठर आदि भ्रातन कों (जब कामबन में १२ वर्ष रहे हे) तब गंगा दशहरा के दिन गंगा स्नान करायो है और गङ्गाजीकौ पूजन कर गौदान दीने हैं याते यहाँ गौदान कौ महात्म्य है।

पान्डव गङ्गासों ईशानमें पौन मील वृक्षावली कुमरवन, कृष्ण

कुमार कुन्ड है (याहि भूल सों कौरव बन कहैं हैं) यहां कुमर पदवी भई है। पांडव गङ्गा सों नहर कौ पुल फाँद कैं नैऋत्य में बड़ी बठैन (बड़े भाईकी गौ बैठवेकी जगह) है। अथवा कोकिला बनसों (पांडव गङ्गा के रस्ता कों छोड़कैं) नहर पार पगडंडी,दगरो पश्चिम वायव्यमें सूधौ बठैन दीखै है। गामके पहिले दाहिनें जय कुन्ड बांये बिजयकुन्ड ताके पश्चिममें सनकसनंदन,सनातन सनत कुमार कुन्ड हैं। गाम भीतर पूरब में बलभद्रकुन्ड, दाऊजी कौ दर्शन है। यहाँ ते पश्चिम चौपार कौ बाँयौ देकैं गाम बाहर वायव्य कौने पै रेवती कुन्ड है। याकौ दाहिनो देकें पश्चिम में एक मील छोटी बठैन (छोटे भाई की गऊ बैठवे की जगह) है ये दोनों बठैन छोटे भाई की तथा बड़े भाई की गौ बैठबे की जगह दायबन (हिस्सा बाँटनौ) हैं। गाम के नेऋत्य में साक्षी गोपाल कौ दर्शन, ताके पास गोपाल कुन्ड है। गाम के वायव्य कौने पै वैदोखर (कुन्ड) है। वैदो सखी गऊ बैठवे की जगह साफ कर कृष्ण कौं नित्य छाक लायकै देती ही। यहाँ ते कूआ कौ दाहिनों देकैं उत्तर में दगरे सों एक मील (जहाँ पक्के मकान) दीखै हैं)।

चरणगङ्गा

यहाँ (कोटबन की लीलाके समय) गोवरधन लीला दिखाई है। इन्द्र ने यहाँ चरण धोये हे जासों चर्णगङ्गा भई। यहाँ गठ जोड़ा सों स्नान कर गौदान करै। याके पास राधाकृष्ण कौ मन्दिर में दर्शन है। ताके दक्षिणमें पास ही चर्ण पहाड़ी (छोटी) है। यहाँ दाऊजी के तीन चरण (बड़े २) हैं। तहाँ छत्री में भगवान कौ चरण चिन्ह है। याके पश्चिममें घोड़ा ऊटके पगकौ चिन्ह है तासों ऊँचे पैहाथी कौ पग है। सुरभी गऊ कौ खुर है। कोठे काँकरकौ चिन्ह है। (यहाँ सों रासोली गाम उत्तरमें २॥ मील है) कामर ३

मील है। कूआ कों बाँयों देकैं पश्चिम पगडंडी सों जाय। सामने दो वृक्ष कदम पीपर के हैं ताको दाहिनों देकैं पश्चिम में (बगीचा सों आगे) नहर कौ पुल पारकर पश्चिम नैऋत्य में दगरे सों जाय (अथवा सूधौ खेतन में हैकैं) आगे आढ़ौ दगरो और भी है। (उत्तर में लालपुर दक्षिण में पीपर वारौ) ताके पश्चिम में (पीलू वृक्ष जङ्गल) कदम खण्डी है। यह बिहार बन है, बिहारी जी कौ दर्शन है कृष्ण बिहारकुन्ड है। यहाँ चौंतरा पैरोमने कृष्णकी बैठक है। यहाँ कृष्णकी कामर चुराय लीनी तब यसोदाजीके सामने रोये हे। पद—मैया मोरी कामर चोर लई। कोऊ कहै कान्हा तेरी कामर सुरभी खाय गई। कोई कहै कान्हा तेरी कामर यमुना में जात भई। कोई कहत नाचो मेरे अँगना ले दऊ और नई। सूर श्याम यसुमति के आगे असुअन धार बही ॥ मैया० ॥ कदमखंडी के वायव्य में गोप कुन्ड है। ताके वायव्य में सूर्य कुन्ड पक्कौ है याहि गोपी कुण्डहू कहैं हैं। यहाँ गोपीनाथजीकौ दर्शन है मन्दिर के पश्चिम में दगरो है। (याते दहगाम गाड़ी जात हैं) ताके पास हरी कुन्ड है। ताके दक्षिण धोमन कुन्ड यहां यशोदाजी नें वस्त्र धोये हैं याहि यशोदाकुन्ड कहैं हैं। यागे गाम के अग्नि-कोंण दक्षिण भाग में चन्द्रकुन्ड है। यामें सों मोहनजी की मूर्ति गिरधरजी नें प्रघट करी ही तबसों याहि मोहन कुन्ड भी कहैं हैं। यहाँ मोहनजी कौ दर्शन, गिरधरजी की बैठक कुन्ड के उत्तर पार गाम के कौने पै है।

गाम के बीच (सिद्धकी) सुकदेव व्यास कुन्ड है। गाम के वायव्य कंकण कुन्ड यहाँ राधिका जी ने कंकण पहिरौ है। आगे वायव्य उत्तर में, दगरे सों रस्ता १॥ मील दुर्वाषा आश्रम (यहाँ दुर्योधन नें पाण्डवन कौ नाश करवे कों कामबन दुर्वाषा भेजे हे) यहाँ छोटी सी धर्मशाला भी बन गई है। यहां दुर्वाषा कुंड

द्वै ओर सों पक्को बनों है। यहां सो इशान उत्तर में थोरी दूर नहर है। ताकी पटरी पटरी ईशान में जाय। आगे बांये हाथ कौं उत्तर में लालपुर गाम दीखै है वहाँ नहीं जाय। द्वै पुल छोड़ तीसरे पुल पास दाहिने पूरब में दगरे सों ५-६ खेत दूर दहगाम जाय। गाम के उत्तर वायव्यमें दधिकुँड,दधिहारी देवी कौ दर्शन हैं। यहाँ भादों सुदी ८ आठें कौ मेला भी होय है यहाँ (कोटबन लीला में) दधि लीला दिखाई है। गाम के पूरब (बड़े फाटक) में ब्रजभूषण जी कौ दर्शन है। ताके पिछारी ब्रजभूषन कुंड है। याके अगारी भामनीकुंड यहां पूर्व कदम्ब में पखावज, मुकट कौ चिन्ह है। कामर सों दुर्वाषा होत ५ मील अनुमान है सीधो ३॥ मील है। यहां सों कोटबन ईशान में २ मील दगरो है। भामिनी कुँड कौं दाहिनो देकैं दक्षिणमें जाय। बांये हाथ के, पहले दगरे कों छोड़ कैं दूसरे सों पूरव,नहर पुल सों (कोसीके दगरे कों छोड़) अग्निकोणमें पगडंडीसों २ मील रासोलीगाम हिंडोरा की ठौर रास चौंतरा ताकैं दक्षिण में रासकुँन्ड है। ताकैं अग्निकोंणमें कुंडको बाँयो देकैं छोंकराके नीचे छोटोसौ चौंतरा सिंहासन है, वह श्री गोकुलनाथ बाबा की बैठक है यहाँ आपने श्री भागवतजी सप्ताह कौ पाठ कीन्हो है। यहाँ जसोदाजी कों रासलीला दिखाई है सो गोपीजन नाच रहीं दीखीं (वहाँ आप दहगाम में दधि खात दीखे हैं) ता समय श्री यसोदाजी नें कह्यौ कि अरी भामिनियो! मेरो लाला तो निर्दोष ब्रजभूषण है। तुम ता कहतीं कि गोपीन के सङ्ग नाचै है यह तो ग्वालन में दधिलीला करैं है तुम सब झूँठी हो। बस २ मैंने सब रास देख लियो (यहाँ कोटान लीला [कोटबन की] दिखाई है) या झूला कौ दाहिनों देकैं गाम के उत्तर में एक कूआ है (गाम के ४-५ घर रह गये हैं) ताको बांयो देकैं उत्तर पगडंडी सों जाय आगे पूरव पश्चिम में आड़ो दगरो

आवेगो ताहि फांदकैं उत्तर में जाय। आगे एकबड़ौ पीपर कौ वृक्ष है ताकों बायों देकैं उत्तर में बमूरन के किनारे २ भीतर जाय :आगे कछू हींसन के वृक्ष हैं, ताकें आगे कदमखंडी है तहाँ दो कदम्बन के बीच कच्चौ सिंहासन है सो श्रीनाथजी की बैठक तथा श्रीनाथजी कौ जल घड़ा है ताको निसान अग्निकोंण में एक पक्की छोटीसी (कूआ की) कोठी है,यह रासोली सों १ मील है। आगे १ मील सूधो उत्तरमें पीलू वृक्ष नोंनिया माँटी कौ बन है। रस्ता के सामने ही पक्को मकान दीखै है (वृक्षावली कछुक नागफनीन के बीच में) तहां श्री महाप्रभू जी की बैठक ताके पूरब दरवाजे पै एक पक्को घाट शीतलकुन्ड है और एक मीठो कूआ है। यहां आपने भागवत जी कौ सप्ताह पाठ कीनों हो। यहाँ श्रीठाकुर जी ने स्नान कर श्रम दूर कीनो है यह पहले श्री ठाकुरजी की बैठक ही। यहाँ सों उत्तर में आधी मील—

कोटबन गाम।

यहाँ कोटन कुञ्जन में कोटन लीला दिखाई हैं। यहाँ यसोदाजी ने कही कि लाला मैंने सुनी है कि तू गोपीन के सङ्ग रासलीला करें हैं सो तू एक दिन मोकों दिखाय,तब श्रीकृष्णनें विचार कीनो कि गोपी मैया के सामने कैसे नाचेंगी। तब आपने अपनी इच्छा शक्ति करकें कोटन चौक रचे हैं। वहाँ पहले कहीं आदि तथा और भी लीला, गौचारन, कालीनाग, कहूँ ग्वाल नाचैं कहूँ, गोपी नाचैं, कहूँ दधि लीला आदि कोटन लीला दिखाई हैं। जिनें कहाँ तक लिखें। कोटबन ग्राम के उत्तर में सूर्यकुण्ड है यहाँ कोटन सूर्य(कृष्ण की)स्तुति करते दिखाये हैं। यहां एक दिन मुकाम रहै है। आगे पश्छिम सड़क २ मील जाय। जहां नहर कों पुल आवे वाके पारसों उत्तर में दाहिने हाथ की पटरी २

जाय। आगे रेल की पटरी सों पश्चिम बाँये हाथ कों सिंगल तक जाय। (भुलबानों गाम बाँये हाथ कों है) दाहिने कों भूलन बन याहि चमेली बन हूँ कहै हैं यहां आपने यसुदा आदि गोपिन के ज्ञान कों भुलायो है जो कि कोटन लीला देख कृष्ण कों ब्रह्म निश्चय कर चुकी हीं यह कोटबन सों चार मील है। बनके भीतर पूर्व ईशान में पगडंडी सों जाय। बांये हाथ कौं सघन वृक्षन में गोपाल कुन्ड है ताके पूर्व दाहिने हाथ कौं छोटी सी रामतलाई है। आगें बाँये हाथ कों मकान के पीछे हनुमानकुन्ड व हनुमानजी कौं दर्शन है। यहाँ रामावतार की लीला दिखाई हो शिवरी के बेर खाये हैं यह भी कोटबन लीला स्थल है। यहां सों ईशान उत्तर में कदम खण्डी के बाहर निकस जाय आगें पूर्व में दगरेसों नहर तक आगें उत्तर में पुल है। ताके बांये हाथ विजयगढ़ विजयकुन्ड जहाँ कामदेव नें कृष्ण की विजय कबूल करी है। यहां यात्रा नही जाय है। पुलसों पूर्व दाहिने हाथ हतानों गाँम दीखै है हत+आनों =हतानो। गाँम के पश्चिम में रतीकुन्ड, पूर्व में हरिहार कुण्ड; यहाँ कामदेव हत हैकैं रती के पास आयौ है। याहि गाम के लोग हरद्वार कुण्ड कहैं हैं। हरिहार को अपभ्रंश है गयौ है। या कुन्ड कों दाहिनों देकैं २॥ मील पूर्व ईशान में दगरे सौं बड़ी नहर कोसीवारी मिलैगी, या पुलसों पूर्व ईशान में थोड़ी दूर पै—

शेषसाई गाम

शेषसाई और परमदरों भगवान के नासा छिद्र हैं (भारद्वाजोपनिषदि) ओं षां शेषशायिबनाधिपायाच्युताय प्रोढ़ानाथाय नमः। (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य रुद्र ऋषिः शेषशयनबनाधप प्रोढ़ा नाथाच्युतो देवता अक्षरा पंक्तिछन्दः। मम लक्ष्मी सौख्यप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः (न्याबास पूर्ववत्) ध्यानं—बन्दे

शेषशयानमीश्वर प्रभूं लक्ष्मी पदाब्जे रतं। प्रोढ़ा नाथ मंजुगुणाधिकवरं नारायणं सुन्दरं। इति।

यह कोटवन सों सूधो ५ मील, चमेली बन हैकैं ८ मील है। यहां पोढ़ानाथ भगवान कौ दर्शन, शिखिरदार मन्दिर में है। यहाँ बल्देवजी शेषरूप धारण कर सैया बने हैं। कृष्ण विष्णुरूप सों पोढ़े (सोये) हैं, श्री राधाजी लक्ष्मी रूप धर चरण चाप रही है, नाभि कमलसों ब्रह्माजी की उत्पत्ति, नन्द बाबा यसुदा आदि गोपिन कों दिखाई है। (यह लीला भी कोटबन में है) मन्दिर सों पूर्व क्षीरसागर है, ताकौ जल खारी है। यहाँ स्नान कर दूध दान करै तो सर्प योनि को नहीं पावै।

यहाँ सों तीन रस्ता हैं। नं० १—नहर की पटरी पटरी ७ मील दक्षिण में बोसी है। रस्ता नं० २— दक्षिण में डगरे सों एक मील—

नन्दनवन चन्दनवन

(यह भगवान कौ सिर अङ्ग है)स्कान्दे-ओं नां नन्दन प्रतिबनाधिपाय नन्दनन्दनाय स्वाहा। (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य वृत्त ऋषिर्नन्दन प्रतिबनाधिपो नन्दनन्दनो देवता अनुष्टुप् छन्दः ममानेक संपत् फल प्राप्तये जपे विनियोगः। (न्यासपूर्ववत्) ध्यानं—नंदनास्थ बनाधीशं नंदनंदनबालकं। ध्यायेद्यात्रा प्रसगंस्तु साँग एव समर्थितः। इति।

यहाँ गोपिन कों स्वर्ग दिखायौ है कदम्बन के बीच में नारायण कुण्ड है। यहाँ सों ६ मील, नहर के सहारे (पुल सों उत्तर शेरगढ़ की सड़क के पास कोसी मुकाम होय है। नं० ३— नन्दनबन, चंदनबन सों पूरब में दो मील अनुमान नहर पार, बुखारी जाय। अथवा क्षीर सागर कों बाँयों,बोसीके डगरे कों दाहिनों देकैं इनके बीच में हैकैं पूरब में नहर मिलैगी ताके पार की पटरीर

दक्षिण में ३ मील जाय। पुल सों बाँये हाथ पूरब में दगरे सों १ मील अनुमान—

बुखरारी गाम।

यहां बुखरारी ताल गाम के उत्तर में है। याहि ग्वाल कुण्ड भी कहैं हैं यह ग्वाल-ग्वालन को खोदो कुण्ड सब पापन कों दूर करन वारो है। गाम के पूरव में लोटन कुंड लोटन बिहारी कौ दर्शन है। यहाँ गौअन की खुर रज में लोटे हैं। यह दर्शन यशोदा जी कों दिखायो है। (यह भी कोटबन की लीला है) या लोटनकुण्ड कों बाँयों देकै बड़ा घाट ५ मील है। याके रस्ता में दो पक्की प्याऊ कीं कोठरिन सों ईसानमें झुकतो जाय। आगे नहर सों पूरब में पहले पुल सों मझोई कों रस्ता है। याते दो मील विशेष है। आगे दूसरे पुल सों बांये उत्तर में ईसान में झुकतो, दो मील—

बड़ा (घाट) गाम।

कालीदह (भागवत १६ अ० द० स्कंध) यहाँ काली कृष्ण के अङ्ग सों लिपट गयो जब, पूँछ फड़ दावकर अपनो अङ्ग बढ़ायो याते बड़ा नाम भयो है (२० श्लोक०) आगे, दो मील उझानी गाम यहाँ तक काली के विष की जल में उझाद उठती हीं जा सों उड़ते पक्षी गिर कैं मर जाते यहाँ गऊ ग्वालननें जल पीकै प्राण त्यागे तब अमृत वर्षिणी द्रष्टि सो देखकें जिबाये हैं (भा०द० १५ अध्याय श्लोक०) याके पूरब में ऊची बगीचों में कालीमर्दन कौ दर्शन है। यहां स्नान, दान, तर्पण, पूजन, वृत करे तो समस्त पापन सों छूट जाय (भा० द० १६ अ० ६२ श्लोक०) यहाँ सों एक मील अनुमान, लाल के खेलवे कौ, लाल बाग, खेलन बन। यहां आम के वृक्षन में कूआँ है कछू इमली पीपर के वृक्ष भी है।

ताके पूरब में पास ही शेरगढ़ दीखै है। गाम के दक्षिण में गाम कों बाँयों देकें मुकाम पै जाय,। अथवा बुखरारी गाम सों अग्नि-कोण, बारहद्वारी बगीची के पूरब में, दगरे सों, सूधे पैगाम भी जाय हैं। अथवा या बारहद्वारी सों दक्षिण कोसी कौ दगरौ भी जाय है। आगे कोसी सों शेरगढ़ आयवे कों रस्ता लिखकर यहां के दर्शन पीछे लिखेंगे ।

कोसी (कलाँ)।

(आदि द्वारका तीर्थ, द्वारका यहीं सों गयौ हौ। भगवान नें द्वारका कौ महात्म गोपीन सौं कहयौ तब गोपिननें पूछी कि द्वारका कोनसी सो कोनसी कौ अप भ्रंश कोसी है गयो।

यहाँ गौमती गङ्गा डेरान सों दक्षिण में, गाम कौ दाहिनो देकर १। मील नैऋत्य में है। पूर्व में घाट के पास बगीची में पीपर के नीचे ऋद्धि सिद्धि दुर्गा कौ दर्शन है। ताके पश्चिम में बल्लभा-चार्य जी की बैठक (लेख में नहीं) है। यहां सों उत्तर में गाम भीतर रतनागर सागर नामकों विशाल पक्कौ कुण्ड है। या कौ जल सुमुद्र कोसमान खारी है। ताके पास में बिहारीजी को दर्शन है। यहाँ सों बाजार देखत मुकाम पर जाय। आगे यहाँ सों पूर्व में कच्ची सड़क शेरगढ़ सूधी गई है। ताके बीच में चार मील पै फारैन कौं रस्ता जाय है ।

फारैन

(माधवीये) ओं श्रींकामप्रतिवनाधिपतये परमेश्वराय स्वधा । (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य प्रल्हाद ऋषिः काम प्रतिबनाधिपः परमेश्वरो देवता गायत्री छन्दः ममा नेक काम प्रपूरणार्थे जपे विनियोगः न्यास पूर्ववत्) ध्यानं-ध्यायेत्काम-

बनाधीशं श्री कृष्णं परमेश्वरं बन प्रदक्षिणा यत्र सांग एव समर्थिता। इति

वाये हाथ कौं प्रहलाद कुण्ड है यहां की होरी प्रसिद्ध है। होरी के दिन एक महात्मा कुण्ड में स्नान कर कैं जरती होरी के बीच में हैकैं निकसै है यह मेला देखवे योग्य है।

रस्ता सों दाहिने हाथ (पाँचवीं मील की शिला) सों कछु आगे पगडंडी सों पास ही एक मील—

पेगाम

एक रस्ता कोसी सों छाता है कैं (फेर सों) भी आवै है। नोट—छाता चौमुहा की लीला बच्छबन सेई सों आगें लिखेंगे। पैगाम के पश्चिम में कृष्णकुण्ड। याकों श्यामाश्याम कुण्ड भी कहै हैं। गाम के उत्तर में पय सरोवर (कदमखण्डी) गाम में चतुर्भुजराय दाऊजी कौ दर्शन है। यहाँ खेलन बन सौं खेलत २ आये हे तब दूध की छाक ब्रजवासीन में दीनी ही। प्रसादी पय गिरो तासों पय सरोवर भई। यहाँ दूध को दान करै। आगें वही कच्ची सड़क शेरगढ़ जाय है। पाँच मील सों पहले ही उत्तर में बाँये हाथ कौं एक पगडंडी खेतन में हैकै लाल बाग खेलन बन की और भी जाय है। अथवा सूधो ६ मील डेरान की जगह के पहिले गोपाल कुन्ड (सड़क सहारे) है ताके आगें—

शेरगढ़।

यहाँ पक्कौ वलभद्र कुन्ड है याके पूर्व में कच्चौ रेवती कुन्ड (डेरा करवे की जगह) है। आगे गाम कौ जाय तब सड़क छोड़ कैं बाँये हाथ दगरे सों उतर कै जाय आगें ईंटन की

धटिया चढ़कैं (कोट भीतर) दाहिने हाथ गली में राधाबल्लभजी कौ दर्शन है। यहां सों पीछौ लौट, आगे बांये हाथ की गली में गोपीनाथ, साक्षी गोपाल कौ दर्शन है। आगे (मसजिद के पास राधारमण जी कौ दर्शन है आगे (उतार की जगह) प्राचीन धर्म राज कौ दर्शन। ताके पास दाऊजी कौ दर्शन है।

ध्यानं—माध्वीकोन्मत्तनेत्रं स्मितललितमुखं शारदेन्द्रप्रकाशं
नीलंवासोदधानं हलमुसलधरं रेवतीकण्ठमालम्
श्री मच्छेषावतारं कलिमलमथनं देववर्यार्चिताङ्घ्रिम्
ध्याये कृष्णाग्रजातं जितमदनमदंधाम संकर्षणाख्यम्

यहाँ सों पूर्व बाजार में हैकैं दक्षिणमें रस्ता सों गाम बाहर डेरान कों जाय। यहां दाऊजी ने रास कीनों हो, ता समय सेहरो धारण करो है। याते, शेरगढ़ नाम भयौ है। यहाँ सों जमुना पार करकैं मुन्जाटवी (मूजवन) जानो होय तो जाय यहाँ काँस के बनमें गौ फँस गई ता समय दावानल ने भी आय घेरी ही (भा० द० १९ अ० में कथा है) जब श्री कृष्ण नें रक्षा करी है। वहाँ सों सुरीर (सुरभिन) गोचर भूमि। यहाँ यात्रा नही जाय है। शेरगढ़ सों थाने के आगे दाहिने हाथ कौं उतर कैं जाय। पहली पगडंडी पूरब में है यासों चीरघाट सीधे मजूर जांय है। ताके आगे बांये हाथ कों ईशान में झुकतौ दगरे जैसी पगडंडी सों (चीरघाट यात्रा करत ८ मील) ओवो गाम याकों बांयौ देकैं उत्तरमें (बल) रामघाट (भा०द०६५अ० में कथा है) दाऊजीकौ दर्शन है। दाऊजी के रास में श्रीयमुनाजी नहीं आई और गोपी सब आई हो, ता समय यहाँ यमुनाजी हलमूसल सों खैंची हैं (यहाँ प्रवाहभी उलटो बहै है)यह बिलास बन है।

यहाँ सों यमुना किनारे उत्तर ईशानमें है। गुञ्जा बन जहां गुञ्जमाल को शृङ्गार करो हो यहाँ कोई विशेष चिन्ह नहीं है।

यह बन यमुना जी में बहुत कट गयौ। श्लोक—गुञ्जावतंस परिपिच्छल सन्मुखाय। भागवत जी। आगे यमुना किनारे भूषण निवारणबन यहाँ ब्रह्मा ने आभूषण परित्याग करे हैं। यहाँ ब्रह्मघाट ब्रह्माजी कौ तपस्थल है बच्छ चोरी कौ पाप यहाँ दूर भयौ है। यहाँ होत बिहार बन जायवे सों तीन मील अनुमान विशेष रस्ता दक्षिण में है। रामघाट ते दक्षिण नैऋत्यमें परसराम के नगराकौं दाहिनों देकैं अग्निकोंणमें बिहारबन वृक्षाबली दीखै है। कदम खण्डो भीतर बिहारकुण्ड जाको पूरब में पक्कौ घाट है यहाँ कुञ्जबिहारी कौ दर्शन है। यह रामघाट सों डेढ़ मील है दक्षिणमें कदमखंडी रास चौतरासों आगे अग्निकोंणमें दगरे सों जाय। यहाँ सों २॥ मील अक्षयबट है।

दगरे के सामने भीमागूजर की गढ़ी है। ताके पहिले बांये हाथ कौं पूरबमें दगरे सों जाय वहां ४ दगरे चारों दिशानमें जाय है हैं। काचरौट गाम याके पूरब सों अग्निकोंणमें रस्ता जाय हैं आगे थोरी दूर पै अक्षयबट, यहाँ बट के वृक्ष पै अँगूठा चूसते दर्शन दीनों है। (यह भी कोटबन लीला में है)यहाँ गोपाल तलाई मंदिर के उत्तर में ही है। मट्टी में अट गई।

यहाँ कृष्ण बलदेव स्वरूप(श्याम स्वेत) दो सालिग्राम (नन्द जी की सेवा के हैं) हैं। स्वेत शालिग्रामके भीतर कुनवाड़े कौ सौ दर्शन होय है। यहाँ अक्षय गोपालजी कौ दर्शन है। यहाँ सों नैऋत्य वृक्षन में है कै अग्निकोण सों घूम कै पूर्व में दो मील।

चीरघाट (स्यारयो गाम)

याकौ वस्त्रलोचन कात्यायनी घाट भी कहैं हैं।

भा० द० २२ अ० गोपी कन्या कृष्ण कौं पति चाहि करिकें

(४ श्लोक) हेमन्त ऋतु प्रथम मास (अगहन) में स्नान व्रत (मूँग भात हविस्यान्न भोजन) मृतका की मूर्ति बनायकैं कल्याणी (कात्यायनी) देवी भद्रकाली (भद्रकाली समानचुर्भूयान्नन्दसुतः पति ६ श्लो०) की पूजन नित्य करती ही। सो एक दिन श्रीकृष्ण सखन संग यहाँ आय कर इन्हें नग्न स्नान करते देखो । नग्न स्नान करबेते व्रत खण्डित हैजाय हैं, वरुण कौ दोष लगै है (२९ श्लो०) ताके दोष को दूर करबे के हेत, वस्त्रन कों लैकै कदम पै चढ़ गये, पीछै वरुण कौं नमस्कार कराय कैं वस्त्र दीने । यहाँ भद्र काली कौ पूजन कर (शरद निशा) रास में कृष्ण संग क्रीड़ा करबे कौ वरदान कृष्ण सों कुमारि कानन नें,प्राप्त करो है। यहाँ (धोती) वस्त्र दान करै ताहि कात्यायनी व्रत कौ फल मिलै है। यह व्रत मनोइच्छा पूर्ण करनवारो है। याके पास श्री महाप्रभूजी की बैठक है। ताके पूर्व में कात्यायनी देवी चीर बिहारी कौ दर्शन है (ऊँचीसी बगीचीमें) अब यहां सों दो रस्ता हैं। एक जमनाजी के पार के बन। पुनः या पार के बन (इन दोनों रस्तान कौ मेल माँटबन में होयगो) रास्ता नं० १—गाम कों बांयों देकै गाढ़ीन कौ रस्ता है तासों थोरी दूर जाय, आगें बांये कों पगडंडी ते दक्षिण अग्निकोंण में गांगरोली गाम है। याके अग्निकोंणमें दगरे सों पूर्व ईशान मेंदो मील—

नन्द घाट (भद्रक बन)

भद्रकबन और खिद्र बन भगवान के कन्धा हैं।
याकौ भद्रकाली देवता है।

यहाँ बसई सों नन्दरायजी नित्य स्नान करबे आते हे। एक दिन अर्धरात्रि में ही स्नान करबे आये। जल में घुसते ही वरुण के लोक में दूत लै गये। भा०द० २८ अ०में यह कथा है। श्रीकृष्ण

वरुण लोक गये, वहाँ वरुण नें पूजन कर क्षमा मांगी तब नन्दजी कों लैकैं यहाँ आये हे। यहाँ ब्रजवासी बड़े विकल देखे। उनके भयकों दूर कीनों। याते भय गाम, यहाँ हो सो नष्ट हैगयो है।

यहाँ कृष्ण तथा नन्दजी कौ दर्शन है। यह भय मोचन बन है यहां सों यमुनाजी के पार उत्तर वायव्य में पांच मील बैकुन्डपुर गाम है (यहाँ बैकुण्ड कौ दर्शन करायौ हो) ईशानमें दो ढाई मील मेखबन, नन्दजी की गाय बँधवे के खूँटा, लतान कौ दर्शन (भा० द० २२ अ० ३०--३६ श्लोक तक कथा है) ताके आगे भद्रबन, भाण्डीरबन, स्यामबन, हैकैं मांट जाय। अथवा दूसरो रस्ता नन्द घाट सों दो मील नैऋत्य में बसई गाम। यहाँ उपनन्द के कहे सों गोकुल छोड़ गोप सब गाढ़ान में बैठ २ कैं (गोवरधन होत) यहाँ गौअन कौं सुख देख के बसे हे। चन्द्राकार गाढ़ा लगाये (भा०द० ११ अ०) यहाँ पै भी अघासुर, बत्सासुर, बकासुर, प्रलम्बासुर आदि दैत्य के उपद्रव देख कै पीछै नन्दगाम बसायौ हो। या गाम के पश्चिममें गोपकुन्ड;याकी गर्ग सहितामें विशेष कथा है। ताकों दाहिनों देकैं दक्षिण नैऋत्य में एक कोस मईगाम यहाँ तक गोप मई हैगई ही। ताते मईगाम नाम भयौ है [यहाँसों पश्चिम में दो मील दलौतोगाम (जहाँ हैकैं गाढ़ा जात हैं) यहां बलभद्र कुन्ड दाऊजी कौ दर्शन हैं। याकौ बाँयों देकैं पश्चिम ते दक्षिण में गाम बाहर निकसत ही दाहिने हाथकौ रेवतीकुन्ड है यहांसों अग्नि कोंणमें सेईगाम] अथवा मई सों १ मील सेई की गढ़ी है खादर ही खादर जाय, आगे बच्छबन ऊँचे टीले पै पक्कौ बच्छ बिहारी कौ मन्दिर में श्यामस्वरूप राधाकृष्ण कौ दर्शन तहां बच्छ कूप है। वाके आगें दूसरो टीलो थोरी दूर। एक पीपर के वृक्ष उपर पक्की (दीवार) भींत दीखै है। तहां चढ़जाय छोंकरा के वृक्ष के नीचे

श्री महाप्रभूजी की बैठक पक्की सुन्दर बन गई है। यहाँ चतुर्भुज स्वरूप, को विशाल दर्शन है।

बच्छबन (लीला)

अघासुर कौं मार करकैं वाके मुख सों मरे भये बछरा ग्वालन कों जिबाय कैं बछरा चरावे कौं छोड़ आप श्री यमुनाजी की रेती में बैठ बंधान पै सों छींके उतार कलेवा करन लगे कैसौ सुन्दर ग्वाल मण्डला ताके बीच आप श्री कृष्ण (भा० द० अ० १३ को भाव पद—विराजत ग्वालमण्डली अहो बलमोहन छाकें खात। शिलाओदन जंघन रोटी अँगुरिन बिच फल धरे और गोरस के पात। काहू को लेदेत श्याम काहू को बहकाबत कोऊ झटक खात हाथ तें तब लालन मुसकात जात। रामदास प्रभु की लीला लख कहत सब ब्रह्मादिक हम न भये अहीर ब्रज में यों कहि कहि पछितात॥ इतने में बछरा दूर है गये, तब श्री कृष्ण नें कह्यौ कि तुम बैठो मैं बछरा घेर लाऊँ, ऐसे कहि हाथ मुख पै दही भात (दध्योदन) लगै हीं दौर गये (१४ श्लो०) तहाँ बछरा नहीं मिले, लौट कैं आये जब ग्वाल भी नहीं मिले हैं तब ढूँढन लगे ॥१६॥ पीछे आप ब्रह्मा के कर्तव्य कों जान गये ॥१७॥ ब्रह्मा कों मोह देबे तथा ग्वाल-बाल बछरान की माता तिनके सुख देवे कों आप उन के रूप में है गये ॥१८ सों २६ तक॥ या प्रकार ब्रह्मा कों १ क्षण यहाँ १ १ वर्ष में पाँच छै दिन कम बीते यह बात काहू ने नहीं जानी सब बिशेष प्रेम सों रहत रहे ४० ॥ नोट—यही लीला बछगाम पेठे सों आगें पूछरी ढूका बलदेव तहाँ लिखी है) ताके पीछे चौमुहा जहां चारों मुख सों चारों दिशा देखी हैं। तब चतुर्भुज दर्शन दियो है। पत्रे पत्रे शंख चक्रधारी प्रति बछरा ग्वाल दीखे हैं। सो स्वरूप महाप्रभू जी की बांई ओर मन्दिर में

(पश्चिम) दर्शन कीनों है। ताके पास में ब्रह्म कुण्ड है। पीछे कों दक्षिण में इमली के पेड़ के नीचे ब्रह्मा की बैठक है। यही बच्छ-हरण करवे की ठौर है। यहाँ पै श्रीकृष्ण बलदेव एक दिन बछरा चरावत आये तिन बछरान में, बछरा रूप सों वच्छासुर आय मिलौ, ताहि श्री कृष्णनें पहिचान दाऊजीकों सैन देकैं धीरे २ जाय ताकी पूँछ और पीछे के पाँय पकर फिराय कै कैत वृक्ष सों पटक कें मार डारो (भा० द०अ० ११ ४१ श्लोक) बैठकजी सों पश्चिम नैऋत्य में आधी मील—

सेई गाम

रस्ता में बांये हाथ कों दक्षिण में झुकतौ पापरो कौ वृक्ष ऊपर हिस्सा एक, नीचे खंब नुमा है। ताकी चार द्वारे की मढ़ी बन गई है। याहि ब्रह्मा को स्वरूप कहैं हैं। ऐसो आश्चर्य-जनक वृक्ष अन्त कहीं भी नहीं देखो, सो यहां है। यहाँ ब्रह्मा तप कर रहौ है ऐसौ प्रतीत होय है ताके आगें पश्चिम में दगरौ है। कच्चौ कृष्णकुण्ड। मुकाम डेरा परवे की ठौर। याके पास ही बर को पेड़ दगरे के दाहिनें तहाँ कच्चौ अटो भयौ ज्ञान कुण्ड है यहाँ ब्रह्मा कों ज्ञान भयौ यह परब्रह्म है (भा० द० अ० १३ श्लोक ५५) अथवा जाकी श्रीकृष्ण ने माया दूर करी है सो ब्रह्मा भ्रम निवार स्तुति करवे योग्य है (से-बई) बछरा ब्रह्मलोक में से-ई--जो ब्रह्म लोक में देखोसो यहाँ देखे है। अथवा विष्णु से-ई अथवा बछरान में असुर (दैत्य) से-ई आपने दाऊजी सों सैन मार कर कही है भा० द० अ० ११ श्लोक ४० ताते सेई गाम है। यहाँ एक रस्ता चीरघाटसों ४मील दलौतोगाम बलभद्रकुंड दाऊजीकौ दर्शन गाम के नैऋत्यमें रेवतीकुण्ड तहाँ ते दो मील अग्निकोंण में सेईगाम या रस्ता गाड़ी आवैं हैं। कृष्ण नें दाऊजी कों इशारौ (सैन) दीनो

(से, ई) ता समय दाऊजी कृष्णजी सों बोले दलौतो (मारो तो) अब कहा देखो, सो मारो है। एक दिन श्री रेवती जी के सङ्ग यहाँ पधारे हे जब बछरा चरायवे की भूमि (बसई सों आय कर दलौते में) दिखाई है, सेई सों वृन्दाबन जायवे कों तीन रस्ता हैं। नं० १ रस्ता—या रस्ता सों इक्का गाड़ी भी जाँय हैं। कृष्ण कुण्ड सों नैऋत्य दक्षिणमें दगरो जाय है। ज्ञानकुन्ड कौ दाहिनो देकैं पाँच मील पै कच्ची सड़क उत्तर दक्षिण में जाय है। तासो उत्तर में नहीं जाय। यह रस्ता शेरगढ़ जायवे कौ है। दक्षिण में रस्ता जैत कौ है। अग्निकोण झुकतो सन्मुख पश्चिम में चौमुहा कों रस्ता है। या ओर की ठीक यात्रा करनी होय तो या रस्ता कों भी छोड़ देय। सेई ग्राम सो पश्चिम मंग्रावली वासों पश्चिम में रामताल। यहाँ रामरूपमें गरुड़ कों दर्शन देकैं संदेह दूर कीनोंहै। ताकों दाहिनों देकैं वरावली गाम ताके आगे—

सैमरी (श्यामला सखी को) गाम।

यहां सैमरी देवी कौ दर्शन, तथा नारायण कुन्ड है। ताके दक्षिण सड़क फांद कैं १ मील नरीगाम, नरीदेवी, किशोरीकुन्ड, दाऊजी कौ दर्शन भी है। ये दोनों सखी श्री राधिकाजी की सहचरी (दासी) हीं। मान मनायवे में बड़ी चतुर हीं ताते इने दूँइवे भेजी हीं। पीछे कोप कुञ्ज जैत में ये दोनों सखी कृष्ण कों यहाँ ते संग ले गईं (विशेष जैत में लिखेंगे) इननें श्रीकृष्ण सों वर प्राप्त कीनों है तासों इनकी बड़ी भारी मानता है। नवदुर्गान में हजारन आदमी आगरे सों आमें हैं। यहाँ वा समय बड़ो भारी मेला जुरे है। किशोरी (श्री राधिकाजी) नारायण (श्रीकृष्ण) जैत मानके पीछै इनके घर पधारे हैं छाक आरोगी

है। एक दिन कृष्ण बल्देव दोनों यहाँ पधारे जब नरी सखी दाऊजी कों ले गई, तथा श्यामला के सङ्ग श्रीकृष्ण, पृथक २ छाक आरोगी है तब दोउन कों दोउन नें वरदान दियो कि तुम देवी हैकैं आज सों पुजोगी और जो तुमारी पूजा करैंगे वे धन संतान सों सुखी रहेंगे। आगे यहाँ ते पूरब में सड़क अकबरपुर हैकैं अनुमान ६ मील—

चौमुहा गाम।

नारदीयेः—ओं ग्लीं ब्रह्मबनाधिपतये गोपीजन बल्लभाय स्वाहा (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः ब्रह्मबनाधिप गोपीजन बल्लभो देवता गायत्रीच्छन्दः मम युग्मदर्शनार्थे जपे विनियोगः।

(ध्यानं—ध्यायेत् ब्रह्मबनाधीशं गोपीनां जनबल्लभं। बनयात्रा प्रसंगस्तु साँग एव प्रयच्छ मे।

यहाँ चारों मुखन सों ब्रह्मा नें चारों दिशा देखीं तासों (भा० द० १३ अ० ५९ श्लो०) ब्रह्म ह्रद दर्शन कुंड है (भ० द० १३ अ० ५५ श्लोक) पुनः स्तुति करी भा० अ० १४ की लीला हैं। यहाँ ते सड़क २ आगें ४ मील

जैत गाम।

यह जयत मान की ठोर है यहाँ कोप कुञ्ज है जहाँ श्री कृष्ण सों रूठ कैं श्री राधिकाजी, याही कुञ्ज के सघन अन्धकार में आय कैं बैठी हीं। यहाँ नरी-सैमरी (श्यामला) दोनों सखी मनायवे आई हैं। तिन पर भी कोप कीनों है जब ही लौट कैं कृष्ण कों बुलाय लाई हैं। पद—लालन मनायो न मानत लाड़िली प्यारी तिहारी अतिशय कोप भरी। तुम्हारी सों अनेकन यत्न छल

बल सब किये मान तो अब घटत नाहिन त्यों त्यों अति रिस होत है खरी ॥१॥ श्याम दाम भेद दन्ड एको नहीं चित चुभत तापर हौं पाँय परी दन्त तृण धरी। नाहिन कछू और उपाय आन बन्यो यह दाव गोविन्द प्रभु आपुन चलिये तुम देखत ही वाको मान छूट जैहैं तिहिं घरी ॥२॥ यह कहि यहां कृष्ण कों सङ्ग ले दीपक सों मुख दिखाय रही जब प्रियानें फूँक मार दीपक बन्द कर दीनों, तब आप हाथ पै मणी धरकैं मुख देखन लगे, ता मणी कों उठाय कें मुख में धर गई, कृष्ण एक रूप सों सहस्र फणधारी शेष रूप हैकै प्रखट भये जिनके फण फण में मणिन को प्रकाश ऐसे शेष कों देख डरकैं श्रीकृष्ण के अङ्ग सों लिपट गई। मान आपही छूट गयो ताते जयत मान कह्यो यहाँ श्रीकृष्ण की जीत भई है। या लीला को पद भो है—दधि सुत हरिसों क्रोध भई, खैंचत चीर खिची ब्रजबाला। सारङ्ग पै झुरई लै मणि हाथ धरी नट नागर तुरत ही भक्ष लई, दाव्यो चरन शेष निकरायो उदया किरन भई, सूरदास प्रभु की यह लीला पीछे है दुरई। सो वह पाषाण कौ सर्प वज्रनाभजी कौपधरायो कृष्णकुन्ड में अभी तक है। गाम के बायव्य में कुन्ड है। यहां सों सड़क सड़क (गरुड़गोबिन्द छटीकरा गाम) ३ मील है।

छटीकरा गाम।

यहां छै सखिन की जुदी जुदी छै कञ्ज हैं। श्री राधिका जीकी गुप्त हैं। गामसों उत्तरमें सड़क बांये हाथ कों आधी मील–

गरुड़ गोविन्द

बाराह पुराण म० म० १८ अध्याय ॥ यहाँ गरुण श्रीकृष्ण के दर्शन कों आयौ ताकों माथुर ब्राह्मण (चौबे) चतुर्भुज दीखे

तासों गरुड़ सन्देह में पर गयौ पीछे श्रीकृष्णने दर्शन देकैं गरुणकों समझायौ कि ये ब्राह्मण मेरे ही रूप हैं इनके संतुष्ट भये सों मैं संतुष्ट होत हों ॥२४ से ३५ तक श्लो० ॥ कवित्त—हैरी सखी ब्रज भीतर अनौखो धाम लटक पछाँह की पै, कोस चार जाय कौ। कोयल चकोर मोर भ्रमर गुञ्जार करत चारों तरफ कदंब रङ्ग चूअत पात पात कौ ॥ पय को सो नीर जामें दाहिनी तरफ कुंड सिद्धन कौ धाम यहि वाकी छविगात कौ। सुभग शृङ्गार गरुड़ आसन विराजत नीति आप हाथ बारह जाकौ मन्दिर चार हाथ कौ ॥ छुधित छबीले छैल जान षट कुँजनते, आईं छै बाम छाक लैकैं सुख पैवे कौ। औरन की छांड़ छकैं हमरी नन्द नन्दनजू, सुरन मनाती या ऽभिलाषा के पुरैवे कौ ॥ द्वादश कर धार छैते सखिन बुलाईं पास, लीनी छैं हाथन ते छाकहू जनैवे कों। प्रमुदित करी हैं बाम बिजै बुलायो फेर; गरुड़ छटीकरा में कालीके बचैवे कौ ॥ (भा० द० १७अ० ११ श्लो०। सौभर ऋषिनें गरुड़ को श्राप दीनों याते कालीने, या दह में आयकैं निवास करो हो। या बात को काली जानतो हो सो भाग कै आयौ। ताके पीछै यहाँ तक गरुड़हू आये आगें श्राप डरसों नहीं गये। पुनः गरुड़ सों भगवान नें कही कि मैंने याहि वर दीनों है सो याहि मत मारै याहि समुद्र के द्वीप में भेजत हों। काली नें यहाँ आपकी पूजा करी ही (भा० द० १६ अ० ६६ श्लो०) यहाँ सों पक्की सड़क उत्तर में वृन्दावन को जाय है। ताके बांये हाथ कौं मदनटेर जाके थोरी दूर ही सौभर ऋषी की गुफा हैकैं पीछै गोपालगढ़ होत वृन्दाबन कालीदह मुकाम करै।

नं० २ रास्ता—बच्छबन सेईं सों मीया आटस हैकै कालीदह वृन्दावन ९ मील अनुमान है। मजूर याही रस्ता सों जात हैं।

रास्ता नं० ३—बच्छबन सेईं सों भांडीरबन ९ मील अनु-

मान है सेई गाम के आनिकोंण सों पूरब में पगडंडी, कुँड सों ईशान में, उपरोक्त ब्रह्मा के (पापरी) वृक्ष ताकों बायों देकैं बरैरा गाम एक मील आगें रासोली यहां दाऊजी नें रास समाप्त करौ है। आगें समरा कौ नगरा ताके आगें बाबूगढ़ (१ मील बारैरा सों) यहाँ सूधौ दगरौ सकरा घाट कों है। जहाँ ऊँचे पै मुरसान के राजा की कोठी,ताके नीचे हैकैं उत्तर में जमनाजी की खादर कांस कौ जङ्गल एक मील है। तहाँ पगडंडी सों सावधान जाय। दलदल (कीचड़) न होय तपास कर लेय। सामेंही माँट गाम पार उतर कैं जाय, ताकों दाहिनों देकैं पश्चिम वायव्य में श्यामबन कूआ के सामने पश्चिम मुख मन्दिर की पौरी, ताके भीतर पूर्व मुख मन्दिर है। श्यामबिहारी श्रीदामा कौ दर्शन यहाँ तक श्यामसुन्दर श्रीदामा कौं पीठ पै बैठार कैं खेल में सों लाये हैं। भद्रसेन ग्वाल वृषभ ग्वाल कौ लायौ है। प्रलम्बासुर दाऊजी कौ लायौ है। या खेल में दाऊजी कौ पक्ष जीतौ है। श्री कृष्ण कौ पक्ष हारौ है। प्रलम्बासुर गोपरूप धरिकें या खेल में आयौ। श्री कृष्ण नें याहि पहिचान कैं अपनी ओर कर लीनों हो। भा० द० १८ अ० २४ श्लोक। प्रलम्बासुर यहाँ नहीं ठहरो आगे भांडीरवन तक गयो। या मन्दिर कों दाहिनों देकैं पूरब में घूम जाय थोरी दूर पास ही श्याम तलाई पक्की सुन्दर लतान में है। जाके चार घाट चार बुर्जा हैं। तामें यहां आप जलपान कर श्रम दूर करिबे कों बिराजैं हे। यहाँ सों वायव्यमें पगडंडी सों पास ही भांडीरवन। यहाँ तक चड्डी लेकैं छोड़ते हे। पुनः प्रलम्बासुर नें प्राण छोड़े हैं तासों छांड़ेरी गाम(उत्तरमें दीखैं)है ताके पश्चिममें–

भाँडीरबन

भाँडीरबन तथा कोकिलाबन भगवान के हस्त अंग है

(धौर्म्यसंहितायां—ओं व्रां भाण्डीरबनाधिपतये श्री धराय नमः (१७ अक्षर मंत्र) अस्य मन्त्रस्य वृषाकपिः ऋषिः । भाण्डीर बनाधिप श्रीधरो देवता कात्यायनीच्छंदः मम गृहसौख्य प्रपूणार्थे भाण्डीरबनाधिप श्रीधर मन्त्र जपे विनि योगः ।

ध्यानं—ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं देवं भाण्डिरबन रक्षकं प्रदक्षिणा मया कार्या सांग एव समर्थिता ।।इति।।

एकादशन्तु भांडीरं योगिनां मति बल्लभम् ।
यत्र स्नातो नरोभक्त्या सर्बपापै विमुच्यते ।।
(वृ० ना० पु० ७९ अ० श्लो० १७)

यहां प्रलम्बासुर दाऊजी कौं कन्धा पै बैठार कैं भज आयो, और वाके केश ठाड़े है गये अपने ग्वाल भेष कौं छोड़ दैत्य रूप में देख (दाऊजी नें) असुर जान कें सिर में एक मुष्टिक प्रहार करौ । मुष्टिक लगतही कपार फटकैं गिरगयौ और प्रलम्बासुर नें प्राण त्याग दिये । (भा० द० १८ अ० २९ श्लो०) पीछें सों ग्वाल भलीकरी भलीकरी कहन लगे देवताननें पुष्प वृष्टि कर स्तुति करी ।।३२ श्लो० ।। यहाँ भाण्डीर कूप तिवारी के आगें है । जहाँ श्रीदाऊजी नें मुकट उतार कैं श्रम दूर करौ है यहाँ दाऊजी की बैठक है । तथा वज्रनाभिजी के पधराये मुकट कौ दर्शन है । ताके सामें दाऊजी कौ प्रधान दर्शन है । पश्चिम में बिहारीजी कौ मन्दिर में दर्शन है वायव्यमें राधा कृष्ण कौ दर्शन है । यहाँ श्रीमहाप्रभूजीकी बैठक श्यामतमालके वृक्षके नीचे गुप्त है । यहाँ ते आगें पश्चिम में ढाई मील—

भद्रबन

बेलबन और भद्रबन भगवान के कर्ण हैं ।

वाष्कल संहितायां—ओं हूं भद्रबनाधिपतये हयग्रीवाय नमः (१६ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य वशिष्ट ऋषिः भद्रबनाधिपो हयग्रीवो देवता कान्तिश्छन्दः मम सकल कल्याणार्थे जपे विनि योगः। (न्यास पूर्ववत्)

ध्यानं—ध्यायेत् भद्रबनाधीशं हयग्रीवं महाप्रभूं। प्रदक्षिणा कृता यात्रा साँग एव समर्थिता। इति।

अस्ति भद्रवनं नामः षष्टं स्नातोऽत्रमानवः।
कृष्णदेव प्रसादेन सर्व भद्राणि पश्यति॥

यहाँ बरके पेड़ नीचें हनूमानजीकौ दर्शन तथा झारखण्डेश्वर महादेब कौ दर्शन है। यहाँ मध्यान समय छाक आरोगत हे। गौ जल पीकैं विश्राम करती हीं। एक दिन बगुला भेष में बकासुर दैत्य आयकैं अपनी चौंचन सों ग्वाल-बालन कों मारन लगौ। ग्वाल-बाल बुरी तरह रोमन लगे जब महादेव जी नें त्रिशूल मारौ तासों एक पंख कट गयौ वायू ने वायुअस्त्र मारौ यमनें दण्ड मारौ सो दण्ड टूट गयौ तब सब देवतान नें मिलकैं प्रहार कीनों सक्तीनें खड्ग मारौ जासों एक पांय कटगयौ काहूसों मरौ नहीं तब श्री कृष्णचन्द्र नें चौंच फारकैं मार डारौ जाकी कथा गर्गसंहिता द्वितीय वृन्दावन खण्ड ५ अ० ७ श्लोक सों प्रारम्भ है। भा० द० ११ अ० ४४ सों ४९ तक कथा है। ताही सों यहाँ महादेव हनूमान कौ दर्शन है याके मारवे कों सब देवता आये हे। अस्तु यहाँ सों सुरीर (सुरीरबन भगवान की जिव्हा अङ्ग है) जानों होय तो सड़क २ जाय। आगें यहाँ सों पीछे लौटकैं पूरब में छांड़ेरी गाम कौ दाहिनों देकैं ३ मील। मांट बन गाम है। जहां सड़क पै नौहझील १८, राया ८॥ मील कौ पत्थर लगौ है। वहाँ ते अग्निकोंण में थोरी दूर पै सड़क सों दाहिने एक बड़ौ नालौ है,

ता रस्ता उतर जाय (सड़क सड़क जायवे में चक्कर है) आगें एक सुन्दर बगीची है, ताकों दाहिनों देकैं आगें कछू चौरस जगह है, ताके आगे बजार में, दांये हाथ कौं एक तिदरी में दाऊजी कौ सुन्दर दर्शन है। यहाँ व्रजभक्तन नें माँट भर २ कैं माखन मिश्री दहीकी (छाक)सेवा करी है वहांते आगे बजार दक्षिणमें है। तहाँ एक मीठौ कूआ है (यहाँ ते एक रस्ता पूर्व में गली जाय है याते इक्का गाड़ीभी जाय है। डांगोली तक कच्ची सड़क ताके आगे बाग है ताकौ बाँयौ देकैं जहांगीरपुर ताके पास पश्चिम में बेलबन है। पैदल जायबें वारे कों कछू विशेष है। अथवा मांट के बजार में सूदौ दक्षिण सों घूमकै गाम बाहर जमुना किनारे निकस जाय तहां अग्निकोणमें एक पुरानौ बगीचा है तामें पगडंडी सों जाय। आगें नैऋत्य में झुकतौ खादर खादर नहीं जाय, वहाँ सूअरन कौ भय तथा काँस भी बहुत हैं। आगें कच्चौ डगरौ सड़क माफिक मिलैगौ तासों दक्षिणमें जाय। आगें बांये हाथ कौं पुरानौ बगीचा और आबैगौ (आम, इमली वृक्षन कौ) तहाँ ते डगरौ छोड़कैं दाहिने हाथ पगडंडी सों उतर जाय। वहाँ कांस भी थोरे हैं आगें जहांगीरपुर में घुस कै दक्षिण सों पश्चिम में पास ही जमुना किनारे पै—

बेलबन

भद्रबन और बेलबन भगवान के कर्ण हैं।

बृहत्पराशरे—ओं क्लीं बिल्वबनाधिपतये जनार्दनाय नमः। (१६ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य रुद्रऋषि विल्वबनाधिपो जनार्दनो देवता गायत्रीच्छन्दः मम परमपद प्राप्त्यर्थे जपे विनि योगः।

ध्यानं—ध्यायेत् विल्वबनाधीशं वरदञ्च जनार्दनम्। प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांग एव समर्थिता। इति।

विल्वारण्यन्तुदसमं जत्रस्नातः सुमध्यमें ।
शैवं वा वैष्णवं वापि यातिलोकं निजेच्छया ॥१६॥
वृ० ना० पु० ७९ अ० ।
(क्वचित् कृत्रिमगोवृषैः भा० द० ११ अ० ३७ श्लोक)

यहाँ आप बैल बने हैं पुनः ग्वालन कों बैल बनाय खेल खेले हैं। यहाँ वेल के वृक्ष पहिले बहुत हे, अब दो वृक्ष ही रह गये हैं और पीलू के वृक्ष, बर, इमली, अरनी भी हैं जमनाजी नें यह बन बहुत काट डारौ हैक्वचिद्विल्वैः। भा०द०१८। १४श्लो०। यहाँ बेलफल सों कृष्ण खेले हैं। यहाँ बेल वृक्षन की सघन झाड़ी ही ताही सों याकौ नाम वेलबन भयौ है। यहाँ एक कूआ है ताके पास लक्ष्मी जी कौ मन्दिर है, याके सामने एक बेल कौ वृक्ष है यहाँ चरणारविन्द के स्पर्श के लिये लक्ष्मी नें तप करौ है, यद्वाँछया श्रीर्ललना चरत् तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता भा० द० १६ अ० ३६ श्लोक ॥ रमाक्रीडमभून्नृप भा० द० ५ अ० १८ श्लो०॥ भगवान् के जन्म हैवे सों लक्ष्मी खेलन लगी। ताके उत्तर में श्रीगुसांईजी की बैठक है बैठकके आगे कूआभी है। याके पीछे कौ बन बह गयौ है। बैठक जी कों भी भय है, यहाँ ते दक्षिणमें कालीदह की शिखिर दीखै है जमुना जी पांज होय तो सूधौ रस्ता पूँछ करकैं जाय अथवा घूमकै पुल सों उतर किनारे किनारे ही घाटन कौ बांयौ देत नैऋत्य में कालीदह श्री बृन्दाबन डेरा करैं। यहाँ दो दिन यात्रा रहै है। बेलबन सों सूदो एक मील, पुल हैंकै दो मील, बच्छबन सों मांट आदि हैकै १६-१७ मील अनुमान यह मुकाम है, यात्री सबेरे सों चलकै संध्या तक आय पहुँचैं हैं।

बृन्दावन

बृन्दाबन भगवान कौ भाल अङ्ग है।

सूतोपनिषदि—ओं ब्रन्दाबनाधिपतये वैकुण्ठाय नमः (१८ अक्षर मंत्र)अस्य मन्त्रस्य जन्हु ऋषि वृंदाबनाधिबनाधिपो वैकुण्ठो देवता भूश्छंद मम सकल विद्याप्राप्तयर्थे जपे विनि योगः (न्यास पूर्ववत्)।

ध्यानं-वृंदाख्याधिबनाधीशं वैकुण्ठाख्यं जगत्प्रभुं ध्यायेन्नारायणं देवं सनकादिभिः संस्तुतम्। इति।

वृन्दाबनं द्वादशंतु सर्वपाप निकृन्तनम् ।
यत्समं न धरा पृष्ठे वन मस्त्यपरं सति ॥१८॥
यत्र स्नातस्तु मनुजो देवर्षिपितृतर्पणम् ।
कृत्वाऋणत्रयान्मुक्तो विष्णुलोके महीपते ॥१९॥
बृ० ना० पु० ७९ अ० ।

वृन्दा नाम तुलसी कौ है। पहिले यहाँ २० कोस तक तुलसी कौ बन हो। अब कहूँ कहूँ यह बन अच्छी तरह,दृष्टिगोचर होय है। यहाँ प्रायः मन्दिर ही मन्दिर हैं उनमें सों प्राचीन अथवा नवीन प्रसिद्ध २ स्थान नीचे लिखे हैं। मुकाम के पास लाल पत्थर के शिखिरदार प्राचीन मंदिर में काली मर्दन कौ दर्शन है। याकौ नाम तत्त्वप्रकाश तीर्थ है यहां गोप गोपिन नें काली कों विमर्दन करत दर्शन कीनों है। बृ० ना० पु० ८० अ० ६३। आगें पूरवमें ऊँची शिखिर कौ पुरानौ मदन मोहनज कौ मंदिर है, यहाँ की पहली मूर्ति करौली राज्य में चली गई है। अब कृष्ण बलदेव की मूर्ती विराजै है। दूसरौ मंदिर और भी बंगालीन की सेवाकौ याके पास में है ताके आगे उत्तरमें फाटक के बाहर सड़क है तासों वाये हाथ कों अद्वैत बट, अद्वैत स्वामी की तपोभूमि यहाँ राधा कृष्ण कौ दर्शन कर ऊँचे कों पूरव में चढ़कैं दाहिने हाथ कों अष्ट सखिन कौ नवीन मंदिर देखवे लायक बड़ौ ही सुंदर है।

ताके आगे चलकैं बांकेबिहारीजी कौ दर्शन है। यह मूर्ति बड़ी सुन्दर परचय देवे वारी है। या मन्दिर के आगे बड़ौ चौंतरा और कूआ है। यहाँ सों आगे बजार में श्री हरवंश जी के मन्दिर में राधाबल्लभ जी कौ दर्शन है। आगे कलकत्ता वारे की कुञ्ज में राधाजीवन बल्लभकौ दर्शन है ताके आगे दानगली में हैकैं जमुनागली वांये कौ सामने गुमानगली। यहाँ सखीन संग प्रियाजी जमुना स्नान कौं पधारी वहाँ कृष्णनें आनकैं दान माँगो तब आपने बड़े गुमान के कठोर शब्द कहे कंस कौ भय बतायो। तिन बचननकों सुनकैं श्रीकृष्ण बोले,हे प्यारी! मेरौ आपकौयह आखीर मिलाप है। यह कहि रोस में भर कंस ते युद्ध करवे कों चलन लगे तब आपने कर पकर अपने कठोर शब्दनकी क्षमा माँगी है। ताकों बांयो देकैं कुञ्ज गली सों ताके आगें हैं बांये मुरकैं दाहिने हाथ कों सेवा कुञ्ज ह। ताके दरवाजे पै यह लेख है। लसत लाल अरु लाड़िली ललितादिक सब पुञ्ज। जगदम्बा सेवित सदाँ, सो यह सेवा कुञ्ज॥ भीतर एक चौक छोड़कैं दूसरे में बड़ौ सुन्दर बन है तहाँ पत्थर की पगडंडी बन रही है। ता रस्ता जाय। आगें एक छोटो मन्दिर है। ताके आगें सिंगमरमर कौ सुन्दर छोटो सो बंगला है। श्री राधिका कों रास में श्रम भयौ है ताहि दूर करिवे कौं श्रीकृष्ण नें चरण सेवा करी है और ललिता जी नें (ललिताकुण्ड सों) जल झारी की सेवा करी है। पहिले यह ललिताकुञ्ज ही, चरण सेवा करी तबते सेवाकुञ्ज भई। यह राधाकृष्ण की नित्य लीला कौ स्थल है। यहाँ रात्रि में कोई जीव नहीं रह सकै, ऐसौ कहैं हैं। यहाँ छवी की सेवा है। यहाँ श्यामतमाल वृक्ष के गांठ गांठ में शालिग्राम को सो दृश्य है। ताके बाहर हैकैं पूरब सों दाहिने हाथ कों सवामन के शालिग्राम कौ दर्शन करिकैं पीछै उत्तर में लौट आवै। हाँ बीच रस्ता में एक चौंतरा है तहाँ श्री

राधिकाजी के नेत्रन कौ दर्शन है ताके उत्तरमें बांये हाथकों जमुना जी है। आगे चीरघाट (चैन घाट) है या चौंतरा ते दक्षिण में दाहिने हाथ कों शाह कुन्दनलाल फुन्दनलाल लखनऊ बारेन कौ टेढ़े बलदार खंबन (सफेद संगमरमर) कौ मन्दिर है यामें बडौ सुन्दर बसन्ती कमरा है जामें बसन्त पंचमी कों श्री राधा-बिहारी ठाकुर जी विराजै हैं यह दर्शन करवे योग्य है ताकौ बड़ौ फाटक बजार में है याके बांये हाथ कों गली में सामने ही पूरब में निधिबन(निज वृन्दाबन विशाखा कुञ्ज) है तहाँ राधाकृष्ण कौ दर्शन है, भीतर बन में विशाखा कुण्ड है बांये हाथ कौ आगें सैया गृह ताके आगें बंशी चोर लीला कौ दर्शन है, ताकें आगें हरिदास स्वामी बैजू बाबरा और तानसेन के गुरू की बैठक है। कृष्ण के अन्तरध्यान हैवे के पीछे यहाँ सब गोपी—कृष्ण, पूतना, वत्सासुर, अघासुर आदि बन २ कै नागलीला, चीरलीला इत्यादि कृष्ण चरित्र कर तद्रूप भईं भा० द० २० अ० कथा—

पद—भृङ्गी तन सों भृङ्ग होत, यह कीट महा जड़।
कृष्ण रूप सों कृष्ण होत यह कहा अचरज बड़॥
(कबि नन्ददास, रासपञ्चध्यायी) [भा० द० ३१ अ०]

वंशीबट

(भा० द० ३३ अध्याय कथा की लीला)

यहां द्वै द्वै गोपी बिच बिच माधव ६ महीना की रात को रास स्थल है। यहाँ रास के समय हजारन गोपी लतान में सों और भी प्रघट भई ही। पीछै जल-क्रीड़ा करी है। यहाँ पै श्री महादेवजी गोपी रूप धर कर आये तब श्रीकृष्ण नें पहिचान लीने और गोपेश्वर नाम धरौ है। यहाँ ते दक्षिण में दरवाजे सों

निकर कै दाहिने हाथ कौ एक बड़ौ फाटक है तहाँ गोकुलनाथजी की पुनः गुसांई जी की पुनः दामोदर हरसानी जी की पुनः महाप्रभू जी की क्रमशः ४ बैठक हैं। यहाँ पुष्टीमार्ग सम्प्रदाय के अन्य मंदर नहीं हैं। आगे गोपेश्वर महादेव कौ दर्शन करें, ताके पास ब्रह्मा मुल्क के नमूना कौ नवीन मंदिर एक महात्मा नें बनवायौ है आगे ब्रह्मचारी जी वारौ मंदिर तामें भीतर वेणु गोपाल, हंस गोपाल, नृत्य गोपाल, राधाविलासकौ दर्शन है। ताके आगे लालाबाबू कलकत्ता वारे कौ मंदिर है। ताकों दाहिनों देकैं ज्ञानगुदरी में जाय तहाँ श्री कृष्णनें गोपिन कों ज्ञान दीनों हो कि तुम अपने अपने पतिन कों छोड़ बन में क्यों आई। भा० द० २९ अ०। यहाँ साधुन के बहुत मंदिर हैं। रथयात्रा के दिन यहाँ बहुत रथ इकट्ठे होय है यहां राधा माधव कौ रीवां वारो मंदिर चौबे कूका जी नटबरजी को सेवा में है। ताके सामने पूर्वमें गलीसों धीरसमीर कैं टिकारीवारी रानी साहिब कौ यमुना किनारे मंदिर है ताके आगें श्री महात्मा मौनीदासजी की तट्टी करकें विख्यात श्री कुञ्ज बिहारी जी कौ दर्शन है। यहाँ अन्य साधुन के सुंदर सुंदर आश्रम हैं। यहाँ सों (सेठ मथुरा वारे लक्ष्मीचंद कौ) रङ्गजी कौ बड़ौ विशाल ७ कोट कौ मंदिर है तामें १२॥ मन सुवर्ण कौ चंदन के लट्ठा पै पत्र चढ़ौ गरुण खम्भ हैं, ताके भीतर तालाब है बीसन कूआ, बगीचा फुहारे असंख्य द्रव्य की लागत जामें १००-२०० आदमी नौकर, खम्भ खम्भ में ८-८ देवता है यह मंदिर बड़ी विचित्र रचना कौ है, यहाँ चैत्र बदी में १५ दिन मेला होय है। बड़ौ विशाल रथ निकसै है सैकड़न रुपया की आतिशबाजी चलै है। कहाँ तक वर्णन करें। याके पास उत्तर में ब्रह्म कुण्ड है। यहाँ ब्रह्मा नें बछरा दीने हैं जोकि बच्छवन में चुराए हे। रंगजी के सामने लाल पत्थर कौ ऊँचौ गोविंद जी कौ प्राचीन मंदिर है,

यहाँ के ठाकुर जयपुर राज्य महल में विराज रहे हैं। यहां प्रतिनिधि मूर्ति है। ताके आगें जयपुर महाराज कौ नवीन बनायौ बड़ी कारीगरी कौ विशाल मंदिर जामें वेणुगोपाल, हंसगोपाल, नृत्यगोपाल तीन दर्शन हैं, आगें मथुरा की ओर दो मील भतरोंड़ ऊँचौ शिखिरदार मंदिर है, यहाँ भतरोंड़ बिहारीजी कौ दर्शन है यहाँ गाय चरावत कृष्ण बल्देव पधारे हे जब भूक लगी तब ग्वालवालन कों मथुरा भेजे यहाँ माथुर ब्राह्मण चतुर्वेद (चौबे)यज्ञ करते हे इनसों भोजन माँगौ,सो इननें नहींदियो तब इनकी स्त्रिननें दीनों हो। यह कथा भा०अ० २३ में विख्यात है। ताके आगें थोरी दूर अक्रूर घाट है। (अ० ३६) जब नंदगाम (गोकुल) सों कृष्ण बल्देव कों अक्रूरजी कंस बध कों लाये तब यहाँ संध्या करी स्नान करो तब जल में प्रभून कौ दर्शन कीनो स्तुति करी, भा० द० ४० अ०॥ या कथा कौं नंदग्राम में लिख चुके हैं। यहां ते पीछे लौंटकैं दावानल कुण्ड जहां दावानल (अग्नि) कौ पान कर गोपन की रक्षा करी। भा० द० १८ अ० सों यहाँ सों अग्नि प्रघट हैकैं मुञ्जबन में गौ ग्वालन कों त्रास दीनों जब कृष्ण ने सब बचाये हे। भा० द०१९ अ० ताके आगें वही कालीदह डेरा कौं जाय। यह दो दिन की यात्रा है।

पहिले दिन रङ्गजी सों स्टेशन हैकैं पटरी सों जहां अरुजन घूमें ता कोंनेसों सूदौ पास ही कालीदह जाय। दूसरे दिन किमार बन दावानलकुण्ड जैंपुरवारेकौ मंदिर आदि देखें फिर राधाबाबरी आचमन कर भतरोंड़ कौ रास देखे। डेरा उठे ता दिन केशीघाट आचमन करै, अथवा बेलवन सों आवे ता दिन करत जाय। यहां केशीदानव घोड़ाके रूप में आयौ ताहि श्रीकृष्णनें मुख में हाथ देकें मारौ, जाकी कथा भा० द० ३७ अ० में है। यहां के स्नान कौ फल

श्लोक—गङ्गायाः शतगुणं पुण्यं यत्र केशी निपातितः। केस्याः शत गुणं पुण्यं यत्र विश्रमितो हरिः। बाराह पुराण म०म० ५ अ० ११ श्लो०गङ्गासों सौगुणो पुण्य यहाँकौ है यहांते सौगुणों पुण्य मथुरा विश्रामघाटकौ है। यहांते आगें यमुनापार दोकोस पूर्व अग्निकोण में दाहिने हाथ रस्ता झुकतो जाय आगे—

मानसरोवर

यह महामान की ठौर है। यहाँ राधिकाजी की बैठक तथा नैत्रन कौ दर्शन पक्के घास के पास है यहाँ श्री राधिकाजी महा-मान कर बैठीं जब श्रीकृष्ण सखिन संग ढूँढ़त डोले हे। यहाँ श्री राधिकाजीं कमलन के बीच अपने हस्तकमल पै मुख धर कैं नेत्र मूँद बैठी हैं मानों कमल पै चन्द्रमा ही बैठौ है यह देख सब श्री कृष्ण सों बोली। पद—तुम पहिले तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल पाछें मनाय लीजो प्यारे गोविन्दा। कर पर धर कपोल रहीरी नयन मूँद कमल विछाय मानों सोयो सुख चन्दा॥ रिष भरी बोंह ता पर भ्रमर बैठे अरबरात इन्दु तर आयो मकरन्द अर बिन्दा। नन्ददास प्रभु ऐसी काहेकूँ रूसें ते बल जाकौ मुख देखे मिटै द्वन्दा॥ पुनः—लालिड़ी न मानेहो लाल आपही पांउ धारो। जैसें हठ तजैं प्यारी सोई यतन बिचारो॥ बातें तौ बनाय कही जेती मति मेरी, एकहू न मानें हो लाल एसी त्रिया तेरी॥२॥ आपनी चौंप के काजैं सखी भेष कीनो। भूषण बसन साजे बीणा कर लीनो॥ उतते आवत देखो चकृत निहारी। कौंन गाम बसत हो रूपकी उजियारी॥४॥ गाम तो है नन्दगाम तहाँ की हो प्यारी नाम है सांमल सखी तेरे हितकारी॥५॥ करसों कर जोरें श्यामा निकट बैठाई। सप्त स्वरन साज मिल स्वल्प बजाई॥६॥ रीझ मोती हार चारु उर लै पहिरावै। ऐसो ही हमारो भटू सांमरो बजावै॥७॥ जोई २ इच्छा होय सोई मांग लीजै। (श्रीकृष्ण) ऐसी

बात सांमरे सों कबहू नहिं कीजै ।।८।। मुखसों मुख जोरें श्याम दरपन दिखावै । निरख छवीली छवि प्रतिबिम्ब कों लजावै ।।९।। छलतो उघरि आयो हस पीठ दीनीं । नंददास बल प्यारी अंकों भरि लीनी ।।१०।। पुनः—काहेकूँ तुम प्यारे सखी भेष कीनों । भूषण बसन साजै वीणा कर लीनों ।।१।। मोतिन माँग गुही तुम कैसे हो प्यारे । हम नहीं पहचानें जानें कौन के दुलारे ।।२।। रूसवे कौ नैंम नित्य प्यारी तुम लीनों । ताही के कारण हम सखी भेष कीनों ।।३।। सब सखी दुरि २ देखत कुञ्जन की गलियां । नंददास प्रभु प्यारे मनाय लीनी रलियां ।।४।। यहाँ मानबिहारी कौ (पूरब की ओर) मंदिर में दर्शन है । राधिकाजीकी बैठक के अग्निकोंणमें श्री महाप्रभूजी की बैठक है । यहाँ आपने सप्ताह पारायण कीनों है । यहाँ भोगझारी कर रास देखें । आगें अग्निकोंण में दाहिने हाथ झुकतो पानी गाम कौं जाय, दाहिनें पानी भरौ होय तौ सामने ऊँचे किनारे ही किनारे है अग्निकोंण में ३ मील पानी गाम है ताके आगें कल्यानपुर. आगें दिमाना गाम सों सहापुर ताकों दाहिनों छोड़कैं गौसना ताकौं बांयौ देकें इनके बीच पग-डंडी सों जाय वृन्दावन ते कुल ९। १०मील अनुमान पूरब अग्नि कोंणमें है ।

लोहबन

छत्रवन और लोहबन भगवान के नेत्रअङ्ग हैं ।

परमेश्वर संहितायां—ओं ल्कीं लोहजंघानबनाधिपतये हृषीकेशाय स्वधा (१९ अक्षर नन्त्र) अस्य मन्त्रस्य सिंधुद्वीप ऋषिः लोह जंघानाधिपो हृषीकेषो देवता गायत्रीश्छन्दः मम सकलारिष्ट निवारणार्थे शरीरारोग्य प्राप्त्यर्थे जपे विनि योगः ।

ध्यानं—ध्यायेल्लोहबनाधीशं हृषीकेशमजं प्रभुं । सर्व्वदारोग्यतांदेहि बन यात्रा प्रदक्षिने ।इति।

लोह जंघंतु नवमं वनं यात्राप्लुतो नरः ।
महाविष्णु प्रसादेन भुक्ति मुक्ति च विन्दति ॥१५॥

वृ० ना० पु० ७९ अ० ।

यहाँ लोहासुर कों श्रीकृष्ण नें मारौ है यहाँ कृष्ण कुण्ड है । अथवा लोहजङ्ग दैत्यकों इन्द्र ने मारौ है ऐसी भी कथा है । यहाँ लोहासुर की गुफा है तथा गोपीनाथ जी कौ दर्शन है यहाँ लौह्यौ, नौंन, तैल, दान, होय है, ताकौ भड्डरी (शनीचरा) लेंय हैं यह बारह बन में सों एक बन है । यहाँ एक दिन यात्रा ठहरै है । यहाँ ते आगे गाम(कों दाहिनों देकैं नैऋत्य में दगरौ रती के नगरा हैकैं आगें काजी कौ नगरा, ताके आगें अलीपुर, ताकौ दाहिनों देकैं खानपुर* कों बाँयों देकैं,अग्निकोंण में आवैं हैं, ताके आगें आनंदी बनंदी देवी कौ दर्शन हैं । यहां आनंद कुण्ड है, वनंदी गाम यह कृष्ण की मौंसी सानंदी कौ गाम है, यह गर्गाचारी कौ खेरौ है ये सानंदी की कुलदेवी है गर्गाचारी नें इनकौ पूजन करायौ है, श्रीकृष्ण नें चैत्र की नवरात्रि में व्रतकर कंस मारिवे कों वर पायौ है,यह कथा देवी भागवतमें (लोहबनसों ८ मील)है आगें दाऊजी अग्निकोंण में दगरौ जाय है, यहाँ सों चार मील नहर के पास सड़क पक्की है । तहाँ पुल सों दक्षिण में सड़क दाहिने हाथकों थोरी दूर ही जाय—

दाऊजी गाम (रीढ़ा खेरो)

यहाँ दाऊजी कौ बड़ौ सुन्दर मन्दिर है, यहाँ गद्दल पूनौ

---

*खानपुर के सामनें पश्चिम में बुढ़िया कौ खेरौ (खेरिया) है ।

कौ बड़ौ मेला होय है, दाऊजी की विशाल मूर्ति आदमी सों भी ऊँची है। तिनके नैऋत्य में रेवतीजी बैठी हैं। यहाँ ११ बजे राजभोग कौ दर्शन होय है आप माखन मिश्री सों जादा प्रसन्न हैं। ३ बजे भाँग कौ भोग हमेशा धराय कै दर्शन होय हैं। यहाँ दाऊजी कौ हण्डा होय है। सो यात्री अपने हाथ सों इच्छानुसार भोग धराय कै जी चाहें ताहि प्रसाद देय। यहाँ चैत्र बदी २ कूँ होरी कौ हुरंगा होय है। रोकड़ी (भेट) चरणन में एक पात्र धरौ रहै है तामें अपने हाथ सों गेर देय। या गामसों पूर्वमें रीढ़ा गाम है। तहाँ बलभद्रकुण्ड है। जहाँ यह मूर्ति प्रघट भई ही। दाऊजी गामके दक्षिण में रेवतीकुण्ड है मन्दिर के उत्तर में पास ही क्षीरसागर हैं। याके ईशानमें एक सुन्दर धर्मशाला है। गुजराती कों यहाँ सुख है। याके भीतर ब्राह्मण हल्ला नहीं करन पावैं हैं। यहाँ ते पश्चिम में हथोड़ा गाम कों (वायव्य सों) दगरौ जाय है। हथोरा गाम बाहर कूआ सों उत्तर में पक्कौ पीपर के नीचे बगीची में नन्दगोप भ्रनन्द गोप की अथांई (बैठक) है। यहाँ सों दगरौ थोरी दूर चल कै दाहिने हाथ कों पक्की सड़क २ पश्चिम में जाय है। आगें चलकै बांये हाथको सड़क दक्षिणएमें मुर जाय है। आगें ब्रह्माण्ड घाट है यहाँ सों चार रस्ता हैं। तहाँ बांये हाथ कों पूर्व १ मील अनुमान चिन्ताहरण महादेव है। यहाँ श्री कृष्ण के मुख में ब्रह्माण्ड देखकै चिन्ता भई तासों यशोदाजी नें शिव की बिनती करी, सो सब चिन्ता दूर भई है। तहाँ जानौ होय तौ दर्शन कर यहीं लौट आवौ। ब्रह्मांडघाट आचमन कर ब्रह्माण्डेश्वर महादेवकौ दर्शन करै। सामनेही राधाबिहारीलाल कौ सुन्दर दर्शन है यहाँ कृष्ण ने माँटी खाई ताकी छवी छोटी सी कोठरी में है ताहि देखें। जाकी कथा भ० द० ७ अ० में है। यहां ते बांये हाथ कों पश्चिम सड़क सों जाय, आगें यमला अर्जुन वृक्षन की ठौर

है यहाँ इन नल कूबरन नें श्राप सों मुक्त हैकैं स्तुति करी ही। भा० द० १० अ०। याके सामने—

नन्दकूप

प्रल्हाद संहितायां—ओं ऐं नन्दकूपबनाधिपतये विकंटेशाय नमः (१९ अक्षर मंत्र) अस्य मंत्रस्य कौशिक ऋषिः नन्द कूपबनाधिप विकंटेशो देवता बृहतीच्छन्दः मम कृष्णे दर्शनार्थे जपे विनियोगः (न्यास पूर्ववत्)

ध्यानं—नन्दकूपबनाधीशं विकंटेशं मनोहरं ध्यायेद्गोपाल शोभाढ्यं सखिभिः परिवेष्टितं। इति।

नन्दकूप ऊँचे पै, रस्ता के दाहिने, जहाँ नन्दजी दातुन करते हे।

महावन गाम

बहुलावन तथा महावन भगवान की बाहु है।

त्रैलोक्य सम्मोहनतन्त्रे—ॐ क्लीं महाबनाधिपतये हलायुधाय नमः (१६ अक्षर मंत्र) अस्य मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः हलायुध देवता पंक्तीश्छंदः मम पूर्व दर्शन फल प्राप्तये जपे विनियोगः।

ध्यानं—ध्यायेद्धलायुधं देवं महावने शुभ प्रदम् नमस्तेऽस्तु प्रलम्बहन बन यात्रा समर्थितः। इति।

याहि बृहद्बन गोकुल भी लिख्यौ है भा० द० ११ अ० १९। २१ श्लो०।

यह बारहमोंबन है। यहाँ श्रीनंदरायजी कौ महल चौरासी खंबा जामें श्रीदाऊजी कौ सुन्दर दर्शन है, यहीं दाऊजी कौ जन्म भयौ है भा० द० ३ अ०। यहाँ छटी पूजन की ठौर है दधि मंथन की जगह है, ऊखललीला ९ अ० यह नंदमहल किलौ नंदजी के समय बड़ी दूर तक हो जाकौ एक कौनों यह चौरासी खम्मा; एक कौनों ठकुरानीघाट श्रीमद्गोकुल तक हो, बीचमें टूटवेकौ निशान अभी तक दीखै है। सकट भंजन ७ अ० आगें गाम के बीच शिखिरदार प्राचीन मंदिर है तामें (भवूरो) त्रणावर्त बिहारी कौ (भा० द० ११ अ०)दर्शन है। आगें नैऋत्य दिशा में (६ अध्याय) पूतनाखार छैकोस के बीच कौ यहाँ ते खैचरी तक पहिले हो। अब परिवर्तन होत जाय है। पुनः जमुना किनारेही नैऋत्यमें गोप कूआ रमणरेती जहां कृष्ण बल्देव दोनों भाई सुबह होत ही छोटे छोटे बालक बछरान कों सङ्ग लेकै जमुनाजी की रेती में खेलते हे बछरा त्रण चरकैं जल पीकैं सुख सों बैठते हे। आप उनपै हाथ फेर मुख सों मुख मिलाय प्यार करते हे। आदि बाललीला में गिल्लीडंडा, कबड्डी, गैंदबच्ची, आँखमिचौनी, चीलझपट्टा आदि बहुत खेल करते हे। अस्तु अब यहां सों दोमील गोकुल है। ताकौ रस्ता, महाबन गाम कों दाहिनें देकैं पश्चिममें दगरे सों जाय। दगरे के दाहिने एक छोटौ कुण्ड है। ताके आगें दाहिने हाथ कौं खेतन में मुकाम दो दिन रहै है। ताके पूरब में ऊँचे पै एक सुन्दर बगीचा है। वहाँ मोठौ कूआ है। तथा एक कुण्ड है। एक दिन यहाँ के दर्शनकर दूसरे दिन यहाँ सों करनावल (आगें लिखेंगे विशेष) देख लौट आवै। पीछैं रावल होत मथुरा जाय। यह मुकाम दाऊजी सों ९ मील।

गोकुल

बृहद् गौतमीये—ओल्कीं गौकुलाधिवनाधिपाय गोकुलचँद्रमासे

स्वाहा (२० अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य शाण्डिल्य ऋषि र्गोकुलाधिबनाधिपो गोकुल चंद्रमा देवता गायत्री छंदः मम बालकृष्ण दर्शनार्थे जपे विनि योगः (न्यास पूर्ववत्)।

ध्यानं—पंचाब्दरूपिणं कृष्णं गोकुलेश्वरमीश्वरं। ध्याये-दुत्तरकोटीभिः यात्रा सांग समर्थिता। इति।

यहाँ श्री नंदरायजू की गऊन के रहने कौ स्थान है। यहाँ ठकुरानी घाट है सो यशोदाजी के स्नान करवे की ठौर है। ठकुरानी श्री यशोदाजी कों हीं कहै हैं, (ये यदुबंसी जादों ठाकुर अबहू इनकौ वंश ब्रज में मौजूद है) यहां महाप्रभू जी की बैठक है (सन्ध्या स्मरण करवे की जगह) ताही सों याहि बल्लभघाट भी कहैं हैं तथा यहां जसोदा जी श्री ठाकुरजी (गोविंद) कों स्नान कराती हीं ताते याहि गोविंदघाटभी कहैहैं जब ये घाट पक्के बनाये हैं तब तीन भाग कर दीने हे। याते तीन घाट हैं। वास्तव में यह एकही घाट है। याते उत्तर में पास ही गुसांईजीकी (संध्या करवे की) बैठक है। ताके दक्षिण में ऊपर गली में महाप्रभूजी की बैठक के पीछे दाहिने हाथ कों छोंकराके पेड़ के नीचे दामोदरदास हरसाणी की बैठक है। ताके आगें बांये हाथ कों महाप्रभू जी की दूसरी बैठक है जहां आपने भागवतजीके बहुत पाठ करे हैं वहां गोकुलनाथजी की बैठक है तथा विट्ठलनाथजी छीत स्वामी यहां मिले हैं। ताके सामने द्वारिकानाथ की हवेली है। ताके पीछें नंद जीकौ किलो जोकि महाबनसों यहां तक हो यहां श्रीगोकुलनाथजी नें बीसन चमत्कार दिखाय हिंदू धर्म की यबनन सों रक्षा कर पुष्टीमार्ग कों पुष्ट कीनों है। यहाँ २४ हवेली हैं' राजा ठाकुर की यहाँ जिमीदारी है, श्री गोकुलनाथ बाबा की सेवा गोकुलेश जीकी निधि या मन्दिर में है। तथा गोकुलनाथ की बैठक है। तथा

मोरवारी आदिमें दर्शन हैं। (सात गादी) यहाँ ते मथुरेसजी कोटा जाय विराजे अब जतीपुरा में बिराजें हैं ॥१॥ श्री विट्ठलनाथ जी नाथ द्वारा ॥२॥ श्रीद्वारिकाधीसजी काँकरौली ॥३॥ जिनके शिष्य उदयपुर नरेश हैं गोकुलनाथ बाबा यहीं विराजैं हैं ॥४॥ गोकुल-चन्द्रमाजी कामबन ॥५॥ जिनके भरतपुर नरेश शिष्य हैं। बाल-कृष्ण जी सूरतमें विराजै है यहाँ इनकौ मन्दिर नहीं है ॥६॥ मदन मोहनजी कामबनमेंहै॥७॥अब यहांसों नन्दकिलेके नैऋत्यमें कोइलो घाट पक्कौ दीखै है तहाँ बासुदेव जी श्रीकृष्ण कों डलीया में धरकैं मथुरा सों लाये हे ता समय शेषजी छायाकर रहे हे बिजली चमक रही ही, कारी घटा छाय रही ही। वा समय आप जमुनाजी में उतरे हे तब श्री यमुनाजी चरण स्पर्श कों बढ़ी ही। श्री बसुदेवजी के कंठ परियंत पानी आयो जब घबराय कै बोले हैं अरे या बालक कों कोई लेउ (ताते कोइलो घाट है) तब श्री कृष्ण नें अपनों चरण लटकाय दोनों ताकों स्पर्श कर श्रीयमुनाजी उतर गईं, बसुदेवजी नंदभवन में कृष्ण कों सुबाय योगमाया कों मथुरा लाये हे, यह कथा भा० द० ३ अ० ४६ श्लो० सों आगे है। यात्री गोकुल सों नावमें बैठ कोलेउ घाट जांय वहाँसों पगडंडी(झावड़) अग्निकोंणमें गिरती अनुमान ३ मील—

करनावल

यहाँ श्रीदाऊजी के कर्ण छिदे हैं (विशेष वार्ता कनबारें में लिख चुके हैं) यहाँ कर्णबेध कूप रतनचौक है। तथा मदन मोहन जी, माधवराय जो कौ मंदिर है तथा मथुरेशजी कौ प्राघट स्थान है जोकि जतीपुरा में बिराजत है। यहाँ हैकैं पीछौ गोकुल आवै।

नोट—यहाँ कौ रस्ता चिंताहरण ब्रह्माण्ड घाट सों सूदौ

परै है, नौंका नहीं हैवे सों नहीं जाय सकै है । यमुना जी? पांझ होय तो ब्रह्माण्ड घाट सों जायकै यहीं लौट पीछै महाबन जाय ।

गोकुल सों उत्तर मेंयमुनाजी के किनारे ही किनारे दो मील—

रावल गाम

यहाँ श्रीराधिकाजीकौ ननिहारमें जन्म भयो है यह शिखिरदार मंदिर में राधाजी कौ दर्शन है । ताके आगें राधाघाट है, यहाँ ते आगें गोपालपुर गाम गोरधन गोप कौ खेरो, जाकों गोपालपुर नाम है गयौ है । यहाँ सों ढाई मील दुर्वाषा ऋषी कौ आश्रम यहाँ तक वृहद्बन है यहाँ ज्ञान बाबरी मंदिर के वायव्य पश्चिम में ही सो मट्टी में अटि गई है । यहाँ गोपी नाना प्रकार की सामिग्री भोग धरायकैं जमुनाजी पै पहुँची और कही कि दुर्वाषा दूर्वाहारी होय तो जमुनाजी मार्ग देय । ऐसे ही बापार ते आती समय कही कि कृष्ण बाल ब्रह्मचारी होंय तौ जमुनाजी मार्ग देय, दोनों समय यमुनाजी नें मार्ग दीनों ताहि देख गोपीजन बड़े आश्चर्य कों प्राप्त भईं यह श्रीकृष्ण के गुरू हैं । या मंदिरके उत्तर १ मील कृष्णकुण्ड बन के पार कच्ची तलैया है । यहाँ ते मथुरा विश्राम घाट आचमन कर गौर कहै जहाँ मुकाम करै । बाद पंचकोसी परिक्रमा कर नियम छोड़े । जीव हिंसा निवारण के लिये प्रत्यक्ष गौदान करै । श्रीराधा कृष्ण के हेत भूमिदान (मकान) वस्त्र (पहिरने, ओढ़ने बिछाने के) आभूषण, पात्र, अन्न, मिष्टान्न, घृत, दूध, दही, मेवा, फल, साग, पान, आसन, माला, पञ्चपात्र, घटा, लोटा, डोरी, छत्री, जूता, करदीपिका आदि सम्पूर्ण वस्त्र सहित शैयादान करै पीछै यमुनाजी श्रीनाथजी कौ शृङ्गार धराय कै यथाशक्ती सीधे

सामिग्री दान करै। पीछैं अपने तीर्थ गुरू (चौबेजी) सौं सुफल करावै जब ही ब्राह्मण भोजन करावै। यहाँ एक ब्राह्मण भोजन कौ कोटिगुणों पुण्य है। बा० म० म० १४ अ० ६२ श्लो०। माथुराणाम् हियद्रूपं तन्मेरूपं वसुन्धरे। एक स्मिंभोजिते विप्रे कोटिर्भवति भोजिता॥

श्री मथुरा मण्डल ब्रज चौरासी कोस (द्वितीय) परिक्रमा
सम्पूर्णम् शुभम भूयात्।

अथ पञ्चकोसी

तृतीय मथुरा प्रदक्षिणा

बौधायन संहितायां—ओं ह्रां ल्की मथुराधिपतये परब्रह्मणे नमः (१६ अक्षर मन्त्र) अस्य मन्त्रस्य धौम्यऋषि मथुराधिबनाधिपः परब्रह्म देवता गायत्रीच्छन्दः मम परमपदप्राप्त्यर्थे जपे विनि योगः

ध्यानं—मथुराधिबनाधीशं परब्रह्म सनातनं ध्यायेत्प्रदक्षिणा सांग नव क्रोश प्रमाणतः। इति।

विश्रान्तसंज्ञकं यत्र तीर्थरत्नं नरेश्वरि तत्रस्नातो नरोभक्त्या वैष्णवं लभते देविस्नातो विश्रान्तसंज्ञके। गङ्गाया शतगुणं पुण्यं यत्रकेशी निपातितः केश्याः शतगुणं पुण्यं यत्र विश्रमितो हरिः॥११॥ वा० पु० अ०५गङ्गा सों सौगुनों पुन्य केशीघाट तासों सौगुणों पुण्य या विश्राम घाट कौ है। यही सों परिक्रमा सुरू होय

है। कार्तिक शुक्ला जुगाद (अक्षय) नवमी प्रदक्षिणा बाराहजीनें देवता ऋषीश्वरन सों कही, तब ऋषीश्वर-देवतानने मथुरा की प्रदक्षिणा करी, बाराह पुराण मथुरा महात्म ८ अ०। सर्व देवेसु यत्पुण्यम् सर्वातीर्थेसु यत्फलम्॥ सर्व दानेसु यत्प्रोक्तमिष्टा पूर्वषु चेव ही ॥१९॥ फलं तदधिकं प्राक्तं मथुरायाः परिक्रमे । प्रहृष्य ऋषयोर्जग्मुरभिवाद्य स्वयंभुवम् ॥२०॥ इत्यादि बहुत से प्रमाण हैं। जितने आकाश में तारागण हैं, उतने ही समस्त पृथ्वी पै तीर्थ हैं, उन सबकौ जो फल है वही मथुरा जुगादि(अक्षय)नवमी प्रदक्षिणा कौ है अष्टमीकौ विश्रामघाटपै रात्रि जागरणकर पित्रीश्वरनकौंतर्पण करै,सूर्योदयसों पहिले परिक्रमा प्रारम्भ करै, सूर्योदयपै आय जाय। ये सब कथा विशेष रूप सों बा० पु० म० म० ८ अध्याय में ९ अ० श्लो० १।१५ तक लिखी है। यहाँ वृ० ना० ७९ अ० में चौबीसों घाट क्रमशः लिखे हैं। पुनः बा० पु० १ अ०३६ श्लो० विश्रामघाट स्नान दान करिकें प्रथम विमुक्त तीर्थ। (नौका वारौ घाट) आगें कंसखार, सती कौ बुर्ज (गुह्यतीर्थ) है बा० पु० १ अ० ३९ श्लो० ताके सामने गली में बांये हाथ कौ चर्चिका देवी कौ दर्शन बा० पु० म० म० ९ अ० ३२ श्लोक। ताके आगें पिप्लेश्वर महादेव पिपलादि ऋषीन करकें पूज्य बा० पु० ८ ७० श्लोक। आगें सोरों पास के तथा काशी (दोनौंन) के दो राज घाट। राजराजेश्वर महादेव कौ दर्शन। ताके पास बटुक भैरव (योग माया घाट) ५१ श्लोक ना० पु० ताके पास संगहार (संहार) जाकौ शृङ्गारघाट कहैं हैं। यहाँ प्रयागराज कौ संग हारो है। (उनकौ संहार भयौ), मारे गये हैं। ताके पास ही प्राग घाट। ना० पु० १ अ० ४० श्लो० बैनीमाधो कौ दर्शन। ताके आगें श्यामघाट श्यामजी कौ दर्शन (यह मूर्ति छीत स्वामी जी की है) श्यामेश्वर महादेव कौ दर्शन। आगें राम घाट रामेश्वर महादेव ना० पु० ९ अ० २४ श्लो०। ताके

सामने गली भीतर रामजीद्वारौ, रामजी कौ दर्शन जहाँ कि तुलसी-दास कों रामस्वरूप दिखायो है। दोहा—कहा कहौं छबि आजकी भले बने हो नाथ। तुलसी मस्तक जब नवै धनुष बाण लेउ हाथ ॥१॥ कित मुरली, कित चन्द्रिका, कित गोपिन को साथ। अपने जनके कारणैं कृष्ण भये रघुनाथ ॥२॥ पुनः यहाँ अष्टभुजी गोपाल जी कौ सुन्दर दर्शन है। यहांसों पीछै लौटकै (पुष्टीमार्ग) दाऊजी कौ मन्दिर (संसार मोक्षण तीर्थ) ना० पु० ८ अ० २५ श्लोक। दाऊजी कौ घाट कहत हैं वाके पास कनखल क्षेत्र है जहाँ हरिद्वार गङ्गा कौ फल प्राप्त होय है यहाँ श्री मदनमोहनलालजी (पुष्टी-मार्ग) कौ दर्शन है। याके आगें श्री गोकुलनाथ जी (पुष्टीमार्ग) कौ दर्शन ताके आगें तिन्दुक तीर्थ (बङ्गालीघाट) यहाँ कुण्ड हो सो दब गयो है। ताके आगें पुल के पार तिलोई रानी साहब की धर्मशाला, (जगन्नाथस्वामी) कृष्ण बल्देव के दर्शन हैं। ताके आगें (अर्कस्थल) सूर्यघाट जहाँ द्वादश सूर्यननें तपस्या करी ही। यहाँ सूर्यनारायण कौ दर्शन है। वा० पु० ६ अ० ८ श्लो० तथा पहलो अ० ५३ श्लोक। ताके पास साम्ब बट (पटु स्वामी तीर्थ) जब साम्ब कों कृष्ण के श्राप सों कुष्ट भयो सो यहाँ स्नान के करेते मिटौ है। (बा० पु० म० म० २६ अ० कथा है) ताके आगें साम्बनाथ महादेव, ताके आगें ध्रुवघाट (टीले पर) ध्रुवजी कौ दर्शन ॥३०॥ यहाँ गुसांईजी ने किशनदास भूत के पिंड कर उद्धार करो हो। ताके दक्षिण में नाग टीलो जहाँ जन्मेजय राजा नें नागकुल होमे हैं। ताके आगें सप्तऋषि विश्वामित्र, भारद्वाज, जमदग्नि, अत्री, अङ्गिरा, गौतम, वशिष्ठ, अरुधन्ती। यहाँ ऋषीश्वरन नें तप कियो है। ऋषि लोक सों प्रदक्षिणा करवे कों ब्रह्मा के उपदेश ते आये हैं यहाँ मोक्ष तीर्थ है। याही कों ऋषि तीर्थ भी कहत हैं यहाँ कौ स्नान सर्व पापन कौ नाश करै है। ताके आगें सेठ लक्ष्मीचन्दजी

कौ जमुनाबाग बड़ौ ही सुन्दर है। ताके पास बोधिनीतीर्थ महादेव घाट है। तहाँ पिण्डदान को महात्म है। यहाँ महाकाली देवी कौ दर्शन यहाँ महंकालेश्वर महादेव, यहाँ होरीकौ मेला एक दिन होय है यह सदर बजार मथुरा में है। जाकों रजमन बजार कहैं हैं। ताके आगें गिल्हर चौबे को बाग लेखक के प्रपितामह (परदादे) को अभी तक विख्यात है वाके पास रावण कोठी (कोटि तार्थ) यहां के दान कौ कोटि गुण विशेष फल है। यहाँ के स्नान करवेतें विष्णुलोक प्राप्त होत है। (बृ० ना० पु० ८ अ० ३४ श्लो.) यहीं रावण नें तप (शङ्कर मंत्र जप) करो हो। [नोट—पहिले यहीं हैकें प्रदक्षिणा जात ही जबसों यूरोपियन बस्ती भई स्त्रीनकी बेइज्जतीके भय सों ये रस्ता छोड़ दीनो] पहिले कहे सप्तऋषीन के आगें हैकै जाय बैरोचन के पुत्र राजा बल कौ टीलौ, यहाँ वली नें सूर्य कौ तप कर सूर्य सों चिंतातनी प्राप्त करी है। बा. पु. १ अ. ५४ श्लो० यहाँ बामन रूपसों ३॥ पैंर पृथ्वी दान माँगी ही (इन दोनों टीले सप्तऋषि तथा बामन बलि के में यज्ञ की भस्मी अभी तक निकसै है) याके पास मथुरा हाई स्कूल है। सामनें होली दरबाजा, दाहिने बङ्गालीघाट, बांये सदर कों सड़क जाय है। ये सब छोड़, बांये दगरे के रस्ता में दाहिने हाथ कों ऊँचौ धनुषटीलौ है जोकि चुङ्गी कचहरी सामने (दक्षिण) है। आगे अम्बाखार है रेलवे पुल पार कुब्जा मालिन कौ दर्शन है। यानें चन्दन लगा। भगवान प्रसन्न करे हैं। यहां सुदामा माली नें हार पहराये हे (पुष्पस्थल) बा. पु. म. म. अ. ६ श्लोक १५—श्रीमद् भा. द. ४१। ४२ अ. रङ्गभूमि रङ्गेश्वर महादेब ॥४१॥ भा. द. ४३ अ. कंस बध टीलो उग्रसेन राज्याभिषेक भा० द० ४४—४५ अ०। ताके आगें गोपाल बाग जहां कार्तिक शुक्ला गोप अष्टमी कों कृष्ण बलदेव गौ चरायवे गये हे, सो लीला अबहू दिखावें हैं। बड़ौ मेला होय है यहां सों

आगें चतुर्वेद पाठशाला—धर्मवीर बैजनाथ जी की बनाई। ताके आगें डैम्पियर नगर में प्राचीन खन्डित मूर्तिन कौ म्यूजियम (अजायबघर) लाल पत्थर कौ सुन्दर बनों है। याकौ कोने पै आगें ही सप्त सामुद्रिक कूप यहाँ पिंडदान कौ महात्म है बा० पु० ६ अ० ९-१० श्लोक ताकैं आगे दाऊजी कौ दर्शन है। आगे सड़क सों उतर कर महाराज श्री बासुदेवजी के बगीचा में सिद्धेश्वर महादेव (वा० पु० म० म० ९ अ० २४ श्लोक०) कौ प्राचीन दर्शन है। ताके आगें शिवस्थल कुन्ड (सोंतार) वा० पु० म० म० ९ अ० २४ श्लोक यहाँ शिवजी नें तप करो है जाते क्षेत्रपाल पदवी मिली है (सो दर्शन आगें लिखेंगे) ताके आगें श्रीकृष्ण गौशाला है कै कंकाली देवी कौ दर्शन करें। ताके आगें बलभद्रकुन्ड यहाँ कृष्ण बलदेव नें ग्वालन के सङ्ग में जल क्रीड़ा करी है। बा० पु० म० म० ६ अ० ३६ श्लोक से ३८ तक। यहाँ दाऊजी कौ प्राचीन दर्शन है। याके पास बगीचीन में दाहिने उद्धव गोपी, सामने कृष्ण-बलदेव गनपती, बांये बद्रीनाथ जी कौ दर्शन है आगें सड़क फांद कै उत्तर भूतेश्वर महादेव, पातालदेवी बा० पु० म० म० १८ अ० २० श्लोक यही मथुरा के क्षेत्रपाल कृष्णके बरदान सों भये हैं १७ अ० याके दर्शन बिना, परिक्रमा कौ फल नष्ट होय है वृ० ना० पु० ७९ अ० ५१ श्लोक में भी प्रमाण है। आगें धर्मराज की ज्ञानबावरी (बापिका) जाके स्नान सों ग्रहपीड़ा दूर हैकें ज्ञानी होय है। वा० पु० म० म० १८ अ० ४१ श्लोक ताके पास पूरब में पोतराकुन्ड है। यहाँ वस्त्र धोये हे। याके पास उत्तर में जन्मभूमि यही बसुदेव देवकीजी कों कैद कीनो है भा० द० १ अ० यहाँ कंस के मल्ह रहते हे यासों याहि मल्हपुरा कहैं हैं। ताके आगें केशवदेवजी कौ दर्शन (असली मूर्ति रजधानी में केशवदेवजी, बुधौली में हरदेवजी अभी तक है)

यहाँ औरङ्गजेब के अत्याचार कौ नमूना लाल पत्थर की मसजिद सामने पूरब में है जाके पलकारीन में पनघट कौ कूआ है सो चतुः सामुद्रिक कूप है। विश्रामघाट स्नान कर यहाँ पिण्ड करवे सों प्रेत मोक्ष होय है। जाकी कथा बा० पु० म० म० १४ अ० २७ श्लोक में है। या मसजिद कटरा कौ मालिक पटनीमल काबिज दखल है मुसलमानों कों सिवाय निबाज पढ़वे के और कोई हक नहीं हैं ऐसे फरमान भी मौजूद हैं। यहां एक गङ्गाजी कौ भी मन्दिर है (यहाँ सों उत्तर में ऊँची जगह पै गलतेश्वर महादेव ताके पूरबमें कुब्जा कूप है) ताके आगे ऊँचे पै शिखरदार महाविद्या देवी कौ मन्दिर है जाकी बाजू में सिद्धेश्वरी देवी हैं इनकों कृष्ण बलदेव नें पूजन करौ है जब कंस मारब को संकेत करो हो। ताकी कथा बा. पु. म. म. ९ अ. ४६ श्लोक महाविद्या चर्चिका ये दो दुर्गा माथुर कुल (चौबे) की कुलदेवी हैं। इन से इन्होंने बर प्राप्त भी करे है। ताके नीचे महाविद्याबन में कुण्ड है। याके चारों ओर सघन बन हो सो नष्ट है गयो। यहाँ नन्दादिक गोप ब्रजबासी यात्रा करबे आये हे। जब सर्प नन्दजी कों पांय पकरकें निगल रहो तब सब ब्रजवासी नें वाहि जरी लकड़ियांन ते मारो, वाने पांय नहीं छोड़ो जब श्री कृष्ण नें अंगुष्ट दिखाय कै सर्प की मुक्ती करी भा. द. ३४ अ. सो अम्बिका बन यही है। गोपतीर्थ मुक्तेश्वर महादेव सरस्वती नारो जहां गुप्त सरस्वती अब भी बहै है। सरस्वती गनेश के दर्शन कुण्ड के पास हैं। यहां परिक्रमा के दिन मेला इकट्ठो होय है। या सड़क सों परिचम में गरुण गोविन्द वृन्दावनकी परिक्रमा कर (देव सयनी, देव उठान के दिन)२२-२३ मील के अनुमान मथुरा आवै है। सड़क सों ईशान में चामुण्डा (चर्ममुण्डा) देवी कौ दर्शन है। जाने रूरू दैत्य कौ चर्म मुण्ड प्रथक २ करौ आगें बृन्दावन जायवे की सड़क सों (उच्चिष्ट) गनेश

टीलौ गनेश तीर्थ ग्यारहमोंघाट,यहाँ गोपनके संगमें कृष्ण बलराम नें द्यूत क्रीड़ा करी है। बा० पु० म० म० ९अ० ५५ श्लोक, ताके उत्तर में अनन्ताक्ष तीर्थ बारहमों घाट है। दक्षिण गार्गी सार्गी रुद्र हिमालय घाट हैं वा० पु० म० म० ९ अ० ५३ श्लोक, यहाँ गौकर्ण महादेव कौ दर्शन है ९अ० ५० श्लोक। वर्तमान परिक्रमा चामुण्डा सों यहीं आवै है। यहाँ पक्कौ दशाश्वमेध घाट है। वृ० ना० ७९ अ० ४४-४५ श्लोक ताके आगें अम्बरीष टीलौ जिन पै दुर्वाषा ने कोप कियो हो जब सुदर्शन चक्र के भय सों भगे डोले, सो चक्रतीर्थ नौमों घाट बा० पु० म० म० ११ अ० में विशेष कथा है यहाँ चक्र शान्ति भयो है। यहां भद्रेश्वर महादेव ११ अ० ६६ श्लोक—ब्रह्महत्या दूर करन बारो दर्शन है। ताके आगें सरस्वती संगम बैकुण्ठघाट वा० पु० म० म० ९ अ० ५१ श्लोक। ताके आगें श्री कृष्ण गङ्गा वा० पु० म० म० २४। २५ अ०। यहाँ १८ भुजा की दुर्गा १० भुजा कौ हनूमान एक बुर्ज की छत्री हैं। आगें कालिंजेश्वर महादेव, सोमतीर्थ सातमों घाट है वृ० ना० पु० ७९ अ०४१ श्लोक। आगें गौघाट आगें घंटा भरण छटो घाट ४० श्लोक। आगें नागतीर्थ। बा० पु० म० म० ३ अ० १० श्लोक पुनः वृ० ना० पु० ७९ श्लोक आगें ऊँचौ चढ़कें कंस किलौ जहाँ कंसेश्वर महादेव (कंस की पूज्य मूर्ति) हाल में यहाँ माड़वारी सेठकी धर्मशाला बनगई है नीचें उतर कें धारा पतन घाट वृ० ना० ७९ अ० ३८ श्लोक। वा० पु० ३ अ० से ९ तक। आगें संयमन घाट (स्वामी घाट) तीसरा है। वृ० ना० २९ अ० ३७ श्लोक आगें नवतीर्थ ३९श्लोक यह सूरत वारी धर्मशाला के नीचे है। आगें शूकर क्षेत्र (वाराह घाट जहाँ पृथ्वी सों बाराह कौ सम्बाद भयौ है। बा० पु० म० म० १ अ० २३ श्लोक। यहाँ ही बाराहजी नें यज्ञ करे हैं ताकी कुशा यहाँ फैली ही तासों याहि

कुशस्थल भी कहैं हैं। बा० पु० ६ अ० १५ श्लोक। यहाँ ते श्वेत बाराह कपिल बाराह के दर्शन कर (द्वारिकाधीश के दर्शन कर पीछें यहाँ आवै। आगें नाव वारे के पास जनानौ घाट असकुण्डा तीर्थ बा० पु० १५ अ० कुल, १२ अ० १३ श्लोक—यहाँ प्रयाग नें हार मान तीर्थ-स्तुति करी।

विश्रान्ते उत्तरे भागे तीर्थं मस्त्यसिकुण्डकम्।
यत्र स्नातो नरो देवी वैष्णवं लभते पदम्॥
वृ० ना० ७९ अ० ३५ श्लोक।

यहाँ साक्षी हनूमान कौ दर्शन है। वा० पु० अ० ११ श्लोक आगे गनेशजी कौ दर्शन ९ अ० १३ श्लोक आगें काशी मनिकर्णिका कुण्ड (घाट) बा० म० म० ९ अ० ६३ श्लोक यहाँ के स्नान कौ फल काशी के समान हैं। आगें विंश्रामघाट महाप्रभूजी की बैठक पै प्रदक्षिणा पूर्ण करै।

॥ इति श्री मथुरा पंचकोसी परिक्रमा सम्पूर्णम्॥

अथ पंचतीर्थी

चतुर्थ मथुरा प्रदक्षिणा

यह परिक्रमा पाँच दिन की है। निम्नलिखित स्थान पर महात्म कथा सुनाई जाय है। यामें देशी परदेशी सब ही अच्छी जन संख्या में जांय हैं। याको सूक्ष्म क्रम या प्रकार है—

प्रथम दिन

श्रावण शुक्ला ५ कों विश्रामघाट सों १२ घाट दक्षिण कोटि के स्नान आचमन कर मधुवन कथा सुनें पीछैं अपने घर आवे।

द्वितीय दिन

विश्रामघाट सों चर्चिका देवी कौ दर्शन कर वीरभद्रेश्वर तहाँ सों कंस निकन्दन (होरी गली) देवीनन्दन (होरी दरवाजा) आगै वत्सकूप (सेठ के बाड़े में) आगें रङ्गेश्वर महादेव, शिवताल (शिव स्थल) सों बलभद्र कुण्ड दाऊजी कौ दर्शन कर भूतेश्वर दर्शन करै आगें सान्तन कुण्ड जाय लौटती समय धर्मराज की ज्ञान बाबरी सों पोतराकुण्ड कथा सुन जन्मभूमि केशवदेवजी कौ दर्शन करै आगे चतुः समुद्रिक कूप (कटरा केशवदेव मसजिद के पूरव पलकारी में) आगें बाजार में मथुरानाथ महादेव ताके मथुरानाथ ठाकुर (गली गुलइयान में दर्शन कर घर आवै।

तृतीय दिन

विश्रामघाट सों १२ घाट उत्तर कोटि में स्नान आचमन (गार्गी सार्गी तक) करै। पीछै लौटती समय गौकर्णनाथ महादेव पै कथा सुनकै घर आवै।

चतुर्थ दिन

विश्रामघाट सों नवीन गतश्रम टीले माया देवी कौ दर्शन प्राचीन गतश्रम, बाराहजी (मानिक चौक) पद्मनाभ (महोली की पौर) मथुरादेवी दीर्घ विष्णु. केशवदेव, गलतेश्वर महादेव, कुब्जा कूप, महाविद्या, सरस्वती कुण्ड आगे कोटा (छिरोरा) गाम है कैं गरुण गोविन्द पै कथा सुन कर पीछै घर आवै।

पंचम दिन

विश्रामघाट सों गौघाट गागर वारी लक्ष्मी जी कौ दर्शन

गणेश जी (गणेश टीलो) अक्रूर घाट हनुमान जी कृष्ण बल्देव कौ दर्शन आगें भतरोंड़ सों राधा बाबरो (दगरे सों चारखेत अनुमान बांये हाथ कों आगें बृन्दावन में किनारबन, दाबानल, आगें कालीदह, बिहारी जी आदि के दर्शन कर सब घाटन की प्रदक्षिणा करत बंशीबट पै कथा सुनें आगें ब्रह्मकुण्ड हैकैं सड़क २ रस्ता सों घर आवे।

नोट—पहिले या कथा कौ पूजन आज पाँचवे दिन ही होय है। अब एक दिन विश्राम देकैं एकादशी कों मथुरा पंचकोशी परिक्रमा करकें गो कर्ण के बगीचा में कृष्णा गङ्गा महात्म्य (यह कृष्णा गङ्गा ही पै बचनी चाहिये) कथा सुनें। ताहि सुन कैं पण्डित कौं वस्त्र दक्षिणा भेट देंय। पीछें विश्रामघाट आयकैं अपने प्रोहित (पण्डा) सों सुफल लेय, और सैया, दानादि दक्षिणा दैकैं आशीर्वाद लेय, श्रद्धानुसार ब्राह्मण भोजन करावै।

श्री मथुरा जी के पुष्टिमार्गीय प्रमुख मन्दिर

१—सतघरा (सातों स्वरूपन कौ घर) श्रीनाथ की बैठक (सेवा श्री परषोत्तमलाल महाराज अमरेली वारे। २—श्रीद्वारिकाधीश असकुण्डा बाजार (श्री काकरोलीस्थ पीठाधीश्वर ब्रजभूषण लाल जी महाराज की सेवा में। ३—श्रीदाऊजी, (बड़े) मदनमोहन जी बङ्गालीघाट सेवा श्रीगोपाललालजी महाराज मथुरावारे। ४-श्री छोटे मदनमोहनलालजी बंगालीघाट श्री ब्रजपाललालजी महाराज मथुरा वारे। ५—श्रीगोकुलनाथजी बङ्गालीघाट श्रीद्वारकेशलालजी महाराज पोरबन्दर वारे। ६—श्रीनाथ जी सतीघाट श्रीगिरधरलाल जी महाराज इन्दौर वारे। ७—श्रीनाथ जी (मानिक चौक) श्री टीकेश महाराज नाथद्वारा। ८—श्री बिहारी जी (स्वामीघाट श्रीनाथजी भण्डार नाथ द्वारा) ९-श्रीबालकृष्णजी, गली रावलिया मंडी रामदास (२५२ वैष्णव वार्तान्तरगत राजपूज ग्रासीया वाले स्वरूप भोलाराम भंडारी जी के माथे गो० श्री रमनलाल जी नें पधराये तथा घरेलू पुष्टि मार्गीय सेवा के कुछ और भी मंदिर हैं

अन्य दर्शनीय मन्दिर

बिश्रामघाट के उत्तर में स्वामीघाट बाजार में (नल के पास) मदनमोहनजी, घाट पर राधेश्यामजी तथा बाजार में दूसरे मदनमोहनजी, चूरी बारी ठेक पै गोविन्देबजी, डोरी बाजार में गोपीनाथजो, घीयामंडी में सीतारामजी, चौक बाजार में दाऊजी आगें मथुरानाथ जी, गली रावलिया में भंडारी लालिड़ीलालजी की सेवा में बालकृष्णजी के दर्शन तथा गली गुसांईयान में प्राचीन मथुरानाथजी आगें मथुरानाथ महादेव, उससे आगें जन्मभूमि केशवदेवजी के दर्शन। फिर गुड़हाई में कावलीसिंह की हवेली में श्रीनाथजी के दर्शन, आगें किशोरीरमणजी महाराज (यहाँ सावन में झूला आदि उत्सव सुंदर होते हैं। वृंदाबन दरवाजे बाटी बारी कुञ्ज में एक प्राण द्वै देह राधाकृष्ण के अद्वितीय दर्शन हैं।

विश्रामघाट से दक्षिण में, होली दरवाजे की तरफ के मंदिर —गतश्रम नारायण में कुब्जाकृष्ण, आगें दाऊजी, मथुरानाथ, किशोरीरमन, बिजयगोविंद (सावन में झूले यहाँ भी दर्शनीय हैं) गोरधननाथ, कन्हैयालाल, लक्ष्मीनारायण, मगनी माता, अन्नपूर्णा, होली गली में कंस निकंदन, देवकीनंदन, दाऊजी, होली दरवाजे बाहर कंसवध टीला है।

लेखक के दो शब्द—प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त ही संक्षेप भाव से लिखी गई है। इसका विस्तृत स्वरूप मेरीही सम्मति से आचार्य कैलासचन्द "कृष्ण" कवि लिख रहे हैं। जो कालान्तर में लगभग १००० पृष्ठोंमें प्रकाशित होगी। लेखनी का प्रवाह निरंतर अग्रसरहै

मथुरा की नवीन धर्मशाला, केशव भवन (सतघड़ा, मथुरा)

आधुनिक साज सज्जाओं से परिपूर्ण दातार सेठ श्री चन्दूलाल पेटलाद वालों द्वारा लगभग १॥ लाख रुपये की लागत से बनाई गई। जिसमें गुजराती एवं उच्चवर्गीय यात्रियों के ठहरने का पूरा प्रबन्ध एवं सुविधा है।

श्रीनाथशरणस्तोत्रम्

सर्वेषां तव पापानां, नाशकोऽयं पुरस्थितः ।
विश्वनाथो जगन्नाथः, श्रीनाथः शरणं व्रज ॥१॥
पतितोद्धारणे दक्षः, शरणागत पालकः ।
दीनबन्धु र्दयासिन्धुः, श्रीनाथः शरणं व्रज ॥२॥
द्रौपदीवस्त्रभूतो यः, पार्थदूतो महामतिः ।
सुखदः सर्वलोकानां श्रीनाथः शरणं व्रज ॥३॥
तस्मिन् रक्षापरे जाते, को हनिष्यति तं वद ।
सर्वरक्षण कर्तृत्वात्, श्रीनाथः शरणं व्रज ॥४॥
सर्वेषां रक्षको योऽसौ, स ते रक्षां विधास्यति ।
अतएव त्यजन् सर्वान् श्रीनाथ शरणं व्रज ॥५॥
का माता कः पिता पुत्रः, पुत्री का कश्च वान्धवः ।
पतिःपत्नी स एवास्ति, श्रीनाथः शरणं व्रज ॥६॥
सद्विद्यावित्तयो र्दाता, पुत्रस्य सत्पतेस्तथा ।
सर्वसङ्कल्प सिद्धचर्थं, श्रीनाथ शरणं व्रज ॥७॥
ब्रह्मा विष्णुः शिवः सोयं, गौरी लक्ष्मी सरस्वती ।
रामः कृष्णो रमानाथः श्रीनाथः शरणं व्रज ॥८॥
श्रीनाथ शरणं स्तोत्रं, रमानाथेन भाषितम् ।
यः पठेत्प्रत्यहं भक्त्या, श्रीनाथः संप्रसीदति ॥

॥ यमुनाध्यानम् ॥

नाना रत्नमणि प्रभेद निकरैर्माणिक्य मुक्ता फलै ।
रामुक्तोन्नत कन्धराम् हरियुताम् नीलालकाऽलंकृताम् ॥
वृन्दारण्य निकुञ्ज वास मुदिताम् राजीव मालान्विताम् ।
ध्यायन्तीम् हरिपाद युग्म मनिशम् श्री कृष्णकान्ताम् भजे ॥
क इति ब्रह्मणोनाम ईशोऽहं सर्व देहिनाम् ।
आवाम् तवाङ्ग सम्भूतौ तस्मात् केशव नामवान् ॥

यात्रा के उपयोगी सामान।

★

पाँचों मेवा
रोली
सुपारी
अबीर गुलाल
लकड़ी की चौकी
चटाई
बाल्टी
पानी कौ कनस्तर (गगरा)
कनात
कन्तान के जूता
लालटेन
लोहे के चूल्हे
१ खुरपा १ फावरी
४ मेख-डोरी जगै रोकवे कों
तम्बू, कनात
कुछ जरूरी दवायें संजीवनी
आदि

दान की वस्तु।

२ थरिया कटोरा भोजनथार
कों
१२ कटोरा बारह बन व
मेवा सहित।
१ लोटा दोहनी कुन्ड कों
५धोती,४गङ्गाजी१चीरघाट
१ दुशाला पाँवरी कुन्ड व
मोती, मोतीकुन्ड कों
सोना देहकुन्ड कों
लोहें कौ पात्र,
७ गोदान अथवा
दक्षिणा
१ अश्वदान केशीघाट
१ हाथी ऐरावत कुन्ड कों
४ सूर्य सोने के
२ चन्द्रमा चांदी के

हमारे यहाँ का "अमृत सागर" बीसों रोगों की एक ही दवा